|| श्री कुंज बिहारी श्री हरिदास ||

|| श्रीस्वामी हरिदासो विजयतेराम् ||

रसिक कलम कुल दिवाकर नित्य विहार प्रकासक

श्री स्वामी हरिदास जू महाराज की जय

" ऐसौ रसिक भयौ नहीं है है भूमंडल आकास " रसिक वर श्री हरिराम व्यास

समाज श्रृंखला

सकलनकर्ता : रसिक संत पूज्य श्री श्याम दास जी महाराज

श्री रँगीली कुंज आश्रम , वृन्दावन

(संचालित : श्री रँगीली राधा धर्मार्थ ट्रस्ट (रजि))

संपर्क : गोधुली पुरम वृन्दावन 281121 उप, 90981-59159, 99176-00352

दिनांक : 19 अगस्त 2025

Join now

CLICK

WhatsApp Community
श्री रँगीली कुंज आश्रम

Shri Haridasi Rahasya

Shri Rangili Kunj
Aashram-Seva Karya

Telegram

उत्सव वार समाज गायन पद तालिका

दिनांक : 19 अगस्त 2025

क्रम	उत्सव & पद नाम	पेज संख्या
1	**गुरु मंगल**	1
2	**श्री स्वामी हरिदास जू महाराज प्राकट्य उत्सव**	1
3	प्रथम दिवस : वृन्दावन कौ री चोज	5
4	दूसरा दिवस : निकुंज बिराजिये जू	7
5	तीसरा दिवस : चलो जू कौतुक देखन जांही	9
6	चौथा दिवस : मोहन मोहनी सुलेहरा गाऊ	10
7	पाँचवा दिवस : (ए) प्यारी सहज मन हरि लेत	12
8	छटवा दिवस : चलि सखि देखन जाहिं	14
9	सातवा दिवस : श्री वृन्दावन सहज सुहावनो - **बना**	16
10	आठवा दिवस : **बाधाई के पद**	109
11	**श्री स्वामी विट्ठल विपुल देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव** **(श्री बाँके बिहारी जू महाराज कौं प्राकट्य उत्सव)**	18
12	प्रथम दिवस : रसभीने बिहारी मन हरयौ	18
13	दूसरा दिवस : हो हो रँगीली नगरी रँगरत्ता	19
14	तीसरा दिवस : स्यामा नागरी हो प्रबीन	20
15	चौथा दिवस : मोहन मोहनी सुलेहरा गाऊ	10
16	पाँचवा दिवस : **बाधाई के पद**	120
17	**श्री बाँके बिहारी जू कौं बधाई**	123
18	**श्री स्वामी बिहारिन देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव**	
19	प्रथम दिवस : निकुंज बिराजिये जू	7
20	दूसरा दिवस : चलो जू कौतुक देखन जांही	9
21	तीसरा दिवस : साँवरी सहेली	22
22	चौथा दिवस : **झुमका**	26
23	पाँचवा दिवस : **बाधाई के पद**	125
24	**झूलन / हिंडोरे उत्सव के पद**	30-39
25	**श्री स्वामी सरस देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव** **(शरद पूर्णिमा उत्सव)**	

उत्सव वार समाज गायन पद तालिका

दिनांक : 19 अगस्त 2025

क्रम	उत्सव & पद नाम	पेज संख्या
26	प्रथम दिवस : रसभीने बिहारी मन हरयौं	18
27	दूसरा दिवस : हो हो रँगीली नगरी रँगरत्ता	19
28	तीसरा दिवस : स्यामा नागरी हो प्रबीन	20
29	चौथा दिवस : विविध पद	40
30	पाँचवा दिवस : **बाधाई के पद**	127
31	**श्री स्वामी नरहरी देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव**	
32	प्रथम दिवस : निकुंज बिराजिये जू	7
33	दूसरा दिवस : रसभीने बिहारी मन हरयौं	18
34	तीसरा दिवस : स्यामा नागरी हो प्रबीन	20
35	चौथा दिवस : मोहन मोहनी सुलेहरा गाऊ	10
36	पाँचवा दिवस : मुनहारि करैं मुनहार	45
37	छटवा दिवस : **बाधाई के पद**	129
38	**श्री स्वामी रसिक देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव**	
39	प्रथम दिवस : श्रीकुंजबिहारी हरषि बुलाई	47
40	दूसरा दिवस : तू ना करि मान मनोहर	48
41	तीसरा दिवस : जय श्री वृन्दावन बिराजैं	49
42	चौथा दिवस : हो हो रँगीली नगरी रँगरत्ता	19
43	पाँचवा दिवस : जै श्री वृन्दावन आनंद न अंत	52
44	छटवा दिवस : **बाधाई के पद**	131
45	**बसंत उत्सव के पद**	51-56
46	**श्री स्वामी ललित किशोरी देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव**	
47	प्रथम दिवस : श्रीकुंजबिहारी हरषि बुलाई	47
48	दूसरा दिवस : तू ना करि मान मनोहर	48
49	तीसरा दिवस : जय श्री वृन्दावन बिराजैं	49
50	चौथा दिवस : मुनहारि करैं मुनहार	45
51	पाँचवा दिवस : **बाधाई के पद**	134
52	**श्री स्वामी ललित मोहिनी देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव**	
53	प्रथम दिवस : निकुंज बिराजिये जू	7

उत्सव वार समाज गायन पद तालिका

दिनांक : 19 अगस्त 2025

क्रम	उत्सव & पद नाम	पेज संख्या
54	दूसरा दिवस : चलो जू कौतुक देखन जांही	9
55	तीसरा दिवस : (ए) प्यारी सहज मन हरि लेत	12
56	चौथा दिवस : मोहन मोहनी सुलेहरा गाऊ	10
57	**जागरण के पद**	58-79
58	पाँचवा दिवस : **झुमका**	26
59	बाधाई के पद	136
60	**होली महोत्सव के पद**	
61	प्रथम दिवस : होरी रसरंगा री खेलत	80
62	दूसरा दिवस : हमारो माई लाल बिहारी मन हरयौ	82
63	तीसरा दिवस : श्रीगुरु कृपा जथा मति बरनौं	84
64	चौथा दिवस : श्री वृन्दावन सहज सुहावनो - **बना**	16
65	पाँचवा दिवस : सब सखी झूमक दैहीं	87
66	छटवा दिवस : रूप अनुपम मोहिनी मोहै	89
67	सातवा दिवस : चलि सखि देखन जाहिं	14
68	आठवा दिवस :श्रीस्यमाप्यारी कुंजबिहारी राजत	91
69	**अक्षय तृतीया चंदन बंदन महोत्सव**	99-103
70	**गुरु पूर्णिमा महोत्सव**	104-108
71	**श्री स्वामी पीताम्बर देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव**	138
72	प्रथम दिवस : वृन्दावन कौ री चोज	5
73	दूसरा दिवस : चलो जू कौतुक देखन जांही	9
74	तीसरा दिवस : (ए) प्यारी सहज मन हरि लेत	12
75	चौथा दिवस : चलि सखि देखन जाहिं	14
76	पाँचवा दिवस : श्री वृन्दावन सहज सुहावनो - **बना**	16
77	श्री स्वामी पीताम्बर देव जू महा. कौं बधाई	138
78	**मंगल बधाई के पद**	109-139
79	श्री स्वामी गोवर्धन देव जू महा. कौं प्राकट्य उत्सव	140
80	**विशिष्ट पद**	140-172

❁ श्रीमन्नित्यनिकुञ्जविहारिणे नमः ❁
❁ श्रीस्वामी हरिदासो विजयतेतराम् ❁

समाज-शृङ्खला

रसिक अनन्यनृपति श्रीस्वामीजू महाराज कौ
प्राकट्य-महोत्सव

भाद्र शु. ४

मंगलाचरण

प्रथम लड़ाऊँ श्रीगुरु, बंदन करि श्रीहरिदास।
विपुल प्रेम निजु नेम गहि, कहि सुजस बिहारिनिदास ॥1॥
गुरु सेवत गोविंद मिल्यौ, गुरु गोविंदै आहि।
बिहारिदास (श्री) हरिदास कौ, जीवत है मुख चाहि ॥2॥

श्रीस्वामीकृष्णदासजी कृत मंगल — राग-सुहौ विलावल, ताल-रूपक

प्रथम जथामति श्रीगुरु चरन लड़ाइहौं।
उदित मुदित अनुराग प्रेम गुन गाइहौं॥
गौरस्याम सुखरासि तिन्हैं दुलराइहौं।
देहु सुमति बलि जाउँ आनंद बढ़ाइहौं॥
आनंद सिंधु बढ़ाइ छिन छिन प्रेम प्रसादहिं पाइहौं।
जय श्रीवरविहारिनिदासि कृपा में हरषि मंगल गाइहौं ॥1॥

जय जय श्रीहरिदास रसिक कुल मंडना।
अनन्य नृपति श्री स्वामी सकल भय खंडना॥
रसिक कमल कुल भानु सु प्रगट उदय कियो।
भ्रम तम श्रम सब नासि सबनि कौं सुख दियो॥
दै सबनि सुख अति कृपा करि प्रगट बिहार सुनाइयो।
जय जय श्रीहरिदास रसिक मन भाइयो ॥2॥
जानि विहार गुप्त अति भूतल प्रगट कियो।
कीरति जग विस्तार सुरस रसिकनि दियो॥
निरनय करि जस गाय सु परहित वपु धर्यौ।
धनि धनि कहैं सब रसिक अनन्य सु वर वर्यौ॥
वर वर्यौ धनि धन्य कहि कहि छिन छिन प्रति दुलरावहीं।
जय जय श्रीहरिदास वांछित फल पावहीं ॥3॥
काम केलि माधुर्य सहज रति सर्वदा।
प्रेम सुभाव सरल मति सुधा गुन निर्मदा॥
विस्व सकल सुख देखि छिया करि छाँड़ियो।
दम्पति पति अभिराम अपनो पन माँड़ियो॥
माँड़िपन अभिराम छिन छिन दम्पति सहज लड़ावहीं।
देखि यह सुख रंग दोऊ मंद मधुर सुर गावहीं॥4॥
जय जय श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों।
नित्यविहार अधार सदा मन भावनों॥
परम सुभग श्रीजमुना पुलिन मंजुल जहाँ।
विमल कमल कुल हंस सकल कूजित तहाँ॥
विमल कमल कुल हंस कूजित सेवत खग मृग सुख भरे।
मुदित बन नव मोर निर्तत राजत अति रुचि सों खरे ॥5॥

कुसुमति कुञ्ज रसाल लता अति सोइहीं।
अलिकुल कोकिल कीर कूजित मन मोदहीं॥
त्रिविध समीर बहत रस सुखद मनहिं लियें।
बसंत सरद सेवत चित वित मनहिं दियें॥
बसंत सरद सेवत सदा रितु सुख समुद्रहिं को गनै।
विविध भाँतनि भूमि राजत सोभा देखत ही बनै॥6॥
मंदिर नवल निकुञ्ज मदन सेवत रहै।
मनि मुक्ता फल फलित सोभा गुन को कहै॥
श्रीकुञ्जबिहारीबिहारिनि अतिसय राजहीं।
नित्यकिसोर सहज रति सुख मै भ्राजहीं॥
नित्यकिसोर सहज सदा रति गौर स्याम तन सोइहीं।
कञ्चन तन घन दामिनि रतिपति देखत छबि मन मोहहीं॥7॥
अँग संग श्रीहरिदास विहार करावहीं।
मननि लियें अनुसार सहज दिन भावहीं॥
सुख सम्पति रहैं साज समयो पाय सु गावहीं।
तान तरंग मधुर सुर राग सुनावहीं॥
तान तरंग सुनाइ मधुर सुर कुँवरि कुँवर सुख पावहीं।
रीझि रीझि स्यावासि कहि हँसि हार बसन पहिरावहीं॥8॥
प्रगट बिहारिनिदासि कृपा को वपु धर्‍यो।
श्रीकृष्णदासि बड़भाग सेवत नित अनुसर्‍यो॥
सील सुभाव गुन अर्पि प्रिया प्रेमहिं लहें।
चित बित दै रुख लै मन सेवत नित रहें॥
रहें सेवत रुख लिये नित संक न काहू की करी।
जय श्रीवरविहारिनिदासि चरन रति सूर ज्यौं व्रत ना टरी॥9॥

और बहुत अपनाय ते मनवच क्रम करि अनुसरे।
मोसे पतित महा सठ तेऊ अपने करे॥
जैसें पास परसि तें कंचन जानिये।
ऐंसे किये श्रीनागरीदासि निश्चय उर आनिये॥
उर आनि निश्चै जानि यह सुख चरन कमल सेऊँ सदा।
जय श्रीवरविहारिनिदासि प्रगट नित सिंधु सुधा रस सर्वदा॥10॥
मन वच क्रम करि यह जस जो नर गाइहैं।
मनवांछित फल बेगि सदा सुख पाइहैं॥
निजु धन सर्वसु जानि उमँगि दुलराइहैं।
प्रेम लच्छिना भक्ति विपुल रस पाइहैं॥
रस पाय विपुल आनंद बाढ्यौ जन्म जन्म के श्रम गये।
जय श्रीवरविहारिनिदासि कृपा तें मन मनोरथ सब भये॥11॥

छोटा गुरु मंगल — मूल ताल

श्रीगुरु मंगल गाय माना।
श्रीहरिदास चरन बंदन करि विपुल विनोद बढ़ाय घना॥
श्रीविहारीविहारिनिदासि परम रुचि सरस मनोरथ पाय धना।
श्रीनरहरि रसिक सिरोमनि मूरति पीतांबर बलि जाय जना॥1॥

आजु महा मंगल भयो माई।
भई प्रसन्न सिरोमनि राधे यह सुख कह्यौ न जाई॥
परम प्रीति सों विलसत दोऊ प्रेम बढ्यो अधिकाई।
श्रीहरिदासी (जू) रसिक सिरोमनि उमँगि-उमँगि आनंद झरि लाई॥2॥

आजु समाज सहज मन भायो।
कुँवरि किसोरी गोरी भोरी निरखि हरषि हँसि कंठ लगायो॥

अपने अपने मेल मिलीं सब तान तरंगनि रंग बढ़ायो।
श्रीहरिदासी (जू) रसिक सिरोमनि तन मन बचननि हियो सिरायो ॥3॥

★ प्रथम दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद– राग – मल्हार, चौताल

ऐसी रितु सर्वदा जो रहै बोलत मोरनि।
नीके बादर नीके धनुष चहुँदिसि नीकौ श्रीबृन्दावन आछी नीकी मेघन की घोरनि॥ आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी नीकी बूढ़नि की रेंगनि काम किरोरनि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कें मिलि गावत राग मलार जम्यौ किसोर किसोरनि॥1॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद– राग – सुहौ विलावल, ताल – रूपक

श्रीवृन्दावन कौ री चोज मनोज बढ़त रहै।
कुञ्जनि कुञ्जनि केलि नवेलि नवल कहैं॥
कहैं नवल नवेलि केलि सुनि सखी सुख पावहीं।
मंद मंद मधुर मिलै सुर सरस गीतहिं गावहीं॥1॥
प्रथम प्रिया आराधि साधि सब पाइये।
प्रीतम अति अवलंब सु रसिक रिझाइये॥
रिसाइ अति अवलंब प्रीतम फूल तन मन में बढ़ै।
नेम गहि निर्बाहि यह रस प्रेम प्यारी कौ पढ़ै॥2॥
रहसि बहसि बदी होड़ परस्पर मन हरैं।
रसही रस उपजाइ उमँगि अँग अँग ढरैं॥
ढरैं रंग उमँगि रंगीले जिहीं अंग परनि परैं।
निपुन नागर नवल दोऊ हरषि हँसि अंकौं भरैं॥3॥
बहुरि कुँवरि करि रोड़ कोड़ के चाड़िले।
हारी होड़ न देत लेत लटि लाड़िले॥

लटि लेति परस न देति अपनों अंग अति नव नागरी।
कोक कुसल किसोर बरबस किये कुँवरि अचागरी ॥4॥
अति आसक्त दुहूँ दिसि रिसहिं नसावहीं।
अति आनंद सुधाधर पीवत पिवावहीं॥
पिवाय अधर सुधा महा मधु मत्त मिलि कौतिक कियौ।
किये कौ सुख अल्प सखि सुनि कह्यौ भरि उमँग्यौ हियौ ॥5॥
दंपति संपति सहित सबै सुख पूजहीं।
नखसिख कौतिक रासि विलसि कल कूजहीं॥
कूजि कलकंठी कृसोदरि स्याम श्रवन सुहावनी।
वारि पिय सुकुमारि पर मनु देत रीझि रिझावनी ॥6॥
रीझ रहे सिरमौर और उबटी सबै।
तरुनि तरंग अनंग रंग लपटी जबै॥
लपटि स्याम तमाल बाला बेलि कोमल लौ लई।
हासि कुसुम उदित उरोजनि नेह नाजुक नित नई॥7॥
निजु रस रीति प्रतीति विपिन बसि तौ लहै।
रसिक अनन्य नृपति कौ संग समझि गहै॥
गहै संग अनन्य नृपति कौ रंग लाग्यौ जब हिये।
भये साधन सिद्ध तिनके तिहीं छिन अनहीं किये॥8॥
नित्य बिहार अधार श्रीहरिदासी दियौ।
विपुल विनोदनि देखि सु जनम सुफल कियौ॥
कियौ जनम सुफल सु अपनों और प्रानी से जुनैं।
संग मिलि श्रद्धा बढ़ै सुख दुर्लभ ब्रजजुवती जनैं॥9॥
स्यामा कौ आधार राजरस तौ कह्यौ।
सब रस कौ रस सार बिहार बिसद गह्यौ॥

गह्यौ बिसद बिहार अपनों जानि निजु कीनी मया।
(जै) श्रीवर बिहारिनिदासि सुखनिधि दुलहिनी की दिन गया ॥10॥

श्रीस्वामी ललितमोहनीदेवजू कौ पद राग-श्यामकल्याण, ताल-अद्धा तिताला

बिहारी तेरे नैंना रूप भरे।
निरखि निरखि प्यारी राधे कौं अनत न कहूँ टरे ॥
सुख कौ सार समूह किसोरी उमँगि उमँगि अंकौं भरे।
श्री ललितमोहनी की निजु जीवन उर सौं उरज अरे ॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद- एक ताला

मेरी अँखियाँ रूप के रंग रँगी।
निरखि सरूप कुँवरि राधे कौ याही माँझ पगी ॥
छिन छिन प्रति अवलोकि माधुरी ना सोई न जगी।
श्रीहरिदासीजू ललित केलि हित याही में जगमगी ॥

★ द्वितीय दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग- गौड़ मल्हार, ताल-धमार

नाचत मोरनि संग स्यात मुदित स्यामहिं रिझावत।
तैसीये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर तैसोई मेघ गरजि मृदंग बजावत ॥
तैसीये स्याम घटा निसि सी कारी तैसीये दामिनि कौंधि दीप दिखावत।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी रीझि राधे हँसि कण्ठ लगावत ॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद- राग-आसावरी, ताल-रूपक

निकुञ्ज बिराजिये जू।
नव जोवन जुगराज बिहारी विहरत नव रति साजिये जू ॥
मदन सदन मैदान विपिन रन रूपे हैं रसिक मन धीर।
वे उनके वे उनके छलबल तौलत गुननि गम्भीर ॥1॥
उबटि बदन उमहे मन रञ्जन सज्जन सहज सुभाय।
अञ्जन अनी नैंन सर सूधे भृकुटिन चाप चढ़ाय ॥2॥

बिबि उरोज गज कुंभनि पर अञ्चल चल ढाल ढुराय।
चँवर चिकुर चमकत मनसिज के फौजन सिलह सजाय ॥3 ॥
कंचुकि कवच-कसत कटि गाढ़े पीयरे बसन बनाइ।
बीरी बसीठ चुनौती दै सखि कीजिये जुद्ध अघाइ ॥4 ॥
घोष रोष हनि बचन निसानैं चढ़ि तुरंग चित् चाइ।
छोटी खुरी कटाछनि खूँदत उपजत अगनित भाइ ॥5 ॥
बोलत भृंग बखानत बिरदनि सुनत सरस सहनाइ।
उमड़ि परत समुहाय सुभट नट नख छत छबि रहि छाइ ॥6 ॥
खंड खंड भये गंड रदन छद दै भुजदंड सहाइ।
लूटत महा माधुरी घूँटत घूमत अँग अँग घाइ ॥7 ॥
पीक कपोलनि पर सोंनित सद सोहत सुरति सुमार।
जीति रहे संग्राम सूर दोउ सम बल बैस उदार ॥8 ॥
तजत न खेत हेत हठि गाढ़े अप अपने चित छोह।
खेम कुसल सल फबी रौतई पाये निपट निलोह ॥9 ॥
जै श्रीविपुल बिहारिनिदासि खवासी करत रही अंग संग।
रसिक अनन्य सिरोमनि श्रीहरिदासीजू के प्रेम अभंग ॥10 ॥
गावत गीत मीत मिलि बैठे सब रिस रोस नसाइ।
सुरति सभै के अंत उदित भये मुदित भये दुलराइ ॥11 ॥
कहत सुनत सेवत जे यह सुख ते धनि कौतिक हार।
श्रीवृन्दावन दिन बजत बधाई बलि बलि विसद बिहार ॥12 ॥

★ तृतीय दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग-मारू मिश्रित, ताल-धमार

प्यारी तेरी बाँफिन बान सुमार लागै भौहें ज्यौं धनुष।
एकही बार यौं छूटत जैसें बादर बरषत इन्द्र अनष॥

और हथियार कौ गनै चाहनि कनष।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी सों प्यारी जब तू बोलत चनष चनष ॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - राग-मारू, ताल-धमार

चलौ जू कौतुक देखन जांहि।
सूचत सखी सुख प्रेम परस्पर नव जुवतिन मिलि मांहि ॥ 1 ॥
गावति प्रेम भरी मन भावति फूली अंगनि मांहि।
नव वन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव दल सीतल छांहि ॥ 2 ॥
बिबिध रंग चित्रित बीथिन चलि बिमल जमुन जल न्हांहि।
कोमल कूल मूल बंसीवट निकट अटक कछु नांहि ॥ 3 ॥
सुन्दर पुलिन नलिन नान रंग अलि अवली अरुझांहि।
उड़त पराग राग रंजित रस मत्त मुदित गुंजांहि ॥ 4 ॥
त्रिविध पवन मृदु गवन परम रुचि परसत श्रम नसि जांहि।
अति रति रुचि राजति संपति सुख दंपति हिये हितांहि ॥ 5 ॥
तहाँ बिहरत द्वै मीत मनोहर वन बसि अनत न जांहि।
मृदु कुन्दन मनिमय अवनी पर रवनी रवन रमांहि ॥ 6 ॥
आज समाज सहज सुख बरषत हरषत मिलि मन मांहि।
कोमल काम प्रेम मधुरे रस रहसि बहँसि किलकांहि ॥ 7 ॥
मानौं मल्ल जुगल जीतन हित नित छल बलहिं तुलांहि।
राती गाती छाती कसि कटि पीत बसन फहरांहि ॥ 8 ॥
अंगराग मर्दत भुज दंडनि मुख मंडित मुसिकांहि।
बिनु बैननि सैननि सुख नैननि चितै चितै इतरांहि ॥ 9 ॥
हाव भाव भृकुटिन मटकत नट अटकि लटकि लपटांहि।
अपनी अपनी गौं गहि घातनि बातनि बिहँसि रिसांहि ॥ 10 ॥

कबहुँ-कबहुँ जुरि-जुरि अँग-अँग मुरि परसत हूँन पत्यांहि।
अति लावन्य निपुन लाघवता पुनि सनेह नियरांहि॥11॥
सकल कला कोबिद विद्यानिधि काहू धीरज नांहि।
हाथापाई करत नवल बल अति व्याकुल अकुलांहि॥12॥
छाँड़त गहत गहावत भावत अति रसमिस मिलि जांहि।
गूढ़भाइ गाढ़े आलिंगन चुम्बन सखी सिहांहि॥13॥
अति सुगन्ध समरंध भये मिलि अलि नलिनी बलि जांहि।
सहज सुरति रस मत्त परस्पर अंक निसंक समांहि॥14॥
मूलताल – सुखद खुमारी कुञ्जबिहारी पुनि ऐंड़ाहिं जभांहि।
ये पुजावत वे निजवत इसि रस अचै अचै न अघांहि॥15॥
श्रीबिहारिनिदासि लड़ावत त्यों-त्यों अलकलड़े लड़कांहि।
उमा रमा को सची सरस्वती व्रजजुवती ललचांहि॥16॥
तिनको दरस देव दुर्लभ जे अराधा राधांहि।
भुव बसि वृन्दाबन नहिं सेवत ते प्रानी पछतांहि॥17॥

चतुर्थ दिवस

राग-धनाश्री, ताल-चौता

श्रीस्वामीजू कौ पद-

बेनी गूँथ कहा कोउ जानै मेरी सी तेरी सों राधे।
बिच-बिच फूल सेत पित राते को करि सकै एरी सों राधे॥
बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर ककहीं सों साधे।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम नखसिख लौं बनाई दै काजर नखही सों आधे।

राग-गौरी, ताल-धु

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

मोहन मोहिनी सुलेहरा गाऊँ।
लाड़िलीलाल गलेहरा लड़ाऊँ॥1॥
(श्री) वृन्दावन घन सहज सोभा मन लोभा उपजावै।
जिनकों कृपा करैं श्रीस्यामा तिनहिं सुन्यौ जस भावै॥2॥

बिपिन विलासिनि प्रेम प्रकासिनि जो निज प्रेमहिं पाऊँ।
ज्यौंहि-ज्यौंहि कुञ्जविहार करौ मिलि ज्यौंहिं-त्यौंही तुमहिं लड़ाऊँ ॥3॥
सुनहु सहेली प्रेम-गहेली कौतिक एक दिखाऊँ।
अञ्चल जोरि चितै तृन तोरौं तन मन मोद बढ़ाऊँ ॥4॥
रायबेलि सतवर्ग सेवती बिच बिच चम्पे की कलियाँ।
रचि रचि चौसर हार गुदें गुहि परिरावनि चलि अलियाँ ॥5॥
कुसुमित कुञ्ज गुञ्ज अलि-माला चन्दन चर्चित गलियाँ।
सुखद समीर बहत सौरभ जल कमल विराजत थलियाँ ॥6॥
सारस हंस चकोर मोर पिक चात्रिक भाषा भलियाँ।
गावत रस जस पिय प्यारी कौ सखि सुनि पग प्रेम न टलियाँ ॥7॥
कबहुँक बाल सलज्ज सु पिय तन कबहुँ हँसत मुख्स मोरी।
कबहुँक निपुन सुरति सुख सागर नागरि नवल किसोरी ॥8॥
छिन छिन प्रति दम्पति नव नव रति अँग अँग अभिरामा।
प्रथम समागम स्याम दिनहिं दिन दूलह दुलहिन स्यामा ॥9॥*

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद- राग विहाग, ताल धमार

* दूलहु दुलहिन अधिक बनी।
पूजन चलीं कलपतरु सुन्दरि औरहिं ठान ठनी ॥
कियो है सखिन गठ जोरि सबन मिलि आगे धन पाछे जु धनी।
गावत चलीं गीत मंगल के सबहिं सुघर सजनी ॥
रुनुक झुनुक पग धरति धरनि पर छवि पावत अवनी।
छिरकि सुगन्ध भूलतरु पूज्यौ फूलनमाल धनी ॥
अञ्चल जोरि यहै बर माँगत रहौ यह प्रेम सनी।
(श्री) रसिकबिहारिनि होहु न मान छकि केलि-कला कवनी ॥

अंसन अंस जोरि भुज बल्लभ भामिनि जामिनि जागे।
बिलमत हँसत हँसावत रसबस अति आनंद अनुरागे ॥10॥
नौतन तरल तमाल लाल मिलि लता ललित फल फलियाँ।
देत असीष बिहारिनिदासी करहु नवल नित रलियाँ ॥11॥

★ पंचम दिवस ★

राग–मल्हार, ताल चौताल

श्रीस्वामीजू कौ पद–

नदित मन सृदंगी रामभूमि सुकांति अभिनैं सुनवगति त्रिभंगी।
धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गाइतेग्रि नाभि तान तुंगी॥
रसद बिहारी बन्दे बल्लभा राधिका निसिदिन रंग रंगी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी संगीत संगी॥

ताल–रूपक

श्रीनागरीदेवजू कौ पद–

(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेत तू मन मोहनी मोहन हेत।
तुम अति प्रेम प्रवीन हो प्यारी सुघर सिरोमनि जान।
मन क्रम बचन बिलासिनी मेरे तुम बिन गति नहिं आन ॥1॥
तू मन तू मन में बसी प्यारी तू मम जीवनि प्रान।
तू सर्वसु धन मानिनी दै मोहिं मान रति दान ॥2॥
भामिनि तुव भुव छेप हो (प्यारी) मोपै सह्यौ न जाय।
अञ्जल पल अलकावलि के अन्तर गन अकुलाय ॥3॥

राग–दरबारी कान्हरो, ताल धमार

श्रीगुरुदेवजू कौ पद–

चिरजियौ लाल रसाल प्यारीजू तेरौ लाड़िली कौ लाल।
चितवन चित बितहिं चुरावत मधुरे बैंन श्रवन सिरावत नैननि ही पुनि देख्यो भावत खिलौना सौ तेरे मन कौ ख्याल॥ तेरे हित निज दरस परस हुलसि-हुलसि हियो सरसत तू तन-मन प्रानप्यारी तोसों प्रेम परनि ढाल। श्रीबिहारीबिहारिनिदास मिले सुख मुख देखत होत निहाल॥

मो मन ऐसी होत है प्यारी तो तन में मिलि जाउँ।★
तुव मुख चन्द चकोर लौं नैना पान करत न अघाउँ॥4॥
श्रवन सुजस रसना रसौं तुव करत रहौं गुन गान।
जाचत ज्यौं जल मीन लौं तुव दरस परस आघ्रान॥5॥
तुव लावनि बुन निधि आगरी (प्यारी) अब जिन करहु निदान।
पूरन प्रेम प्रकासिनी दै मोहिं अधर मधु-पान॥6॥
तब ललित बचन सुनि स्याम के प्यारी नैननि में मुसिक्याइ।
व्याकुल बिरह बिलोकि कैं प्यारी लिये हैं लाल उर लाइ॥7॥
मैं मान कियो तुम सों कबै प्यारे कलपि कलपि कित लेत।□
मेरे प्रीतम प्रान हो पिय जीवन तुमहिं समेत॥8॥

श्रीस्वामीजी कौ पद - राग-कान्हरो, ताल रूपक

★ ऐसी जीय होत जो जिय सौं जिय मिलै तन सौं तन समाइ लेहुँ तौ देखौं कहा हो (हो) प्यारी। तोही सौं हिलगि आँखि आँखिन सौं मिली रहैं जीवन कौ यहै (है) लहा हो (हो) प्यारी। मोकौं इतौ साज कहाँ री प्यारी हौं अति दीन तुव बस भुव-छेप जाइ न सहा हो (हो) प्यार। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत राखि लैरी बाहुँबल हौं बपुरा काम दहा हो (हो) प्यारी॥

श्रीगुँरुदेवजू कौ पद- राम कान्हरौ, ताल - धमार

□एजू जानत हौ मेरे मन की मैं कब मान कियौ।
तुम मेरी जीवनि जीय कौ ज्यों जानत हौ कित कानत हौ पिय संभ्रम वचन बियौ॥ क्यों अलबोले ह्वै रहे गहे से मन कहत बचन समुझाइ सुनत हँसि आयौ हुलसि हियौ। श्रीबिहारिनिदास प्रीतम प्यारी प्रति बोलत खोलत कर कंचुकी कुच छल मुख अमृत पियौ॥

(तब) लटकि लगी उर स्याम के (प्यारी) हुलसति हँसति उदार।
कोक निपुन नव नागरी बरबस किये सुकुमार॥9॥
भये मदन मत्त रस माधुरी सुख बरषत सुख न अघाइ।
निरषि हरषि रस फूलहिं श्रीललितादिक सुख पाइ॥10॥
सुरति रंग में रँगि रह्यो (हौ) कुञ्ज-सदन सुखरास।
(श्री)विपुलबिहारिनिदासि पर बलि नवल नागरीदास॥11॥

★ षष्ठ दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद - राग पर्ज, ताल-धीमा तिताल

प्यारी तेरी पुतरी काजर हूँते कारी मानो द्वै भँवर उड़े री बराबरि।
चम्पे की डारि बैठे कुन्द अलि लागी है जेब अराअरि॥
जब आनि घेरत कटक काम कौ तग जिय होत डराडरि।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जविहारी दोउ मिलि लरत झराझरि॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद - राग आसावरी, ताल धीमा तिताल

चलि सखि देखन जाहिं कौतुक आजु भलौ री।
अपनी अपनी सौंज साजि सब बेगि चलौ री॥1॥
सुखद तरनिजा कूल फूल फूले कमल कली री।
तहाँ सारस हंस चकोर मोर झूमें आनि गली री॥2॥
फूली ललित लता द्रुमबेलि सोभा अमित बढ़ी री।
कूजित कोकिल कीर कुञ्ज अट्टान चढ़ी री॥3॥
अलि-कुल कुसुम समूह सरस वितान तनै री।
(देखि) तहाँ खेलत नवल नवेलि केलि कल हरत मनैं री॥4॥
बाजे बाजत रंग संच सुर तार बनै री।
बर किन्नर कठतार बीन डफ सरस घनै री॥5॥

गावत फाग सुहाग राग रस रंग पनै री।
सहेलिन कौ अनुराग भाग कवि कौन गनै री॥6॥
मुदित प्रिया पिय अंग अनंग विनोद करैं री।
सोंधे सुरंग अबीर अरगजा निसंक भरैं री॥7॥
गौर स्याम अभिराम बसन सुरंग बनैं री।
सारी सुमन सुवास पीतपट लसत तनैं री॥8॥
दोउ राजत अमित अपार सु सार बिहार करैं री।
उदित मदन मद मोद भुजा हँसि अँस धरैं री॥9॥
रति दान अधर रस पान विलसत अंक भरैं री।
बिबि बिधु बदन निहार नैन रस रंग ढरैं री॥10॥
बाढ्यौ रंग अपार हार मुक्ता लर टूटी।
कंचुकि कसन सुदेस कुसुम अलकावलि छूटी॥11॥
अति माधुर्य सनेह परस्पर बिबस भये री।
दोउ सुरति श्रमित अति जानि सहचरि अंक लयेयरी॥12॥
यह फाग नयो अनुराग सुहाग कह्यौ न परै री।
(श्री) वृन्दाविपिन बिनोद कौन सुखसिन्धु तरै री॥13॥
सेवत सुख रुख जानि नये सिंगार ठये री।
बलि-बँलि नागरिदास की स्वामिनि नेह नये री॥14॥

★ सप्तम दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद - राग घनाश्री, ताल-चौताल

दिन डफ ताल बजावत गावत भरत परस्पर छिन-छिन होरी।
अति सुकुमार बदन श्रम बरसत भले मिले रसिक किसोर किसोरी॥
बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यौ इत उत चाह चलत तकि खोरी।
सुनि श्रीहरिदास तमाली स्याम सों लता लपटि कञ्चन की थोरी॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - [बना] राग धनाश्री, होरी काफी, ताल - धमार

श्रीवृन्दावन सहज सुहावनौ नवल नव नागर ए,
नव नागरि नेह निधान बना हाँ हंबै।
होरी खेलन के मते नवल नव नागर ए,
दोऊ गनि बैठे करि ठान बना हाँ हंबै॥1॥
मान मनावत प्रथमहिं दोउ करत परस्पर आन।
रोंटि मेंटि मिलि खेलहीं हँसि दिये हैं दुलहिनी पान॥2॥
नवल निकुञ्जचिराजहिं दोउ रबितनया के तीर।
भृंगु बिहंग कुलाहला नव नव जुबतिन की भीर।।३।।
स्याम ओर की साँवरी गोरी के गोरे गात।
उमंगि चलीं चित चौंप सों अपनी अपनी गहि घात।।४।।
सब सखी मनु अनुसारिनी उन साज लई सब सौंज।
लालरतन मनि की कुँड़ी केसरकी औंजा-औंज।।५।।
कस्तूरी कर्पूर सों (जहाँ) साखि कुमकुमा आदि।
चन्दन मलयागिरि घिस्यौ गौरामेद जवादि।।६।।
बाजे बाजत अनभती सब मिले हैं संच सुरतार।
बीन अमरती सावझी (बाजै) बर किन्नर कठतार ।।७।।
गावत चैत सुहावनौं मेरे पिय प्यारी के हेत।
खेलत मेलैं मिलवहीं (उन) बद्यौ है सबनि संकेत ।।८।।
लै लावनि लाँगे कसीं बैनी कट सौ लपटाइ।
आधे कुच कंचुकि कसीं अति आनन्द उर न समाइ।।९।।
आज्ञा ले सन्मुख भई (उन) दीनी हैं जुगति जनाइ।
अरगजा पिचकारी भरीं दोऊ भरत परस्पर धाई ।।१०।।

चोवा के चहले मचे भए अम्बर अरुन अबीर।
हार जीत नहिं समझहीं दोऊ अति रस मगन गँभीर।।११॥
फाग खिलावत फूल सों दै सैनन ही सनकारि।
नैन कँवल कज्जल भरे जहाँ मची है कटाक्षन मार।।१२॥
इक झुकि बैठि पीठ दै इक मानिनि ह्वै मुख मोरि।
एक मनावत दीन ह्वै इक पायन परत निहोरि ।।१३॥
दिन दुलहिनि कौं दुलरावहीं दिन दूहह कौं दै गारि।
गावत सुख दै रूख लियें मुख चुम्बत भरि अँकवारि।।१४॥
सोंधे में सोंधी सबै (अब) कौन पिछानै काहि।
सबहि प्रेम रस रंग रंगी (जहाँ) रहे हैं। रसिक मुख चाहि॥१५॥
मेरौ कुञ्जबिहारी कौतुकी यह कौतुक रह्यौ लुभाय।
मत्त भये रस माधुरी पीवत सुख दै धाय।।१६॥
होरी खेलत रंग रह्यौ सब गोरी लई बुलाय।
इनमें को गोरी को साँवरी मोसौं कहौ स्याम समुझाय ।।१७॥
स्याम कहैं गोरी सबै गोरी के तन मन स्याम।
निरखि बदन तन्मय भये यौं सुफल कियौ सब काम ।।१८॥
बातनि रहसि बहसि बढ़ी दोऊ यह विधि खेलैं फाग।
अपने रसिकन की रस रीति कौ यौं प्रगट कियौ अनुराग।।१९॥
सखी सहेली सहचरी श्री हरिदासी सुखरासि।
श्री विपुल विहारिनदासि कौं हँसि रीझि दई स्याबासि।।२०॥

★

रस-सागर श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू महाराज को प्राकट्य महोत्सव शु० ५

★ प्रथम दिवस ★

राग केदारौ, ताल -चौताल

श्रीस्वामीजू कौ पद-

सुनि धुनि मुरली बन बाजै हर रास रच्यौ।
कुञ्ज कुञ्ज द्रुम बेलि प्रफुल्लित मंडल कंचन मनिन खच्यौ ॥
नृपत जुगल किशोर जुवति जन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
श्रीहरिदास केस्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी नीकेरी आजुप्यारौलाल नच्यौ॥

राग काफी, ताल -धमार

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

रसभीने बिहारी मन हरयौ, एसी जुवती धीरज धरै को।
इक कौतिक दैख्यों सुनि सजनी आज तरनिजा तीर।
विमल तमाल लता लपटी सब सुक पिक भृंगन भीर ।।१॥
हंस हंसिनी नलिन पुलिन मिलि पत्रा बिलोल समीर
दम्पत्ति सम्पत्ति सहज सु देखत बढ़ी मनसिज मन पीर।।२॥
सुभग बरन तन स्याम मनोहर सुन्दर नैन विसाल।
बंसी सरस मधुर सुर गावत गुन गन रूप रसाल ।।३॥
हौं हीं लेत प्रीति परचो अलि ये अति प्रेम प्रबीन।
पलक ओट बन बोलत डोलत व्याकुल तन मन लीन।।४॥
औचक अचक आय ऊभे भये हौं ही सहज सुभाय।
कह्यौ कछु न लह्यौ मन कौ मतौ दरस परस अकुलाय ।।५॥
कम्प पुलक तन स्वेद भयौ भ्रम मोपै कह्यौ न जाय।
अति चञ्चल अञ्चल गहि मेरो बचनन रुचि उपजाय।।६॥
तैहूँ मान सयान दृढ़ायौ मैं गाढ़े करि प्रान।
प्रीतम पानि उरजि परसे हँसि मनहुँ बिसिष बर बान।।७॥

मूलताल – विह्वल भये भाँवते पिय राखी उर कंठ लगाय।
बदन निवारि सकुच सखि उधर मधुर रस प्याय।।८।।
सर्वस श्री हरिदासी कौ सर्वोपरि नित्यबिहार।
बिपुल विनोद सदा बृन्दाबन रसिक अनन्य अधार।।९।।
श्रीललितादिक सेवत सन्तत सुख बर्षत हरष उदार।
श्री बिहारिनिदास बिलास मगन मन मधुर प्रेम रस सार।।१०।।

श्रीस्वामीजू कौ पद – राग –केदारौ, ताल चौताल

जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाहीं।
बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावत कोऊ बीरी खवावत एकव आरसी लै जाहीं।।
और सेवा बहुत भाँतिन की जैसी ये कहैं कोऊ तैसीये करौं ज्यौं रूचि जानौ जाहीं।
श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कौ भलें मनावत दाउ उपाहीं।।

श्री गुरुदेवजू कौ पद– राग–काफी, ताल धमार

हो हो रंगीली नागरी रँगरत्ता भत्ता तेरेरी नैनबैन सलौने चाव।
मोहि लिया मिठ बोलन डोलन मोहन रसिक राव।।१।।
साँवली बैनी मनो अलि श्रनी सोहँदा झब्बा अन्त।
लटक चली अलबेली रस बस कारन कामी कन्त।।२।।
उज्जली जोत झलकदा मोती उच्ची नक्कु लवंग।
एक अलक झलक कपोलनि विथुरी मोतिन मंग।।३।।
अधर मधुर रस चखियाँ अखियाँ अञ्जन ऊपर लीक।
सेज सुरति रस केलि कलोलनि प्रेम परी सखि पीक।।४।।
चौसर चम्प गुलाब दी माला दलमली अँग अंग।
कुञ्ज भवन रवन रमी प्यारी पिय के रंग सुरंग ।।५।।
चोली चित्र मित्र अलि भीनी अंगराग अनुराग।
निसि जागे रति रंग मनोहर पागि रहे गल लाग।।६।।

उच्च कुल नवरंगे चंगे अञ्चल अति उदार।
लाड़िली लाल लड़रवदा भावँदा गावँदा नित्य बिहार॥७॥
छैल छबीली की छाया रही छवि अंग अंग उर और।
कटिपट कच छूटी सर्वसु लूटि लियौ सिरमौर॥८॥
मूलताल–सखी सब गल्ला लखियाँ अखियाँ कुञ्जन कीति गल्ल।
सुनि सुनि सुख नेह सनेहिदा हँसि मिली मुख भल्ल॥९॥
श्रीकुञ्जबिहारी प्यारी पर वारी जीवन प्रीतम प्रान।
(श्री) बिहारिनदास जथामति तुवगुन लावनि रूप निधान॥१०॥

★ तृतीय दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद– राग– केदारी, ताल चौताल

(ये) यह कौन बात जू (ओ) बहीं और अबहीं और अबहीं औरैं। देवनारि नागनारि और नारि ते न होहिं और की औरैं। पाछे न सुनी अबहूँ आगेहूँ न ह्वै हैं यह गति अद्भुत रूप की और की औरैं। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी या रस ही बस भये यह भई और की औरैं।

श्रीस्वामी नागरीदूवजू कौ पद– राग–मारू, ताल धमार

स्यामा नागरी हो प्रबीन।
सकल गुननिधान राजति नागर नेह नवीन॥१॥
नख सिख छबि रूप की रासि सोहत मोतिनि मंग।
अलक-झलक देखत छवि मोहे लाल अनंग॥२॥
कबरी कुसुम ग्रन्थति कच तिलक बिन्दुली भाल।
बंक भृकुटी मोहत मन चपल नैन बिसाल॥३॥
अति दुति ताटंकनि छबि भ्राजत लोल कपोल।
अधर दसन मुसिकनि सखि मधुरैं मधुरैं बोल॥४॥

सुभग नासा सोहत अति बेसर मनि लाल।
मुक्ता बहुभाँति लसत चिबुक बिन्दु रसाल ॥५॥
कंठपदिक छूटी लरैं मिही जंगाली पोत्ति।
हेम जटित चौकी छवि जगमगै अति जोति ॥६॥
कुच जुग स्याम कंचुकी यों राजत मोतिन हार।
उर अम्बर उड़गन मानों कीनों है उद्‌गार ॥७॥
भुज मृणाल जुगल बलय झब्बा फौंदा स्याम सुढार।
पुहुप सुरंग फूले मनों मदन बिटप डार ॥८॥
त्रिवली नाभि कटि नितम्ब किंकिनी सुरता।
करभ जंग जेहरि छवि नूपुर झनकार ॥९॥
जुगल कमल अरुन चरन राजैं बहुँ भाँति।
नख मनिगन देखत छवि मोहन मन सांति ॥१०॥
पचरंग ढिग अरुन सारी लहँगा पीत दुकूल।
गोरे तन भोरे मन देखत लालहिं फूल ॥११॥
निरखत छवि मोहे स्याम अंग प्रवीन।
चकाचौंधी लागी नैननि लाल भये आधीन ॥१२॥
मूलताल-कुञ्ज कुञ्ज डोलनि बहु लीनों सखिन संग।
मुदित मोर निर्तत देखि दामिनी घन रंग ॥१३॥
दम्पति रति सोहत अति विलसत सुख सार।
श्रीललितादिक देखत दिन सर्बसु प्रान अधार ॥१४॥
जै श्रीबरबिहारिनदास कृपा तें सेऊँ सुखरासि।
छिन-छिन प्रति बलि बलि नवल नागरीदासि।।१५।।

★

★ चतुर्थ दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद - राग-केदारौ, ताल चौत...

बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि।
कंठसिरी दुलरी हीरन की नासा मुक्ता ढरनि॥
तैसोइ नैननि कजरा फबि रह्यौ निरखि काम जिय डरनि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी रीझि रीझि पग परनि॥

श्री गुरुदेवजी को पद -
मोहन मोहिनी सुहेलरा गाऊँ। (पृष्ठ 10 पर देखें)

अनन्य मुकुटमणि श्रीस्वामी बिहारिनदेवजू कौ प्राकट्य-महोत्सव : श्रावण शु० 3

★ प्रथम दिवस ★

निकुञ्ज बिराजिये जू (पृष्ठ ७ पर देखें)

★ द्वितीय दिवस ★

चलौ जू कौतिक देखन जाँहि (पृष्ठ ९ पर देखें)

★ तृतीय दिवस ★

श्रीस्वामी जू कौ पद - राग - मल्हार, ताल-चौताल

नदित मन मृदंगी रासभूमि सुकान्त सुभ नवगति तृभंगी।
धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गाइतेंग्रि नाभि तान तुंगी॥
रसद बिहारी बंदे बल्लभा राधिका निसदिन रंग रंगी।
श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी संगीत संगी॥

श्री गुरुदेवजू कौ पद - साँवरी सहेली राग -विहाग, ताल धम...

मनमोहन भेष पलटि चले साँवरी सहेली अपनौ नांउ बनाइ।
प्रेम सहेली सों मिली श्री स्यामा मोहि मिलाइ॥१॥
प्रेम सहेली यौं कह्यो तू मेरौ सौ सीख सुभाव।
यौं मिलिये यौं बोलिये ज्यौं उपजै चित चाव॥२॥

तैं कह्यौ भलौ मन भाँवतौ अब बन्यौ (है) दाव उपाव।
हौं देहुँ कहा सुख तेरोई सखि तोमें सबहि समाव॥3॥
जो तू कहि है सोई करि हौं सखी तेरे पाँयनि पाइ।
बातन हिल मिल रंग रह्यौ फूली अंग न माइ॥4॥
प्रेमसहेली कुञ्ज में साजे सकल सिंगार।
केस कुसुम बैनी गुही सोंधे सरस सुढार॥5॥
जूरौ चम्पौ जगमगै मधि मुक्तामनि लाल।
बिच बिच मल्ली मौलसिरी झब्बा सुरंग गुलाल॥6॥
पटियन प्रेम बनाइ लिख्यौ अरुन सरस सीमंत।
भ्रम तम श्रम सब दूर होत सीसफूल हुलसंत॥7॥
सेंदुर कौ तिरछौ तिलक बिच मृगमद बिंदुली बनाइ।
तन मन निरखि हरषि भयौ रीझ प्रियाजू पाइ॥8॥
अति बाँकी भौहें सोहैं अञ्जन नैन विसाल।
चितवंत चितहिं चुरावहीं जुवतिवृन्द नव बाल॥9॥
खुटिला खुभी जराव के अवतंसनि मनि लाल।
बेसरि मुक्ता झलमलै अधर मधुर सु रसाल॥10॥
दसनावलि कल कुन्द लौं मुख हँसत लसत बहुभाँति।
रवि ससि कोटिक दामिनी सकुचि दुरति लजि जाति॥11॥
रसनावलि गुन गन गनैं जाचति रति सुख सार।
चन्दन बन्दन कौ झलक चिबुक चखौडा चार॥12॥
कंठपदिक छूटी लरैं उज्जल जलज सुदेस।
राते डोरा दुरंग भये पहिरें प्रेम अवेस॥13॥
अतलस की अँगिया लसत अति आनंद उदित उरोज।
हँसति दुरति अञ्चल मुख दै तन घन मुदित मनोज॥14॥

बिबिध बरन बहु भाँति जाति सारी सुमन सुबास।
लहँगा मँहगा मोल नहीं कोमल बिमल विलास॥15॥
कर पहुँची चारि चारि चूरी कंकन वलय बाजूबन्द।
अँगुरिन मुँदरी सुन्दरी नखनिं लसत सत इन्दु॥16॥
अर्धचन्द बाँकी चौकी उपमा देहुँ सु काहि।
झाबनि पर फौंदा फबै मानौ उपजे हैं मदन उमाहि॥17॥
त्रिबली उदर सुहावनी मधि मोहन नाभि गंभीर।
छीन मध्य कटि किंकिंनी मुखरित मुदित अधीर॥18॥
सुन्दर सुभर नितम्बिनी जंघनि मनि मौज बिलोल।
सरस स्निग्ध सुमन बनी गुल्फ पिंडुरिया गोल॥19॥
पगनि घूँघरा बाजने ऐड़ी अँगुरी लाल।
लटकि चलति गज गति लजति सीखत सुगति मराल॥20॥
चूरा चौका चाँदिनी पग नखनि दसहुँ दिसि जोति।
जित ढरि चरन सुधरनि धरति प्रीत प्रगट तित होत॥21॥
अँग अँग निहारति मन हरति आरति तन मन काम।
प्रेमसहेली लै चलीं नवल कमल कुञ्ज धाम॥22॥
मेघ महल परदा फुही बहु बादर विमल बितान।
अद्भुत बन आनँदमई तहाँ राजैं (श्री) स्यामा रसिक निधान॥23॥
रतन खचित सारौट पर बैठीं बन बिस्तार।
प्यारी प्रीतम कौ हित चित धरैं हुलसति हँसति उदार॥24॥
सोहत सखी समूह में जीति मदन भई भूप।
पचरंग छत्र चँवर ढरैं मन मोह्यौ स्यामा रूप अनूप॥25॥
प्रेमसहेली फिर चितयौ कछुक सिखै लई लाज।
चलीं चलीं जब निकट आईं चञ्चल सहज बिराज॥26॥

चौंकि परी चितयौ सबनि यह को आई आन।
प्रेमसहेली यों कह्यौ यह सरस निपुन गुन गान ॥27॥
एक प्रेम सबहिन भयौ लै आई बर बाम।
प्रेमसहेली आगे ह्वै बोल लई निज नाम ॥28॥
प्रेमसहेली यौं कह्यौ यह मेरे कुल सील समान।
सरबस प्रेम हियौ सच्यो लै मिली अप बपु प्रान ॥29॥
देखत मन औरै भयौ आदर कियो सराहि।
नवल किसोरी यों कह्यौ तू मो ढिंग ते जिनि जाहि ॥30॥
नखसिख सुन्दर मोहिनी श्रीस्यामाजू के प्रान।
अंग अंग रस बरसहीं नागरि सुघन सुजान ॥31॥
नवलकिसोरी यों कह्यौ मोहि अपनो सो सिंगार सिखाय।
सुनत श्रवन मन मुख भयौ सीखौ बलि कह्यौ लड़ाय ॥32॥
पानि परसि हँसि लै चली नव केसर की कुञ्ज।
अरुन स्याम सित पीत मधुप गावत रस जस पुञ्ज ॥33॥
प्रेमसहेली पहिले ही रचि सचि सीतल सेज।
सकल सौंज उपयोग भोग प्रानप्रियाजू के हेज ॥34॥
तन रोम हरषि पुलकावली कीनौं कुञ्ज प्रवेस।
काम कुञ्ज अभिराम हीं बहु भाँतिन बढ्यौ अवेस ॥35॥
मूलताल – अब कछु राग सुनाइ सखी रही रुष लियें मुख चाहि।
प्रगट प्रेम न जनावहीं गावति उमहि उमाँहि ॥36॥
जाके गावत तान तरंग अनंग नचै लीनी कंठ लगाइ।
भेंटत भुजनि भरम गयौ मिलि अँग अँग समाइ ॥37॥
मधुर प्रेम रस सिन्धु बढ्यौ गई निसि नसि भयौ भोर।
बिलसत हँसत न जानहीं भोरहु जुगलकिसोर ॥38॥

प्रेमसहेली के प्रेम कौ गावत ललना लाल।
छिन छिन प्रति रति विस्तरत करत प्रान प्रतिपाल॥39॥
जो तुम मेरे प्रानपियारे रँगभरे उमँगि ढरे रसरासि।
तौ हौं तुम्हरौ जस गाऊँ दिन दुलराऊँ तू तौ तेरी जीवनि बिहारनिदासि॥

★ चतुर्थ दिवस ★

प्रातःकाल

श्रीस्वामीजू कौ पद- राग - भैरवी, ताल -चौताल

सौंधे न्हाइ बैठी पहिरि पट सुन्दरि जहाँ फुलवारी तहाँ सुखवति अलकैं। कर नख शोभा कल केस सवाँरति मानौं नव घन में उडगन झलकैं॥ विविध सिंगार लियें आगे ठाढ़ी प्रिय सखी भयौ भरु आन रतिपति दल दलकैं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी छबि निरखत लागत नहिं पलकैं।

(झूमका)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - राग-विलावल, ताल-धमा

मेरे पियप्यारी कौ झूमका सखि कहत परस्पर प्रेम, लाल बलि लाड़िली हो।
ये दोउ निमिष न बीछुरैं सखि इनहिं प्रेम कौ नेम॥1॥
प्रथम लड़ैती गाइहौं जाकौ श्रीवृन्दावन धाम।
पुनि रसिक रँगीलौ गाइहौं जाकौ कुञ्जबिहारी नाम॥2॥
नख सिख सुन्दर सोहईं दोउ अद्‌भुत रूप अपार।
एक प्रान तन द्वै धरैं अति मधुर प्रेम रस सार॥3॥
पहिलौ झूमक ताहि कौ जाकौ सोहैत सहज सुहाग।
दूजौ झूमक ताहि कौ जाकौ बाढ़त अति अनुराग॥4॥
पूरन प्रेम प्रकासिनी श्रीस्यामा अति सुकुँवारि।
मोहनजू के नैन चकोर लौं ससि जीवत बदन निहारि॥5॥
नव चम्पक तन कामिनी पिय सुभग साँवरे अंग।
दोउ समवैस विराजहीं लजि लागत पगनि अनंग॥6॥

नित नवलकिसोरी नागरी नित नागर नवलकिसोर।
प्रेम परस्पर झूमहीं जुरि दोउ नव जोवन जोर ॥7॥
तन मन अरुझि न सुरझहीं दोउ मगन मदन मद मोद।
प्रेमसहली सुन्दरी दोउ दौरि लिये गहि गोद ॥8॥
झूमत झूमत आवहीं छबि अंसनि झूमक बाहु।
कुञ्ज कुटी तन मन दियें दोउ फूलत नागरी नाहु ॥9॥
झूमक झब्बा झलकहीं नीबीबंद बाजूबन्द।
तरकि तरकि बंद टूटहीं सुख लूटत अति आनन्द ॥10॥
स्याम अधर अञ्जन भए मिलि राते नैन कपोल। ★
श्रमजलकन बदन बिराजहीं मानौं नवमुक्ता निरमोल ॥11॥
अब औरै छवि छाजहीं सखि देखौ मन दै धाइ।
अपनौं सर्बस साँवरौ लेहु ललना लाल लड़ाइ ॥12॥
झूमक सारी झूमहीं सखि पहिरें झूमक देहिं।
हरषि हरषि रस बरषहीं सखि निरखि निरखि सुख लेहिं ॥13॥
श्रीवृन्दाबन दिन झूमका सखि झूमि रह्यौ फल फूल।
सुनि मन मुदित सबै आईं झूमि कालिन्दी के कूल ॥14॥
मेरे कुञ्जरवंन कौ झूमका गुन गावत कोकिल कीर।
प्रेम उमँगि हियो भर्यौ सुख झूमत जमुना तीर ॥15॥
माते मुदित सिलीमुखा झूमि देत मधुर सुर घोर।
आनन्द उमँगि अलापहीं कल नाचत मोर चकोर ॥16॥

★ अरुनाधर अञ्जन रञ्जित ह्वै बिथके अलिबन्ध कलोलनि में।
बिथुरी अलकैं सिथली पलकैं जु लखी ललिता गति गोलनि में॥
श्रीबिहारीबिहारिनदासि कहैं बलि चाल डगमगी डोलनि में।
मुसक्यानि सयानि पिछानि प्रिया पिय की कछु पीक कपोलनि में॥

झुंडनि झुंडनि मृगा मृगी जुरि नैननि झूमक देहिं।
सुन्दर बदन निहारहीं सुर शब्द श्रवन भरि लेहिं ॥17॥
निरखि निरखि मुख रुख लियें बहुरी सब सीस नवाइ।
तन मन गुन अर्पन कियौ सुख दीनौं दुहुनि अघाइ ॥18॥
तब उनमान्यौ मन कौ त्यौं सखि लैचली सुहित जनाइ।
सुन्दर पुलिन सरस कन झलकत कमल कुमुद देखौ आइ ॥19॥
तहाँ सारस हंस प्रसंसित झूमक देत सुगतनि दिखाइ।
प्यारी हार पीताम्बर पिय सौं रीझि दियौ सुख पाइ ॥20॥
आगे उमँगि चलत लटकत सखि झूमक दै दुलराइ।
तहाँ नये-नये रस छाकत कौतिक उझकत छवि रही छाइ ॥21॥
कदली कुंद कदम्ब अम्ब बन बीथिन बहु बिरमाइ।
तन बन किधौं बन तन भयौ कछु ब्यौरो बरन्यो न जाइ ॥22॥
मनिमंडल मुक्तामहल बहु रतनसागर चित्रसाल।
कनक कलस छाजे झलकत बहु झूमत रतन प्रबाल ॥23॥
मधि मंजुल नव कुञ्ज किसलय दल सीतल सेज सुरंग।
कोमल कुसुम सरस सौरभ सब सम पराग बहु रंग ॥24॥
जाके परदनि द्वार झरोखनि झूमत मनसिज मदन अनंग।
तहाँ बैठे रीझि सराहि रसिकवर निरखि रहषि अँग अंग ॥25॥
चिबुक टटोरत छँद बंद छोरत परसत हँसत उतंग।
याही रस खेलत पुनि पुनि पिय प्यारी लेत उछंग ॥26॥
अंगराग अनुराग रँगे दूलह दूलहिनि द्वै देह।
सहचरि कहत सुरति सुखसागर झूमौ सहज सनेह ॥27॥
जै जै श्रीहरिदास प्रताप चरन बल बिपुल सु प्रेम प्रकासि।
मेरे गौर स्याम कौ सरस झूमका झूमि बिहारिनदासि ॥28॥

श्रीपीताम्बरजू कौ पद- राग-भैरवी, ताल-तिलाल

जै स्वामी जै स्वामी स्वामी जै स्वामी जै स्वामी।
अद्भुत रूप अनूप निरखि वपु गुननिधि पूरनकामी ॥
सुन्दर चरन तरन भवसागर पद रज परसत पामी।
कटत पाप संताप जनम के दरस प्रकासित धामी ॥
पिंडुरी जंघ नितम्ब निरिख छबि कटि सुदेस अभिरामी।
त्रिवली नाभि उदर रोमावलि हृदयमाल दरसामी ॥
कंठ चिबुक मुख नयन नासिका भृकुटी श्रवन सुठामी।
मस्तक तिलक नाम अंकित बपु पीताम्बर सिरनामी ॥1॥

जै राधे जै राधे राधे जै राधे जै राधे।
गोरांगी नीलाम्बर भूषित भूषन ज्योति अगाधे ॥
सहचरि संगनि स्याम धामिनी पुजवति मन की साधे।
रसिकविहारनि कृपा निहारनि पीताम्बर आराधे ॥

श्रीस्वामी सहचरिशरणदेवजू कौ पद -

बाँकी पाग चन्द्रिका तापर तुर्रा रुरकि रहा है।
वर सिरपेंच माल उर बाँकी पट की चटकि अहा है॥
बाँके नैन मैन सर बाँके बैन बिनोद महा है।
बाँके की बाँकी झाँकी करि बाकी रही कहा है ॥3॥

श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेव जू के पद -

लड़ैती तेरे चरन महा सुखदाई।
जिनहि निरखि लाल भए प्रीतम करत केलि मन भाई ॥
कबहुँक सपरस करि आनँद में राखत कंठ लगाई।
येई चरन हमारे मस्तक अब डर करत बलाई ॥4॥

बिहारिनि संग निरन्तर मेरे।
जिनकी कृपा लाल रहैं बांछित जीवत याही हेरे ॥

निकसि न सकत रूप-सागर ते परे प्रेम रस फेरे।
ऐसी ललितकिशोरी प्रीतम कहा जगत के डेरे॥5॥

श्रीरूपसखीजू के पद -

चारु चिबुक बदनारविन्द पर हीरा ललित विराजै री।
सुन्दर चष मुसक्यान मनोहर निरखि मदन सचु लाजै री॥
मनमोहन कौ मन मधुकर ह्वाँ कञ्ज-भाल पर भ्राजैं री।
कुञ्जमहल रस प्यारी पिय को रसिक रूप सिरताजैं री॥6॥
बिथुरी अलकैं श्रमकन झलकैं घूमत पलकैं प्यारी की।
उपजत किरन तरुन तन तेरे ललित कपोल किनारी की॥
प्रतिबिंबित छवि अद्भुत बैनी लटकि चाल सुकुमारी की।
रीझि रसिकबर ललित छबीलौ लाल केलि उर धारी की॥7॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

बिहरत लाल बिहारिन दोऊ श्रीजमुनाजी के तीरें तीरें।
अद्भुत अखंड मंडल भुव पर वर भामिनि भुज भीरें भीरें॥
कुञ्ज गगन घन अलक बदरिया चलत परस्पर सीरें सीरें।
उपजत किरन कपोल बिमल हँसि लसि दसनावलि हीरें हीरें॥
तामें द्वै ससि श्रवत सुधा श्रमजलकन मुख छवि नीरें नीरें।
लोचन चारु चकोर चितै हित पीवत अधीरन धीरें धीरें॥
उमगि मिलत अनुराग नवल वर कल कुंडल चल बीरें बीरें।
(श्री)बिहारिनदास सुरझत नहिं तन मन अरुझि अरुन पट पीरें पीरें॥8॥

झूलन के पद

श्रीस्वामीजू कौ पद - सन्ध्या समय राग-मल्हार, ताल-धमा

हिंडोरैं (अब) झूलत लाल दिन दुलहु दुलहिन बिहारिन देखौ री ललना।
गौर-स्याम छबि अति दुति बहुभाँति री बलना॥

नीलांबर पीतांबर अञ्चल चलत धुजा फहरात कलना।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी बिहारनि अबिचलना॥1॥

श्रीगुरुदेवजू के पद -

हिंडोरैं (अब) झूलन आई नई ऋतु सावन तीज सुहाई। कुञ्ज कुञ्ज तें निकसि हरी भूमि अरुन बरन मानौं चन्द्र बधू सी श्रीस्यामाजू हरषि बुलाई॥ अपनें अपनें मेल मिलीं अनुराग मल्हारहिं गावतताननि रुचि उपजाई। श्रीबिहारिनदास स्वामिनी स्यामा के संग बाढ्यौ रँग अँग अँग रीझ रिझाई॥2॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - राग- मल्हार, ताल - चौताल

हरियारो सावन सुहावनौं मन भावनो लागत अति नीकौ। इन उन बन में बदरन की छहियाँ गहि बहियाँ बोलत डोलत बन बन तैसोई संग सबही कौ॥ जहाँ तहाँ झुलावत झूलत जुगल नवल रीझि रिझावत आवत अनुराग भरि राग रंग प्यारी पी कौ। श्रीबिचित्रबिहारिनदासि कहति दरसत जे यह सुख दिन धन्य धन्य भाग त्रिया तिनही कौ॥3॥

रस भरे प्रान प्रिया पिय झूलत फूलत अँग सँग सरस हिंडोरैं।
अति आतुर आसक्त भये बस भृकुटी कटाक्ष झकोरैं॥
छूट टूट गये हार बार बन्द छोरत छबि बहु भाँति निहोरैं।
श्रीबिहारिनदासि सुख देख निरंतर पिय प्यारी यों हँसि मुख सौं मुख जोरैं॥4॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद- राग - भैरवी, ताल-तिताल

अपनी जू नवल प्रिया सँग नवल हिंडोरैं लाल झूलत हैं।
जै श्रीवृन्दाबन घन सहज सोभा आनंदसिंधु न थोर।
जहाँ सुभग जमुना कूल कमल जु सारस हंस चकोर॥
बोलत मधुर सुहावने अति मधुप कलरव घोर।
नवकुञ्ज कोकिल कीर चात्रिक गावत जस चहुँ ओर॥1॥

तैसिये पावस ऋतु भली घन मंद गरजन घोर।
तैसिये दामिनि धनुष चहुँदिसि बोलत मोरी मोर॥
तैसिये भूमि सुहावनी सखी हरित नांन भाँति।
रही अति छबि छाइ जित तित चन्द्रबधुन की पाँति॥2॥
नव लता ललित तमाल पल्लव बिबिध नाना जाति।
अति प्रेम भरि अनुराग झूमी फूल फल बहु काँति॥
रचित कुसुम बितान नाना बहत त्रिबिध नाना जाति।
निरखि संपति बिबस ह्वै मन बढ़त मनसिज पीर॥3॥
तहाँ रच्यौ है रंग हिंडोरना सखी सहज चंपक कुंज।
नव केलि नाना सुखद संपति सरस सौरभ पुंज॥
रमकि झूलैं नवल दोऊ गौर साँवल गात।
पीत पट छबि सुरँग सारी अँचल धुजा फहरात॥4॥
सप्तसुर मिलि मधुर दोऊ करतैं हैं गुनगान।
तैसिये सहचरि संग गावति संच सुर बंधान॥
राग रागिनि मिले प्यारी लेत विकट सुर तान।
सुनि थकित नागर चरन गहि सखि रीझ बारत प्रान॥5॥
बढ़त अति अनुराग छिन छिन करत नव नित रंग।
यह सुरति सागर मधुर जोरी सहज प्रेम (संग) अभंग॥
तैसिये सुखद बिहार स्वामिनी दासि नागरि संग।
तोरि तृन बलि जाय छबि पर बारति कोटि अनंग॥6॥5॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद– ताल– रूपक

प्यारी राधे सावन मन भावन भयौ चलि सुरति हिंडोरैं झूल॥1॥
प्यारी राधे माथे मुकुट सुहावनौं अरु नाचत सिखर चढ़ि मोर॥2॥

प्यारी राधे घन गरजत मुरली बजै बरु दामिनि मुरि मुस्क्यिाति ॥3॥
प्यारी राधे बचन रचन कल कोकिला अरु मुक्तावलि बग पाँति ॥4॥
प्यारी राधे स्याम घटा तन अति बन्यौ अरु इन्द्रधनुष बनमाल ॥5॥
प्यारी राधे छूटे कच टूटे धुरा अरु दादुर मृदु मञ्जीर ॥6॥
प्यारी राधे अरुन बसन बादर कसे अरु अनुकूली बर साँझ ॥7॥
प्यारी राधे हरित भूमि हरषी हृषी अरु इन्द्रबधू अवतंस ॥8॥
प्यारी राधे नवल नेह उलही लता अरु किसलय दल पद पान ॥9॥ पाँ
प्यारी राधे संतत आस बिलास की अरु चलत पवन झकझोर ॥10॥
प्यारी राधे प्रेम पुलकि रस बर्षहीं अरु सरसत सरित अनंग ॥11॥
प्यारी राधे भगवत उर सरवर भर्यौ अरु फूले दृग जल जात ॥12॥
[प्यारी राधे झूलत बिहारी प्यारी रसभरे अरु छवि की उठत तरंग ॥13॥
प्यारी राधे गौर स्याम तन अति बन्यौ अरु भूषन बसन सुरंग ॥14॥
प्यारी राधे श्रीवृन्दावन रस झूमही श्रीयमुना लेत हिलोर ॥15॥16॥]

श्रीस्वामी सरसदेवजू के पद- राग - मल्हार, ताल-चौताल

झूलत दोऊ नवल हिंडोलैं।
बिमल पुलिन कल कमल कुञ्ज मधि चितवन नैन सलोलैं ॥
जोवन जोर झकोरनि देत आलिंगन करत कलोलैं।
श्रीसरसदास सुखरासि रहसि नव सुनत मधुर मृदु बोलैं ॥7॥

झूलत फूलत सुरति हिंडोरैं।
पुलकि पुलकि किलकत हिलिमिलि नव जोवन जोरे झकोरैं ॥
छूटी लट पट सिथिल भये अँग अँग अनंग निहोरैं।
रहसत बिहँसत मिलत परस्पर उर कर चिबुक टटोरैं ॥
अति रस भरे (ढरे) खरे डाँडी गहि निरखत बिबि मुख ओरैं।
श्रीसरसदास दरसत बिलास नित अति चञ्चल चितचोरैं ॥8॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद –

हिंडोरें झूलत तन सुकुमार।

पुलकि पुलकि राधे उर लागत प्रीतम प्रान अधार॥
भाये बसन सजे मनसिज के उर बर हार सुढार।
सुख में झूलति कुँवरि लाड़िली रमकत स्याम उदार॥
जुगल रूप अनूप बिराजत मनमथ भेद अपार।
श्रीरसिकबिहारी की छबि निरखत खरे (हैं) कुञ्ज के द्वार॥9॥

ताल–धमार

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद –

(सु ए री माई) झूलत ललना लाल हिंडोरैं राजैं सुभग स्याम तन गोरैं।
अँग अँग हरषत सुख बरषत मिलि मन करषत नैंननि सों नैना जोरैं॥
उपजत मौज मनोज चोज रति सुरति रंग (रस उमँग्यौ) दुहुँ ओरैं।
श्रीनागरीदासबलि बिचित्रबिहारिनदासि मिलें सुख बिहरत जुगल किसोरैं॥10॥

ताल–धमार

हिंडोरा होली रंग रह्यो सरसाइ, राजी मैं तो वारीजी वारी हों छबि देखि।
झोटनि में झुकि झूमि रह्यौ पिया प्यारीजी रो रूप लुभाइ॥
तन भीजैं तरुवर चुवैं हो गलबहियाँ लपटाइ।
रसिकबिहारीजी रौ झूलनौजी म्हारै मन में झोटा खाइ॥11॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद –

यह रस रंग हिंडोर सहचरि हरियल सुही सुहाग लहरिया।
पहिरैं बसन सुरंग दुलहिनी कञ्चन नील निचोल गहरिया॥
दूलह घन दामिनि लपटाने तन मन सजि पट पीत पहरिया।
सहचरि रसिक देखि छबि ढाँपत पीताम्बर जुग रूप ठहरिया॥12

बिहारी नेकधीरें झूलौ राज स्यामा प्यारी झूलैं छैं थारेलार।
घन रमकन म्हारौ जिया लरजै छै ये छै अति सुकुमार॥

लचकत मचकत रंग हिंडोरैं भूषन लागैं भार।
मद छक छैला श्रीरसिकबिहारी नैना अतिसै रसाल॥13॥

श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेवजू कौ पद -

रँगीले दोऊ झूलत सुरत हिंडोरैं।
फूल फूल आनंद बढ़ावत निरखि रहत प्रिय ओरें॥
श्रीकुञ्जबिहारिन प्रान प्रान मिलि मुसिकत हैं मुख मोरें।
श्रीहरिदासी के रसमाते सुख कौ सिंधु झकोरें॥14॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

आजु तो झूलैं री दोऊ नवल हिंडोरना।
स्याम सघन घन दामिनि सों कीनौं पन जब तुम कौधौ प्यारी तब हम घोरना॥ झुलावैं श्रीहरिदास दुलारी झूलैं दोऊ श्रीकुञ्जबिहारी सरस सुखनि को एरी ओर न छोरना। श्रीरसिकबिहारीजू थाके प्यारीजू के रसमाते पीताम्बर ओढ़ाय लैं री प्यारी करत निहोरना॥15॥

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद -

रंग हिंडोरना री झूलत लाड़िली पिय के संग।
मंद मंद झूलत फूलत दोऊ पहिरें बसन सुरंग।
अंग अंग हरषत सुख वरषत छबि की उठत तरंग॥
सुख में झूलति कुँवरि किसोरी भरि भरि लेत उछंग।
श्रीललितमोहिनी प्यारी पिय की निरखत केलि अभंग॥16॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद - राग-मल्हार, ताल-तिताल

ललना लाल हिंडोरें झूलैं।
सावन में मन भावन मन की मन भावन करि फूलैं॥

नीरद नवल नाहु उर ऊपर दामिनि भामिनी भूलैं।
भगवतरसिक झुलावत गावत गहि डाँड़ी भुल मूलैं ॥17॥

झूलैदाऊ नव निकुञ्ज मधि ठाढे।
झोटा देत गहे भुज डाँड़ी अंग अनंगनि बाढ़े॥
नवसत साजि सिंगार सहचरी भूषन ग्यारह साढ़े।
भगवत रसिक प्रेम परिपूरन देत आलिंगन गाढ़े॥18॥

मेरी अलकलड़ी अनबेली।
ढूलत रति बिपरीत हिंडोरैं नाहु अंस भुज मेली।
मवकत जोबन जोर परस्पर परिरंभन पग पेली।
गावत राग मल्हार मनोहर भगवतरसिंक सहेली॥19॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद –

आवत लाड़िली लाल फूले।
कुञ्ज केलि नवरंग बिहारी सुरति हिंडोरैं ढूले।
निसि जागे अलसात रगमगे पट पलटे गति भूले।
श्रीबीठलविपुल पुलकि ललितादिक दिन देखत द्रुम मूले॥20॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद –

प्यारी ढूलत अति रसमाती।
पिय के अंग निसंग हिंडोरैं लटकि लपटि लड़काती।
पुलकि पुलकि प्रीतम दा लागत अतिरस रसिकन अघाती।
श्रीबिहारीबिहारिनदास रहसि रस बिपुन अँग संग समाती॥21॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद –

सावन आयो री हिंडोरैं झूलैं।
कहत पियाजू सों स्याम निरन्तर रीझि रीझि मन फूलैं॥

सुनि सुकुमार सुधार निवार सिंगार बसन हिय हूलैं।
(श्री) पीताम्बर पिय बोल सहचरी रसिक सखी अनुकूलैं ॥22॥

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद – राग–मल्हार, ताल–धमार

उमँगि उमँगि आये चहुँ दिसि बदरा स्याम घटा अनंग भरे।
तड़ित चमकति रूप सुधा भरि बन सोभा सब हरे–हरे ॥
रंग हिंडोरैं झूलत दोऊ चक्रित होइ सखी ठाँन ठने।
(श्री) ललितमोहिनी सुख वरषावति गावतिं अति आनन्द भरे ॥23॥

श्रीस्वामी किशोरदासजू के पद – राग–मल्हार, ताल–धमार

प्रीतम प्यारी अंक निसंक सुखद हिंडोरना दोऊ झूलत हैं।
उदित वृन्दाबन बिराजत मुदित द्रुम दल बेलि।
नव लता ललित सुकुसुम फल अलि रहै नवरस झेलि ॥1॥
करि गान सुघर सुजान हित चित सुगति तान सकेलि।
मंजु गुंज सुनाइ रिझवत सुघर नवल नवेलि ॥2॥
स्याम बरन सु तरनि तनया हरन मन सुख देति।
स्याम बाम सुधाम बसत सकाम रस जस हेत ॥3॥
विविध रंग अनंग जुत नित बहत सुहि रस खेत।
मिलि चलत अति अलप गति नव ललित नलिनि समेत ॥4॥
हेम बर सम तरनि थर नग जरित ढार सुढार।
किसलय दलनि सुनीलमनि मृदु नवल जोति अपार ॥5॥
सुच्छ गुच्छ प्रवाल सम नमि रहै कुसुम सुचार।
सेवत लखि सुख मदन घन मन कदन बन आगार ॥6॥
पावस रितु अति अमित गति लखि हरषि बोलत मोर।
दमकि दाँमिनी चपल चमकंति करत कल घनघोर ॥7॥

परसि सौरभ पवन गुनि सुनि मन सु उठति झकोर।
निरखि संपति हरषि दंपति रच्यौ सुरति हिंडोर ॥8॥
गौर-स्याम सुठाम झूलत फूलत सरस सरूप।
पीवत अधर सुधा महा मद मत्त रहत अनूप॥9॥
लेट झौंटा देत दुहुँ दिसि रसिक गन मनि भूप।
भयौ परम हुलास श्रीहरिदासि सुख सरबूप॥10॥
नैंन सैंननि हरन मन मनसिज सरनि अनियार।
गहि करनि डाँड़ी तरन तरनी उरनि उर दरिमार॥11॥
संग रहत आनन्द कंद नित आनन्द परम उदार।
परम रस की रासि दासि किसोर बिबि सुकुमार॥12॥24॥
भींजत मोहनी मोहन हरषि हिंडोरना दोऊ झूलत हैं।
मधुर मत्त मनोज मन मकरन्द लेत सुछन्द।
द्रुम दलनि बेलि नबेलि नव रस लटकि लिपटनि मन्द॥1॥
झुकि जात आत डरात बातनि करत कोमल फन्द।
गहि लेत डाँड़ी तरनि कर उर अरत आनँद कन्द॥2॥
सुवन वन गुन गननि गावत वरनि वर सुख पात।
मुदित मधुकर मदन मादिक मिलत मन न अघात॥3॥
मरुत मन्द सुगन्ध सीतल सुखद मुख रुख गात।
डगमगत द्रुम श्रम समन करनि पराग परसि गिरात॥4॥
जुवति जूथनि जुरि परस्पर झूलि झुकनि झुलात।
पिय प्रेम गाथा गात सकुचि डरात फिरि तुतरात॥5॥
नैन ब्रीड़त करत क्रीड़ा मैंन मन न समात।
निसि भोर दासिकिसोर बिबि बनि वन विविध बिलसात॥6॥25॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

सुनि झूलि झूलनारी मेरा।
नील कलेवर चम्पक वरनी उपमा मिलत न हेरा॥
ज्यौं गरजै त्यौंही रस बरसै और न कोऊ नेरा।
श्रीरसिक बिहार करत यौं कहियै पीताम्बरबर तेरा॥26॥

श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेवजू कौ पद-

श्रीनिधिबनराज में फूल महल दोऊ फूले।
काम केलि आतुर दोऊ प्रीतम अँग अँग अनुकूले॥
हाव भाव आलिंगन चुम्बन गाढ़े गहि भुज मूले।
श्रीललितकिसोरी हरषि हिंडोरैं नाभि कमलमधि झूले॥27॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद -

लाड़िली लाल हिंडोरैं झूलैं।
अँग अँग मिलि अद्‌भुत झौंटा इह सुख कबहूँ न भूलैं॥
दृग जोरैं मुसिकात परस्पर दरसि नाभि भुज मूलैं।
गौर-स्याम अभिराम मनोहर एक बैस सम तूलैं॥
त्रिविध समीर नीरवर बरषैं बचन रचन अनुकूलैं।
श्रीरसिक रूप नित श्रीहरिदासी विपुलबिहारिनि फूलैं॥28॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद-

लाल हिंडोरैं मौज बनी।
डाड़ी पकरि चढ़त पटुली पर पलनैं लाल मनी॥
अरुन किरन तरुनी तन आभा रंग सुरंग सनी।
श्रीपीताम्बर लखि रसिक स्वामिनी रीझत धन्य धनी॥29॥

लाल हिंडोरैं तीज बनी।
दूलह स्याम सखी सुख झूलत फूलत तरकि तनी॥

तन सुरंग पटुली जटित मनि मृदु रसरीति सनी।
श्रीपीताम्बर उर परसि रसिकनी बकसत मौज घनी ॥30॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव
शरद् पूर्णिमा

प्रथम दिवस – रसभीने बिहारी मन हर्‍यौ। (पृष्ठ 18 पर देखें)
द्वितीय दिवस – हो हो रँगीती नागरी। (पृष्ठ 19 पर देखें)
तृतीय दिवस – स्यामा नागरी हो प्रबीन। (पृष्ठ 20 पर देखें)

★ चतुर्थ दिवस ★

श्रीस्वामीजू के पद– सन्ध्या समय रास के पद राग–केदारौ, ताल–चौताल

सुनि धुनि मुरली बन बाजै हरि रास रच्यौ।
कुञ्ज कुञ्ज द्रुम बेलि प्रफुल्लित मंडल कञ्चन मनिन खच्यौ॥
नृत्तत जुगलकिसोर जुवतिजन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी नीके री आजु प्यारौ लाल नच्यौ॥1॥

जहाँ तहाँ चरन परत प्यारीजू तेरे तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाहीं। बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावत कोऊ बीरी खवावत एकव आरसी लै जाहीं॥ और सेवा बहुत भाँतिन की जैसीये कहैं कोऊ तैसीये करौं ज्यौं रुचि जानौ जाहीं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ भलें मनावत दाव उपाहीं॥2॥

यह कौन बात जू अबहीं और अबहीं और (अबहीं औरैं)।
देवनारि नागनारि और नारि तें न होहिं और की औरैं॥ पाछे ना सुनीं अबहूँ आगे हूँ ना ह्वै हैं यह गति अद्‌भुत रूप की और की औरैं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी या रस ही बस भये यह भई और की औरैं॥3॥

बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि।
कंठसिरी दुलरी हीरन की नासा मुक्ता ढरनि॥
तैसोई नैंननि कजरा फबि रह्यौ निरखि काम (जिय) डरनि।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी रीझि रीझि पग परनि॥4॥

कुञ्जबिहारी नाचत नीके श्रीलाड़िली नचावत नीके।
औघर ताल धरैं श्रीस्यामा ताताथेई ताथेई बोलत सँग पीके॥
तांडव लास और अंग को गनै जे जे रुचि उपजत जीके।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कौ मेरु सरस भयौ और रस गुनी परे फीके॥5॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू के पद- रागकेदारौ, ताल-धमार

नव बन नव निकुञ्ज नव बाला।
नव रँग रसिक रसीलौ मोहन बिलसत कुञ्जबिहारी लाला॥
नव मराल जित धरत अवनि-पग कूजित नूपुर किंकिनि जाला।
श्रीबीठलविपुल बिहारी के उर यौं राजति जैसे चम्पे की माला॥6॥

नव निकुञ्ज नव भूमि रगमगी।
नवल बिहारीलाल लाड़िलौ नवल सरद की जौन्ह जगमगी॥
नव सत साजि सकल अंग सुन्दिर नवल बदन पर अलक सगबगी।
श्रीबीठलविपुलबिहारी के अंग लाड़ति लाड़िली सहज उर लगी॥7॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद - ताल-चर्चरी

रसिक रसिकनी किसोर निर्त्तत रंग भीने।
गौर सुभग स्याम तनै नटवर वपु वेष बनै तत्त ठुमक थेई थेई उघटत गति लीनें॥ कोक संगीत सुघर गावत सुख सर्वोपरि तान तिरप लेत प्यारी पहिरें पट झीनें। अधर दसन दुति प्रकास अलक झलक भुव बिलास तार सुरन चोरत चित नवल नेह नवीनें॥ रीझि रवन मोहि रहे धाइ चपल चरन गहे लये

लाल ललना हँसि अंस बाहु दीने। दासि श्रीनागरि नवेलि नागर मिलि करत केलि आनन्द रस झेलि खेलि पूरन प्रेम प्रवीने॥8॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद- राग - पर्ज, ताल - धीमा तिताला

निरतत रसभरे रसिकबिहारी।
तान तिरप गति भेद अनागति घात लेति सुकुमारी॥
थेई थेई करत धरत पग चञ्चल उपजत नूपुर रव झनकारी।
गावत कटि लटकावत नैन नचावत प्रीतम प्यारी॥
मृदंग तार सुर सप्त सञ्च मिलि तैसिये छिटकि रही उजियारी।
कोककला कल केलि झेलि रस क्रीड़त कुँवरि दुलारी॥
द्रुम बेली फूली सुख बरषत चंपक बकुल गुलाब निवारी।
करत विनोद बिपिन मन भाये श्रीसरसदास बलिहारी॥9॥

श्रीगुरुदेवजू के पद- राग - विहाग, ताल- अद्धा तिताला

जोरी अद्भुत आज बनी।
वारौं कोटि काम नख छबि पर उज्ज्वल नील मनी॥
उपमा देत सकुचि निरउपमित घन दामिनि लजनी।
करत हास परिहास प्रेम जुत सरस बिलास सनी॥
कहा री कहौं लावन्य रूप गुन सोभा सहज घनी।
श्रीबिहारिनदास दुलरावत श्रीहरिदास कृपा बरनी॥10॥
देखि देखि मुख जीवत यों सुख मानत हैं रससंगी।
कबहुँ कोमल कर सों बंद छोरत कंचुकी कसन सुरंगी॥
नई नई प्रीति प्रतीत प्रियाजू सों नई रुचि चौंप सुचंगी।
श्रीबिहारिनदास की स्वामिनी स्याम नचावत होत तृभंगी॥11॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद-

राजत नव निकुञ्ज नव जोरी।
सुन्दर स्याम रसीले अँग अँग नवल कुँवरि तन गोरी॥
बदन माधुरी मदन सदन सुख सागर नागरि कुँवरकिसोरी।
श्रीसरसदास नैननि सचु पावत कौतिक निपट नयौ री॥12॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद-

खेलत रास लाड़िली लाल।
तान गान गुन सिखवति प्यारी तहाँ न कोऊ बाल॥
ताल मृदंग संगीत बिधि उघटत भूषन बजत रसाल।
उरप तिरप लै नचति सुलप गति उपजत सुख के जाल॥
केलि कला रस बरषत हरषत परसत प्रेम बिसाल।
श्रीनरहरिदासि निकट सुख निरखत स्याम सुभग उर माल॥13॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद - राग- बहार सुघराई कान्हरौ, ताल-तिताला

नाचत दोऊ रहसि में रंग भीने।
हाव भाव उपजत अंग अंगनि कोककला मन दीने॥
बाजत मधुर मृदंग किंकनी नूपुर ताल नवीने।
होड़ा होड़ी ताप तिरप गति लेत नहीं कोऊ हीने॥
राकारति रजनी कर आनन उदित मदन बस कीने।
रीझि रीझि भगवत की स्वामिनि लाल अंक भर लीने॥14॥

श्रीस्वामीजू कौ पद - ताल-चौताल

अद्भुत गति उपजत अति नृर्त्तत दोऊ मंडल कुँवर किसोरी।
सकल सुधंग अंग भरि भोरी पिय निर्त्तत मुसकनि मुख मोरी परिरंभन रस रोरी॥ ताल धरैं बनिता मृदंग चन्द्रागति घात बजै थोरी थोरी। सप्तभाइ भाषा विचित्र ललिता गायन चित चोरी॥ श्रीवृन्दाबन फूलनि फूल्यौ पूरन

ससि त्रिबिध पबन बहै थोरी थोरी। गति बिलास रस हास परस्पर भूतल अद्भुत जोरी ॥ श्रीजमुना जल बिथकित पुहुपनि बरषा रतिपति डारत तृन तोरी। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी कौ रस रसना कहै कोरी ॥15॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद–

राग –विहाग, ताल–अद्धा तिताला

राजत रास रसिक रस रासै।
आस पास जुवती मुख मंडल मिलि फूली कमला से॥
मध्य मराल मिथुन मन मोहन चितवत आतुरता से।
बचन रचन सुर सप्त नृत्य गति मदन मयंक विकासे॥
बाजत ताल मृदंग अंग संग मंद मधुर मृदु हासै।
घूँघट मुकुट अटक लटकत नट अभिनव भृकुटि बिलासै॥
वारत कुसुम सुगंध देखि सखि आनंद हिये हुलासै।
तृन तोरति रति जोरत छिन छिन बिपुल बिहारिनदासै ॥16॥

ताल–चर्चरी

रास रवनी रवन रसिक नवरंगी।

बिपिन भूतलप नहिं अल्प मंडल रचित सुरति निर्तत उदित मुदित अँग संगी ॥1॥ सभा कल कुञ्ज सुखपुञ्ज संपति सहित सघन मनि दीप्त बन कुसुमित सुरंगी। कहूँ भृंगी कहूँ मृगी कौतिक कहूँ नैंन सैंननि बिना बैंननि बिहंगी ॥2॥ ससिहिं भूल्यौ भवन गवन जमुना पवन रहे मनु वारि अनुरागिन अभंगी। तहाँ नहीं कछु श्रम तम न गम विरह भ्रम मान लवलेस प्रवेस न प्रसंगी ॥3॥ बिमल गोरे गात मनहु निसि गत प्रात आई ऊभी भई उरजनि उतंगी। सकल सुख साधि आराधि राधा गुरै धरति पग चपल साँवल तन त्रिभंगी ॥4॥ शब्द रसनावली ताल नीबीबन्द बलय बाजत मृदंग नूपुर उपंगी। रेख परमान अति जान सन्मुख सुलप मिलि चलत लटकि गति ग्रीव

भ्रू भंगी ॥5॥ कोक संगीत अवघर सुघर लाड़िली अलग लागन लेत अनगति अनंगी। उपजि औरैं और रसिकवर सिरमौर रीझि रहे गहि ठौर सरस अंग अंगी ॥6॥ तहाँ सखी संखल निमेष अंकुस सकुच जीत गज वरैं मानौं मिलि मन मद मतंगी। बहुरि प्रिया पिय बिहँसत हँसत प्रेम घन भये मन मगन तन तरलित तरंगी ॥7॥ श्रीहरिदासी खरी बिपुल प्रेमनि भरी मननि लै अनुसरी अंकनि उछंगी। जै श्रीवरबिहारिनदासि कहत सुख सार सुजसु त्रैलोक सर्वोपरि सुमंगी ॥8॥17॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव

ज्येष्ठ कृष्णा २

प्रथम दिवस -	निकुञ्ज बिराजिये जू	(पृष्ठ 7 पर देखें)
द्वितीय दिवस -	रसभीने बिहारी मन हर्यौ	(पृष्ठ 18 पर देखें)
तृतीय दिवस -	स्यामा नागरी हो प्रबीन	(पृष्ठ 20 पर देखें)
चतुर्थ दिवस -	मोहन मोहिनी सुहेलरा गाऊँ	(पृष्ठ 10 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - पंचम दिवस राग -विलावल, मूलताल

मनुहारि करैं मनुहार लला।

श्रीराधा आराधि लला। यह निजु नेम आराधि लला ॥1॥
प्रेम करौ जिन बादि लला। पिय पग परसन की साधि लला ॥2॥
सुनि सुन्दिर सुकुँवारि लला। मानिनि मान निवारि लला ॥3॥★
बिनु अपराध न गारि लला। कोमल करहिं न टारि लला ॥4॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद- राग- पर्ज, ताल - धीमा तिताला

★ हो नेक मानिनी मान निवारिये।

यहै जानि जिय मान सयानी हो आई हौं समझि सँवारियै ॥

नैन चले च्वै वारि लला। पिय की प्रीति बिचारि लला ॥5॥
हौं तन मन धन दैहौं वारि लला। मम बचननि प्रतिपारि लला ॥6॥
इती करत कित आदि लला। अपने सुखहिं सँभारि लला ॥7॥
इहि रस मन अनुसारि लला। हौं आई सेज सँवारि लला ॥8॥
नव निकुञ्ज पग धारि लला। प्रीतम मुखहिं निहारि लला ॥9॥
सुन्दरि मुरि मुसिकाइ लला। स्याम सखी सुख पाइ लला ॥10॥
अद्भुत उक्ति उपाइ लला। इक कौतिक देखौ आइ लला ॥11॥
बतरस लीनी लाइ लला। फूली अंग न माइ लला ॥12॥
उदित मुदित म माहिं लला। चली अली गहि बाँह लला ॥13॥
नव दल सीतल छाँह लला। आपु निहोरी नाहु लला ॥14॥
ललित बलित द्रुम बेलि लला। सबै सँवारत केलि लला ॥15॥
बढ्यौ मदन मद मोद लला। बीथी बिपुन बिनोद लला ॥16॥
रबितनया के तीर लला। कोमल मलय समीर लला ॥17॥
अति आसक्त अधीर लला। बिनय निवारत चीर लला ॥18॥
चितवत बिबि मुख ओर लला। लोचन चारु चकोर लला ॥19॥
नित ही नवल किसोर लला। दोऊ नव जोबन जोर लला ॥20॥
मिलि मेंटी पिय की पीर लला। बिहरत प्रेम गंभीर लला ॥21॥
मिलि बिलसत निसि भोर लला। मेरे चित के चोर लला ॥22॥
छिन छिन पद प्रतिकूल लला। स्याम सहज अनुकूल लला ॥23॥
दै आलिंगन दान लला। मानिनि के धन मान लला ॥24॥

रुचि रुचिर नव कुञ्ज कुसुम पर सुरति सु समयौ सम्हारियै।
बिरह जु स्याम अधीर पीर अति आतुर पिय अँकवारियै ॥
मिलि रस रंग अंग अंग पिय संग सरस कुसुम सुकुमारियै।
श्रीबिहारिनदास सुख निरखि हरषि तृन तोरि प्रान धन वारियै ॥

दै अधरामृत पान लला। पालि प्रिया मम प्रान लला ॥25 ॥
अब जिन करहु निदान लला। सतरभौंह अपमान लला ॥26 ॥
गौरस्याम कौ संग लला। देखि दुहुन कौ रंग लला ॥27 ॥
रतिपति की गति पंग लला। मन अनुराग अभंग लला ॥28 ॥
इहि रस बस सुखरासि लला। जस गाइ बिहारिनदासि लला ॥29 ॥

ज्येष्ठ कृष्णा 2 को रात्रि में जागरण

ज्येष्ठ कृष्णा तृतीया : प्रातः काल

झूमका (पृष्ठ 26 पर देखें)

श्रीस्वामी रसिकेदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव

माघ शुक्ला 5

★ प्रथम दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद -

राग- बसन्त, ताल-धमार

कुञ्जबिहारी कौ बसन्त सखि चलहु न देखन जाहिं।
नव बन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माहिं॥
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली अंग न माहिं।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहिं छिरकत छैल छुवाहिं॥ 1 ॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

राग - गौरी, ताल-धमार

श्रीकुञ्जबिहारी हरषि बुलाई ह्याँ जो होड़ी हेली री।
काज करौ निजु आज हमारौ तू मेरी सुखद सहेली री ॥1 ॥
खेलत हे इक ठौर भोर मैं पूछी प्रेम पहेली री।
घाल मिलावो माँगत मत्त भई झुकि नेह नवेली री ॥2 ॥
हारी होड़ न देति लाड़िली छाँड़ि चली अवहेली री।
बैठी है मान गंभीर कुञ्ज नबजोवन गर्व गहेली री ॥3 ॥
मेरे मन रुचि राचि रही मोसों काल्हि भली बिधि खेली री।
मेरी इनकी जानत है सब तू मन मतै महेली री ॥4 ॥

बचन रचन सुनि चलि सहचरी (कै) आतुर तन तलबेली री।
भोरे भाइ आइ ढिंग बैठी जानत गटी गवेली री ॥5॥
देखि अनमनैं स्यास सखी सँग सुमिरि समौ कल केली री।
हारि मानि निज नाहु भये बस अंस बाहु हँसि मेली री ॥6॥
मेंरी रोंट अटक नटवर भेंटत भरि भुजनि सकेली री।
उमड़ि चले मन मदन मनोहर मान मेंड़ पग पेली री ॥7॥
मूलताल – स्याम तमाल रसाल लाड़िली गौर बरन बर बेली री।
कुञ्ज मंजु बर्षत पुहुपांजलि चंप गुलाब चमेली री ॥8॥
श्रीबिहारीबिहारिनदासि मिले सुखरासि रसिक रस झेली री।
रीझै देत दुलहिनी दूलहु फूलौ प्रेमसहेली री ॥9॥

द्वितीय दिवस

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं। कुञ्ज निकुञ्ज मंजु में झेलैं ॥
जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिहि बन चलि मिल केलैं।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा प्रेम परस्पर बूका बन्दन मेलैं ॥1॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद – राग –जैतश्री, ताल – धमा

तू ना करि मान मनोहर लाल लड़ावैगो।
छिन छिन मान अयान करहु न सयान समझि सुकुँवारी जू।
प्यारे पिय की पीर न जानत ब्याकुल बिरह बिहारी जू ॥1॥
आसन सैन सुहाइ न परस्यौ असन असन कर बीरा जू।
दरस परस की आस अवधि बदि हौं आई दै धीरा जू ॥2॥
सुन्दर सुघर उदार धीरवर होत बिलंव अधीरा जू।
बिनु श्रम हौं लै मिलऊँ लालहिं और निपट पथ नीरा जू ॥3॥
तनय हिये मन सुमत उठत भयौ मोहि अचंभौ भारी जू।
पिय तन पीठि दीठि मो तन हँसि पूछति कुँवरि कहाँरी जू ॥4॥

पिय के अंग संग अनुराग रमित श्रम आलस केलि बिसारी जू।
सदा समीप सुहाग नयो नित तू कबहूँ होत न न्यारी जू॥5॥
प्रेम अवधि तुव प्रानप्रिया सुनि मन संभ्रम उपजावै जू।
श्रवन सुनत नैनन देखत मुख बचन प्रतीति न आवै जू॥6॥
अंग अंग बसन दसन रसनावलि कटि तट चरननि चित्र बनावै जू।
कर कंकन दर्पन देखत मोहिं यहि कौतुक हँसि आवै जू॥7॥
मूलताल– सुनि सुनि समझि-समझि सखि बैननि नैन सैन जिय जानी जू।
सकुचति हँसति न चितवति इत उत लटकि लाल लपटानी जू॥8॥
मन कौ मन मन के मन सौं मिलि मगन भये तन लीना जू।
रस में रिस रिस में रस उपजत रसिक प्रवीन प्रवीना जू॥9॥
श्रीवृन्दाबिपिन बिलासनि बिलसत श्रीबिहारीदास पिय प्यारी जू।
रूठत तूठत सब सुख बूटत या रस की बलिहारी जू॥10॥

★ तृतीय दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद–

अबकैं बसन्त न्यारेई खेलैं काहू सौं मिलि न खेलैं री तेरी सौं।
टुचिते भये कछु न सचु पइयत तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं॥
देखैगी जो रँग उपजैगौ परस्पर राग रागनीन के फेरा फेरी सौं।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी राग ही में रंग उपजैगौ ऐरी सौं॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद–

राग – मारू, ताल–धमार

जय श्रीवृन्दावन बिराजैं, जहाँ नित बिहरैं श्रीरसिकराइ॥
झिलमिलि झिलिमिलि आसपास श्रीजमुना अति सोहै।
मिलि खेलैं दोउ जलाथला सखि देखि मेरौ मन मोहै॥1॥
सौरभ कन पुलिन रंग बिमल कमल फूले।
सारस हंस चकोर मोर मृदु कूजित कल कूले॥2॥
कुसुमति कल कुञ्ज लता बिबिध रंग फूली।
मत्त मुदित गुञ्जित अलि अवली फिरें भूली॥3॥

बहै सीतल मन्द सुगन्ध पवन सुक पिक सुर गावैं।
सुनि श्रवन रवनी रवन मदन मोद बढ़ावैं ॥4॥
बनी बीथी बिचित्र चित्रित धर प्रतिबिंबित झाईं।
मंडल मनिमय मौजमहल मुक्तनि छबि छाई ॥5॥
पुहुप बितानिनि झलमलै झरोखनि सहचरि दुलरावैं।
अति अद्‌भुत सुख सेज सरस लाड़िली लाल लड़ावैं ॥6॥
गौर सुभग साँवल सखि अंग अंगनि राजैं।
पहिरें पट पीत अरुन मौजनि छबि छाजैं ॥7॥
बिलोकत बिबि बदननि छबि हँसि हँसि उर लागैं।
बचन रचन कहैं प्रियाजू सौं लाल यहै रति मागैं ॥8॥
मूलताल - मन्द मन्द मधुरे मधुरे सप्त सुरनि गावैं।
तान तरंग भृकुटि भंग अँग अँग अनंग नचावैं ॥9॥
दोउ रूप उदित प्रेम मुदित मत्त मननि कर्षैं।
गुन रीझि सुरति अँग अँग हरषि सुखनि बरषैं ॥10॥
श्रीकुञ्जबिहारी-बिहारिनदासि सुख संतत करति खवासी।
नव नव रति छिन छिन प्रति सुख निरखि नागरीदासी ॥11॥

श्रीस्वामीजू कौ पद - चतुर्थ दिवस राग- बसन्त, ताल-अद्धा तिताला

(ए) रहौ रहौ बिहारीजू मेरी आँखिन में बूका मेलत कित अन्तर होत मुख अवलोकनि कौं। और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहति मिस कें पैयाँ लागौ पन पन कौं॥ गावत खेलत जो सुख उपजत सो तौ कोटि वर है तन कौ। श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख कहाँ पाइयत ऐसौ सुख मन कौ॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

हो हो रँगीली नागरी (पृष्ठ 19 पर देखें)

★ पंचम दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद-

बसन्त के पद

राग - बसन्त, ताल-चौताल

कुच गडुवा जोवन मौर कंचुकी बसन ढाँपि लै राख्यौ बसंत।
गुन मन्दिर रूप बगीचा में बैठी है मुख लसंत॥
कोटि काम लावन्य बिहारी जाहि देखत सब दुख नसंत।
ऐसे रसिक श्रीहरिदास के स्वामी तिनकौं भरन आईं मिलि हसंत॥1॥

राग- बसन्त, ताल - धमार

कुञ्जबिहारी कौ बसन्त सखि चलहु न देखन जाहिं।
नव बन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माहिं॥
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली अंग न माहिं।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहिं छिरकत छैल छुवाहिं॥2॥
चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं। कुञ्ज निकुञ्ज मंजु में झेलैं॥
जहाँ पंछिन सहित सखीन संग कोऊ तिहि बन चलि मिलि केलैं।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा प्रेम परस्पर बूका बन्दन मेलैं॥3॥
अबकैं बसन्त न्यारेई खेलैं काहू सों मिलि न खेलैं री तेरी सौं।
दुचिते भये कछू न सचु पइयत तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं॥
देखैगी जो रँग उपजैगौ परस्पर राग रागनीन के फेरा फेरी सौं।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुञ्जबिहारी राग ही में रंग उपजैगौ ऐरी सौं॥4॥

राग - बसन्त ताल - अद्ध तिताला

(ए) रहौ रहौ बिहारीजू मेरी आँखिन में बूका मेलत कित अन्तर होत मुख अवलोकनि कौं। और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहति मिस कें पैयाँ लागौ पन पन कौं॥ गावत खेलत जो सुख उपजत सो तौ कोटि वर है तन कौ। श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख कहाँ पाइयत ऐसौ सुख मन कौ॥5॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - राग - हमीर बसन्त, ताल-धमार

जै श्रीवृन्दावन आनँद न अंत। तहाँ श्रीस्यामा सन्तत बसंत॥
सब रितु राजत रसिक संग। ताके सुखदायक सब अँग अंग॥
उपजत तन अनन्त अनंग रंग। यों बिहरत अनुरागी अभंग॥
नख सिख रस श्रीमंत मंत। सखी प्रेम पुलकि कामिनी कंत॥
दोउ घन दामिनि ज्यों मिलि लसंत। हौं दिन दरसौं बिलसत हसंत॥
कनकलता कुसुमित रसाल। ताके लोभ सु अलि साँवल तमाल॥
जाके अधर बिंब सिंदूर भाल। भई बिपुल पुलक मनसा बिसाल॥
ललित बलित श्रीफल बिलास। जाके नव जौवन मंजरी सुबास॥
ताके अलक भृंग मधु गन्ध लोभ। अञ्चल चञ्चल चित छुवत छोभ॥
जङ्घ कदलि मृदु भुज मृणाल। ताके नीलोत्पल लोचन गुलाल॥
ताके चरन कमल कर कमल लाल। सखी प्रान जीवन मोहन मराल॥
मूलताल - रुचि रवनी कवनी किसोर। जानक नहिं निसि गत भये भोर॥
चितवत प्यारी बिधु बदन ओर। पिय पान करत लोचन चकोर॥
पुनि नाभि निरखि नागर गंभीर। अति ब्याकुल ह्वै बैठे अधीर॥
पुनि नीबीबंद अवलंब स्याम। सखी बचन रचन रिझवत सकाम॥
आतुर चातुर अति बड़ विनोद। सखी रहसि बहसि मन मदन मोद॥
दोऊ चाहि रहे दृग दृष्टि जोर। छोरत छबि कर छंद बंद निहोर॥
सुख आलिंगन चुंबन मिलाप। कूजित कोकिल कोमल अलाप॥
हार टूटि कल बलय फूटि। गये कसन कंचुकी चिकूर छूटि॥
आली बाली बर बिमल वारि। सेवति सींचति सुख मुख निहारि॥
दोउ सकत न बिबस बसन सँभारि। श्रीबिहारिनदासि हँसि हँसि सिंगारि॥6
चौताल - बिहरत राजरितु बनराइ। जहाँ नित उदित नव नव भाइ॥
रूपक - सहज कुसुम समूह नख-सिख सुन्दरी सुखदाइ।

लाल अलि आसक्त सौरभ मिलि बिलसि बिलसाइ॥
अंगराग पराग रँगे अंग पिय पीयूषै प्याइ।
मत्त घूमत नैन जुगबर सैन मैन नचाइ॥
सहज सरद बसन्त रितु रतिपति लियें ललचाइ।॥
देखि यह सुख जियें हम सब सुख दियें समुदाइ॥
या रसै सेवत न नीरस सरस कुकवि कहाइ।
सब रसन कौ राजरस या बिनु न हियौ सिराइ॥
सुनि समझि उपदेस श्रीहरिदासि दिन दुलराइ।
जै श्रीबरबिहारिनदासि बिपुल विनोद विसदिन गाइ॥7॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू के पद - राग-बसन्त, ताल-धमार

सजनी नव निकुञ्ज द्रुम फूले।
अलिकुल संकुल करत कुलाहल सौरभ मनमथ मूले॥
हरषि हिंडोरे रसिकरासि बर जुगल परस्पर झूले।
श्रीबीठलविपुल बिनोद देखि नभ देव बिमाननि भूले॥8॥

जुगलकिसोर मेरे कुञ्जबिहारी प्यारी बन बिहार बिहरत नवरंगा।
अरुन हरित मुकुलित द्रुम पल्लव अलिकुल कुञ्ज अनंग तरंगा॥
सोंधै बहुत अबीर अरगजा खेल परस्पर छिरकत अंगा।
श्रीबीठलविपुल बिनोद रीति रस सुख देखत ललितादिक संगा॥9॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

आजु बसन्त बन्यो सखि बन में।
फूल सौं लाल लड़ाइ लाड़िली खेलति मत्त मदन में॥
मूलताल - फूली लता ललितादिक देखति फूल बढ़ी तन मन में।
फूल सौं दासिबिहारिन गावति फूल के सुख सदन में॥10॥

श्रीस्वामी नगारीदेवजू कौ पद –

बिहरत बिपुन भरत रँग ढुरकी।
हरषि गुलाल उड़ाइ लाड़िली संपति कुसुमाकर की॥
कसूँभी सारी सौंधे भीनी ऊपर बन्दन भुरकी।
चोली नील ललित अञ्चल चल झलक उजागर उर की॥
मूलताल – मृदुल सुहास तरल दृग कुंडल मुख अलकावलि रुरकी।
श्रीनागरीदास केलि सुख सनी रही मैन ललक नहिं मुरकी॥11॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद – राग – हमीर, ताल – धमार

श्रीबिहारीजू खेलत बसन्त।
रँगभरी सब सखी बिराजति राधेजू रूप लसन्त॥
फूल्यौ जोवन मौर मञ्जरी अधर पान उलहन्त।
आयौ (आयौ) मदन मानौं सैन साजि कैं चँवर चिकुर ढुरन्त॥
छूटत मूक झूक सौरभ की नैन गुलाल उड़न्त।
कूजत मधुकर मञ्जीर कोकिला बाजे बजत अनन्त॥
मूलताल – मच्यौ है परस्पर खेल कटाक्षनि क्रीड़त भामिनि कन्त।
श्रीरसिकबिहारी कौ सुख निरखत धीरज कौन धरन्त॥

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद – राग – बसन्त, ताल – धमार

आयौ बसन्त मदन दल साजें दुहुँ दिसि ह्वै गई भीर।
अबीर गुलाल उड़त नैनन सों रस बिबस बिसरि गये चीर॥
मूलताल – खेलत हँसत हँसावत सब मिलि धरत नहीं मन धीर।
श्रीललितमोहिनी कौ सुख बाढ्यौ धन्य आजु दिन बीर॥13॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद – राग – बसन्त बहार, ताल – धमार

नवल दोउ आजु बसन्त से फूले।
गोरी किसोरी के अंस दियें भुज स्याम छिपें भुज मूले॥

सहज सिंगार अनंग के रंगनि सोहत पीत दुकूल।
रँग में रंग बढ़ावति लाड़िली लाल हिंडोरे से झूले॥
मूलताल – यह सुख नित्य दिखावत नागरी नाहु भये अनुकूल।
श्रीभगवतरसिक बिलोकत यह छवि नैन कुरंग से भूलें॥

श्रीरूपसखीजू कौ पद –
राग – बसंत बहार, ताल –तिताला

ललित नव ज़ोवन तेरौ री बाल।
पल्लव अधर उरज जुग श्रीफल फूले नैन बिसाल॥
मधुकर स्याम सुगंधनि लोभी बसत हिये पर माल।
रसिक रूप नागर नवरंगी अचवत परम रसाल॥15॥

श्रीगुरुदेवजू के पद–

सहज बसन्त कामिनी कंत। नित बिहरत मिलि इनहिं न अंत॥
फूले तमाल लता लपटंत। हँसत सुगन्ध जीवत सब जंत॥
श्रीबिचित्रबिहारिनिदासी कसंत। रस बरसति विपिन अँग सँग में मंत॥16

आजु बसन्त खेलत देखि।
बिपिन बसन सुरंग भूषन विविध वरन विसेखि॥
नैंन पुट भरि भरि प्रिया पिय आँनि उर अवरेखि।
जै श्रीवर बिहारिनदासि इहि सुख जन्म जीवन लेखि॥17॥

नवल वृन्दावन नवल बसन्त।
नव द्रुम बेलि केलि नव कुञ्जनि नवल कामिनी कन्त॥
नव अलि अलक झलक नव कोकिल नव सुर मिलि बिलसन्त।
नव रस रसिक बिहारिनदासि कैं नव आनन्दहिं न अन्त॥18॥

नवल बसन्त नवल वृन्दावन। नव परिमल अलि लुब्ध तरुनि तन॥
नव पराग अनुराग मगन मन। नव बिहार बलि दासि रसिक जन॥19॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद –

श्रीरसिक बिहारी प्यारी के सँग रस भीने खेलत बसंत।
रसभीनैं सब अंग बिराजत सोभा कौ नहिं अंत॥
रस सौं भीनी तनसुख सारी छबि की उठति तरंग।
रस भीनी सब सखी बिराजति सब अँग भरे रसरंग॥
रस की तान लेति नाना गति उपजत तान तरंग।
रस सौं भीनी सब द्रुम बेली सौरभ उड़त सुरंग॥
रसभीनैं सब पंछी बोलत रंग जु करत तरंग।
रस सौं भीनौं श्रीवृन्दाबन रस भरे भामिनी कंत॥
श्रीरसिकबिहारी रस बस कीने सोभा कौ नहिं अंत॥20॥

श्रीभगवतरसिकदेवजू के पद – राग – हमीर बसंत, ताल – धमार

पिय प्यारी सोहत हैं बसंत। दोऊ मदन मुदित भये सुरति अंत॥
कनकलता मृदु नवल बाल। लपटी मरकत मनि पिय तमाल॥
गौरस्याम सोभा विसाल। श्रम बूँदनि अतिसै रसाल॥
नव जोवन उलहो अँग अंग। किसलय दल कर अँगुरी सुरंग॥
परसत फल विमल उरज उतंग। मदपान करत कच कुटिल भृंग॥
विविध सुमन फूले सुवास। डोलनि मंजुल मारुत बिलास॥
बोलन कल कोकिल कीर पास। मनसिज बसकरंनी मन्द हास॥
ललितादिक सींचत प्रेम वारि। छबि पान करत लोचन निहारि॥
गावत भगवत जस अति उदार। यह नित नौतन रस बन बिहार॥21॥

यह छबि निरखिये नित नैन।
नवल नागर नागरी पर वारिये रति मैन॥
अधर मधु पीवत पिवावत तृपति नहिं दिन रैन।
प्रान पोषत परस्पर कहि कहि रसीले बैन॥

सहज सरद बसन्त सन्तत सहचरी उर ऐन।
ललित बलित बिचित्र द्रुमबेली सरस सुख दैन॥
प्रेम प्रीति प्रतीति छिन छिन बढ़त तन मन चैन।
रसिक भगवत माधुरी मुसिक्यान मन हरि लैन॥22॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव

मार्गशीर्ष कृष्णा 8

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ प्रथम दिवस ★

सुनि धुनि मुरली बन बाजै (पृष्ठ 40 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

श्रीकुञ्जबिहारी हरषि बुलाई (पृष्ठ 47 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ द्वितीय दिवस ★

जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी जू (पृष्ठ 40 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

तू ना करि मान मनोहर (पृष्ठ 48 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ तृतीय दिवस ★

यह कौन बात जू अबहीं और अबहीं और (पृष्ठ 40 पर देखें)

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद -

जय श्रीवृन्दावन बिराजैं (पृष्ठ 49 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ चतुर्थ दिवस ★

बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि (पृष्ठ 41 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

मनुहारि करैं मनुहार लला (पृष्ठ 45 पर देखें)

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव

माघ कृष्णा 11

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ प्रथम दिवस ★

कुञ्जबिहारी कौ बसन्त (पृष्ठ 51 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

निकुञ्ज बिराजिये जू (पृष्ठ 7 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ द्वितीय दिवस ★

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं (पृष्ठ 51 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

चलौ जू कौतुक देखन जाहिं (पृष्ठ 9 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ तृतीय दिवस ★

अबकें बसन्त न्यारेई खेलैं (पृष्ठ 51 पर देखें)

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद -

(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेत (पृष्ठ 12 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद - ★ चतुर्थ दिवस ★

(ए) रहौ रहौ बिहारी जू (पृष्ठ 51 पर देखें)

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

मोहन मोहिनी सुलेहरा गाऊँ (पृष्ठ 10 पर देखें)

(रात्रि में जागरण)

श्रीगुरुदेवजू के पद - राग -दरबारी कान्हरौ, ताल - धमार

जे जन मन क्रम बचन चरन रज सेवत हित नित श्रीहरिदासै।
प्रेम भक्ति उपजत ताही छिन पाप ताप अवगुन गति नासै॥
कञ्चन जिमि बपु धातु परसि रस पलटि रूप मिलवत सुखरासै।
जैसे दियो है प्रसाद प्रकट करुना करि श्रीकुञ्जबिहारीबिहारिनिदासै॥1॥

जे कोउ गुरु गोविन्द नाम गुन गावत गुनत विचार विचारि।
सेवत सहज सदा वृन्दाबन मन क्रम बचन चरन चित धारि॥
पाये सुख न गये आतुरता सम्पति विपति एक उनिहारि।
अहङ्कार ममता के औगुन छाँड़ि सकल स्वारथ दुःखदारि॥
कबहूँ काल न ख्याल करत डर भूलि न तिन तन्न सकत निहारि।
कहि न सकत निसंक सुदृढ़ भक्त सों माया रही लटी है हारि॥
निर्भय भये गये भय्र तम तरि संगी सस्त्र रहे कर डारि।
श्रीबिहारिनदास यामें भ्रम नाहीं बेद पुराननि कह्यौ पुकारि॥2॥

श्रीस्वामीजू के पद – राग– कान्हरौ, ताल – धमार

माई (री) सहज जोरी प्रकट भई जू रंग की गौर–स्याम घन दामिनि जैसें।
प्रथमहु हुती अबहूँ आगे हूँ रहि हैं न टरि हैं तैसें॥
अंग अंग की उजराई सुघराई सुन्दरता ऐसें।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी समवैस वैसें॥3॥

जोरी बिचित्र बनाई री माई काहू मन के हरन कौं।
चितवत दृष्टि टरत नहिं इत उत मन बच क्रम याही संग भरन कौं॥
ज्यौं घन दामिनि संग रहत नित बिछुरत नाहिंन और बरन कौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी न टरन कौं॥4॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद–

जोरी बिचित्र बिराजत रंगनि अंगनि में नव नव छबि छाई।
भूषन सुरंग रगमगे बागे लागे उर बिलसत सुखदाई॥
मन्द हँसनि मधुरी बातिन में मगन भये सहचरि बलि जाई।
रूप रुचिर बर बिहरत चोज मनोजनि में अति सरसाई॥5॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद –

आज फूल अँग अँग न समाती।
छबि सों छोर स्याम कटि पट इत गोरे गात छूट गई गाती ॥
नीबी नाभि निरखि बन्द ही बन्द मिलवत कर मानिनि मुसिक्याती।
श्रीबिहारिनिदास स्वामिनी (स्याम) सुरत रस बिबस भये बिलसत थिर थाती ॥6॥

श्रीस्वामीजू के पद – राग – कान्हरौ, ताल – ध्रुपद

रुचि के प्रकास परस्पर खेलन लागे।
राग रागिनी अलौकिक उपजत नृत्य संगीत अलग लाग लागे ॥
राग ही में रंग रह्यौ रँग के समुद्र में ये दोऊ झागे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी पै रँग रह्यौ रस ही में पागे ॥7॥

ऐसे ही देखत रहौं जनम सुफल करि मानौं।
प्यारे की भाँवती भाँवती के (प्रान) प्यारे जुगलकिसोरहि जानौं ॥
छिन न टरौं पल होहुँ न इत उत रहौं एक ही तानौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी मन रानौं ॥8॥

प्यारीजू जैंसे तेरी आँखिन में हौं अपनपौ देखत हौं ऐसे तुम देखत हौ
कैधौं नाहीं। हौं तोसौं कहौं प्यारे आँखि मूँदि रहौं तौ लाल निकसि कहाँ
जाहीं ॥ मोकौं निकसिबे कौ ठौर बतावौ साँची कहौ बलि जाऊँ लागौं पाँही।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा तुमहीं देख्यौ चाहत और सुख लागत काहीं ॥9॥

राग – अड़ानो, ताल – ध्रुपद

इत उत काहे कौं सिधारति आँखिन आगैं ही तू आव।
प्रीति कौ हित हौतों तेरौ जानौ तू ऐसोई राखि सुभाव ॥

अमृत से बचन जिय की प्रकृति सों मिलि ऐसोई दै दाव।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कहत री प्यारी तू प्रीति कौ मंगल गाव ॥10॥
बात तो कहत कहि गई (अब) कठिन परी (हो) बिहारी।
प्रान तो नाहिंनें तन अस्त-बिस्त भये कहैं कहा हो प्यारी॥
भाँवते की प्रकृति देखत जो श्रम भयौ बहुत हियारी।
श्रीहरिदास के स्वमीस्यामा (कुञ्जबिहारी) बाहुसों बाहु मिलाइरहे मुख निहारी ॥11

राग – सिहानो, ताल – अद्धा तिताला

हरि कौ ऐसौई सब खेल।
मृग तृष्णा जग व्यापि रह्यौ है कहूँ बिजौरो न बेल॥
धनमद जोवनमद राजमद ज्यौं पंछिन में डेल।
कहैं श्रीहरिदास यहै जिय जानौ तीरथ को सो मोल॥12॥

श्रीगुरुदेवजू के पद –

हरि बिन कौंन सुखन कौ दाता।
सबै स्वारथी सहाइ न कोऊ बन्धु पिता सुत माता॥
तुम निरपेच्छ निबाहत सब दिन पूरन त्रिभुवन त्राता।
तुमसे प्रभु तजि अनत करत रति ते पसु प्राननि घाता॥
तुम उदार सुकुमार सहज सुन्दरवर मुरि मुसिक्याता।
श्रीबिहारिनिदास छबि निरखि मनोहर गौरस्याम रँग राता॥13॥

स्याम तन मन गोरे गात में गसत री।
यद्यपि हुती न न्यारी कहत हा हा री प्यारी बिचित्र बिहारी बंद बाहु सौं कसत री। प्राननि सों प्रान सीर बाँटत होत अधीर एक ही सुर स्वास बिस्वास ह्वै हँसत री॥ श्रीबिहारिनदास रोम रोमनि कहाँ लौं ब्यौरौ तापता की मौज अति ताहू सों लसत री। चोली सी अमोली प्रीति ऐसे सुख में समीत स्याम तन मन गोरे गात में गसत री॥14॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद – राग– विहाग, ताल – अद्धा तिताला

लालन तेरेई आधीन।

सुनि री सखी हौं साँचि कहति हौं तुम जल ये हैं मीन॥
तेरे रस बस स्याम सुन्दरवर जावत हैं ज्यौं दीन।
श्रीबीठलविपुल विनोद बिहारी होत मनावत लीन॥15॥

श्रीस्वामीजू कौ पद – राग – विहाग, ताल – ध्रुपद

स्यामा प्यारी आगें चलि आगें चलि गहवर बन भीतर (मेरी आली) जहाँ बोलै कोयल री। अति ही बिचित्र फूल पत्रनि की सिज्या रची रुचिर सँवारी तहाँ तुव सोयल री॥ छिन छिन पल पल तेरीयै कहानी तुव मग जोयल री। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कहत छबीलो कामरस (मेरी आली) भोयल री॥16॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद –

(सुख) सेज पौढी भामिनी रसिक लाल के अंग संग।
सुरत रंग वर चपल अंग अंग लज्जित नव घन दामिनी॥
सुन्दरता की रासि किसोरी नहिं उपमा कौ कामिनी।
श्रीबीठलबिपुलविनोद बिहारी सौं मिलि यहि रस बिलसत जामिनी॥17॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद –

अलबेली अलक झलक आनन (अति) अलकलड़ी सुख देत। अलबेली अँखियन पल नहीं लागत अलबेली बतियन मुसिकति मन हरि लेत॥ अलबेली चाल चलत अलबेली अलबेली तानन मान समेत। श्रीसरसदास अलबेले लाल वारत मन छिन छिन कहि न परत छबि जेत॥18॥

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद –

पिय पियरी सेज बनाई आज।

पियरी झलक चमक सब पियारी पियरे बसन बनै सब काज॥

पियरे फूल बनैं सब तन में पियरी सोभा सहज समाज।
श्रीललितमोहनी यह सुख देखत स्याम तनै पियरे सब साज॥19॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद - राग - विहाग, ताल - धमार

एक बात कहौं श्रवन लगि चित दै सुनहु पियारी।
सुभग फूल फूले श्रीवृन्दावन तैसीये सरद उजियारी॥
चलि राधे अन्तर सुख लूटैं सखी रहैं सब न्यारी।
मोहि तोहि जहाँ अपनपौ भूलैं रहि है न सुरति सँभारी॥
जहाँ न खरकौ होय पंछी कौ यों दुरि कहत बिहारी।
श्रीनरहरिदासि पिय मन की जानी आगे सेज सँवारी॥20॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू के पद -

प्यारी मान न कीजै ऐसे रसीले स्याम सौं।
तुम तौ हो लालन की अँखियाँ बँधे हैं तिहारे दाम सौं॥
बिन आगस जिय दोष धरति हौ निरखि आपुसी बाम सौं।
श्रीरसिकबिहारिनि जानि अपनपौ बिहँसि मिलीं पिय धाम सौं॥21॥

तिहारौ तौ पर्‌यौ है मान कौ सुभाव।
तुम्हरी खोट कै इनकी कहियत कौन करै यह न्याव॥
ये तो तिहारे रूप रस लोभी मुख जोवत दिन जाव।
छिन में रस बेरस करि डारत को पकरै कर बाव॥
समझि देखि राधे मन माहीं बिन पानी की नाव।
श्रीरसिकबिहारी रस बस कीने अपने अपने दाव ॥22॥

श्रीस्वामीजू कौ पद - राग - विहाग, ताल - अद्धा तिताला

जो कछु कहत लाड़िलौ लाड़िली जू सुनिये कान दै।
जो पिय उपजत सो तिहारेई हित की कहति हौं आन दै॥

मोहि न पत्याहु तौ छाती टकटोरि देखौ पान दै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी जाचक कौं दान दै ॥23॥

श्रीगुरुदेवजू के पद -

स्यामा मेरी आँखिन कौ गहनौं।
अंजन मंजन कै मनि कुन्दन फुन्दन ह्वै नियरे रहनौं।
कबहूँ कर कण्ठ धरौं कबहूँ उप संपुट में न कहूँ कहनौं॥
श्रीबिहारिनिदासि जराव जर्‌यौ जुग प्रेम पुहाइ लियौ लहनौं।
पहिरौं कि धरौं न डरौं दिन देखत आँखिन कौ गहनौं॥24॥

मनावत लाल री मानिनी मान किये न बनै।
तूही तुही करै तोहि हृदै धरै तेरे गुननि गनै॥
तन सौं तन मन सौं मन मिलि प्रान सौं प्रान सनै।
श्रीबिहारिनिदासि कौ मान कह्यौ सो लह्यौ सुख अपने सींच स्याम सजनै॥25॥

श्रीस्वामीजू के पद - राग - सोरठ, ताल - ध्रुपद

सोइ तो बचन मोसौं मानि तैं मेरौ लाल मोह्यो री साँवरौ।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज महल में सुबस बसौ यह गाँवरौ॥
नव नव लाड़ लड़ाइ लाड़िली नहिं नहिं यह ब्रज जाँवरौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी पै वारौंगी मालती भाँवरौ॥26॥

चलि सखि कुञ्जबिहारी सौं मिलि चित दै देखैं उनकी भाँवती।
सुन्दर सौं सुन्दरि मिल खेलत कैसे (हैं) धौं गावती॥
औचक आइ परी सखी तहाँ पिय पै पाँइ चँपावती।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी सौं मिलि पौढ़ी तन मन रावती॥27॥

श्रीगुरुदेवजू के पद - राग - सोरठ, ताल - अद्धा तिताल

विहरत (वन) नव नव रंग राजत कुञ्ज रवन रवनी।
कंठ लाड़ति लालन के मानिनि मन भवनी॥

कबहुँक झुकि झाँपति अञ्चल मुख चञ्चल उर अवनी।
नाहु बाहु गहि बदन बिलोकत बिहँसि वचन चवनी॥
लाल प्रसंसि लगत छिन छिन पग छाँड़िये हठ ठवनी।
श्रीबिहारिनिदासि हिलमिल खेलौ सुखदानि कुँवरि कवनी॥28॥

रसिकवर बन बोली चलि आली।
नव निकुञ्ज नायक मनमोहन तू नवजोवन वाली॥
सुनहु सुघर सुर ज्ञान सिरौमनि बात कहत कित ठाली।
इत आसक्त अधीर उतै वे आतुर करत उताली॥
श्रीबिहारिनिदासि सहचरि संग लै चली आली प्रीति प्रतिपाली।
राख्यौ पन उनकौ मन दोऊ बीच मिले बनमाली॥29॥

श्रीस्वामीजू कौ पद –

प्यारी अब सोय गई।

ज्यौं ज्यौं जगावत त्यौं त्यौं नहिं जागत प्रेम रस पान करि भोय गई॥ जागत होइ तौ जगाऊँ प्यारी तातेव परम सचु रस ही रसिक रस बोइ गई। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा उठिकें गरे लगाई नवल प्रीति सौं नौंइ गई॥30॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद –

प्यारे दोऊ परम सुख में परे।
चाहत यही हम रहि हैं ऐसें प्रान सों प्रान अरे॥
मन में हरषि सिहाते हँसि हँसि उमगि उमगि अंकौं भरे।
श्रीहरिदास रसिक की जीवन सहज हिय में ढरे॥31॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू के पद –

कुञ्जनि पधारौ प्यारी रंग भरी रैन।
रंगभरी दुलहिन रंगभरे पिया स्यामसुन्दर सुख दैन॥

रंगभरी सेज रची फूलन की रंग भर्‍यौ उलहत मैन।
श्रीरसिकबिहारी पिय प्यारी दोऊ करहु सेज सुख सैन ॥32॥

सखी री पौढ़न कौ समयो भयौ।
इत आई द्रुम की परिछांहीं उत ढुरि चन्द गयौ॥
उमगि ढुरे दोऊ सुरंग सेज पर बाढ्यौ रंग नयो।
रसिकबिहारिबिहारिन पौढ़े यह सुख दृगन लह्यौ ॥33॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद -

दोऊ सुरति सेज सुख सोये।
करत पान मकरन्द प्रिया पिय अधर(पाँन) रस भोये॥
तन सौं तन मन सौ। मन मिलवत मदन मान सब खोये।
श्रीनरहरिदासी सुखनिधि बिलसत नैन कमल मुख जोये ॥34॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद -

पौढ़े दोऊ ललित लतान तरे।
सुमन सेज सुखरासि सनेही अधरनि अधर धरे॥
उरजनि उरज जोर कटि सों कटि लपटि भुजान भरे।
यहि रस मत्त मगन मन सोये भगवत व्यजन करे ॥35॥

सुरति सुख सोये स्यामास्याम।
गल भुज दियें परस्पर दोऊ अँग अँग अभिराम॥
तन मन अरुझि रहे सुरझत नहिं जामिनि तीजे जाम।
श्रीभगवतरसिक पलोटत पाँयन सहचरि सब सुख धाम ॥36॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

राग - परज, ताल - धीमा तिताला

राजत रंगभरे रनि नैना उनींदे री सोभा देत।
सकुचि सकुचि विगसत सखि अरुन असित सेत॥
मानहु अम्बुज पर जुग पुतरी अटके अलि संकेत।
अति रसलुब्ध तजि न सकत हँसत सुरत हेत॥

सब सुख सूचत अति अनुरागे जागे स्याम समेत।
श्रीबिहारिनिदासि अँग अंग मनोहर मन हरि लेत ॥27 ॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद-

लेत परस्पर अंग सुवास।
मनहि तरंग उठत मनमथ की और न कछू प्रकास॥
रोम रोम तन यह सुख बिलसत भोजन भूख न प्यास।
श्रीरसिकबिहारी(जू) मगन रहत नित सहत न खटक उसास ॥38 ॥

श्रीगुरुदेवजू के पद-

राग – खम्माच, ताल – चौताल

श्रीवृन्दावन बीथिन में जमुना पुलिन बीच नित्य कौ बिहार श्रीबिहारिनिदास पायौ है। लाल अलबेलौ अलबेली संग बनी बधू करन काम की केलि कुञ्ज बसायौ है॥ बोलनि हँसनि मिलि खेलत रसीली प्रिया ललित रसीलौ लाल कंठ लै लगायौ है। निकट खवासी निजु दासी लियें बीरी कर जुगल लड़ैती रीझि रंग बरसायौ है॥39 ॥

सोनौ सो स्याम गढ़ावत हौ मन प्रान दियें दृग दृष्टि उहाँई।
चम्पे की माल गरे पियरी पहुँची कर पियरेइ पाट पुहाई॥
पियरे पट केसर खौर खुली पियरी झलकैं अँग अंग सुहाई।
प्रानप्रियाजू की प्रेम की बात श्रीबिहारिनिदासि कही मुँह आई॥40 ॥

श्रीस्वामीजू कौ पद-

राग – जैजैवन्ती, ताल – धमार

रोम रोम रसना जो होती तऊ तेरे गुन न बखाने (री) जात।
कहा कहौं एक जीभ सखी री बात की बात बात॥
भानु श्रमित और ससि हू श्रमित भये और जुवति जात।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी तू राखति प्रान जात॥41 ॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद-

मेरी गति तुहि है लड़ैती प्रानप्यारी जू।

भई है प्रसन्न राधे हित हू को हित जानै सकल गुन निधान परम उदारी जू॥ सहज सनेह दोऊ रूप ही कौ रस पीवैं उमँगि उमँगि अंसनि भुज धारी जू। ललित रसिक वर सदा ही समीप रहैं मिलत मिल्यौई चाहैं जीवन हमारी जू॥42॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - सहेली, ताल - कहरवा

सहेली मेरो लाल बिहारी ऐसो रगमग्यौ (जै) श्रीवृन्दावन को री चन्द।
जाके दरस परस सुख पाइये मन उपजत अति आनन्द॥1॥
नखसिख रसिक सु रस भर्‌यौ मो प्रानप्रिया के रंग।
मो बिन नैकु न रहि सकै बिहरत अनुराग अभंग॥2॥
अवधि प्रेम की साँवरो मिलि करत नई नित केलि।
या रस ते नेकु न टरैं हम दोऊ नवल नवेलि॥3॥
तोतें कछु न दुहराइहौं सखि तू मेरे हित प्रान।
तैं मेरे रस बस कियौ बर सुन्दर सुघर सुजान॥4॥
तोहिं सुन्यौ भावत भटू रुचि आछे मन की दौर।
तोसौं छिन छिन मन मिलै हौं बहुत कहौंगी और॥5॥
श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों राजत जमुना के फेर।
कुञ्ज कुञ्ज अलि गुञ्जहीं मानौं सदन मदन के मेर॥6॥
इक दिन अति आतुर मिल्यौ नव चम्पक कुञ्ज किसोर।
तन मन की मोसौं सब कही सखि याकी प्रीति न थोर॥7॥
जित जित हौं तितही चलै तित आपुन हू चलि जाइ।
तितहीं मोहूँ लै चलै कछु आनँद कह्यौ न जाइ॥8॥

कुञ्ज कुञ्ज कौतिक घनौं लै तहीं तहीं बिरमाइ।
ता छिन तें ता ठौर तें सखि आगे चल्यौ न जाइ ॥9॥
जल थल कुञ्ज पुलिन बन घन रंग रह्यौ भरि कह्यौ न जाइ।
सब पंछी द्रुम तृन जलनि अलि कमलनि चलत डुलाइ ॥10॥
मेरे मन के आगे ही फिरै अति सम्पति सहित सुहाइ।
जब चाहौं ताही समै रति तैसिये ह्वै मिलि जाइ ॥11॥
श्रीवृन्दावन जो सु कृपा करैं तौ निज सुख मनहि समाइ।
हम इनहीं की आस अनत सुख सपनें हू न सुहाइ ॥12॥
लालरतन मनि मुक्तामय तरु ललितै लता उदार।
स्यामै सेवत नित नये फल फूल प्रेम के भार ॥13॥
नारिकेलि नव नारंगी सत अम्ब मौर बहु ठौर।
देखत शोभा बन घनौं रस रीझि रह्यौ सिरमौर ॥14॥
श्रीवृन्दावन जब देखौं तबहीं नयौ नित लेत प्रेम उपजाइ।
या रंग रस में मन झूमही तौ भूलि पाछिलौ जाइ ॥15॥
जा दिन तूँ पाछे रही मोहिं मिल्यौ सामुहौं आइ।
मोहिं अकेली देखि कें कछु सुख ही में सुख पाइ ॥16॥
तब पूछी संग की कहाँ मैं उत्तर दीयौ बनाइ।
नवकुन्दन की कुञ्ज कौ तैं पतौ मिलायौ आइ ॥17॥
तब सुनि सखि दूनौ भयौ मन फूल्यौ अंग न समाइ।
तो तन चितै चितै हँसि मेरे पाँइन पर्‌यौ लड़ाइ ॥18॥
तब मेरौ मुख चूम्यौ माथै चूम्यौ और चूमे नैन कपोल।
तेरे देखत सब भयो यों कह्यौ लियो बिन मोल ॥19॥

इक दिन नवल निकुञ्ज तें नटु रह्यौ लता सौं लागि।
हौं फूलन के ख्याल ही मोहिं मिल्यौ मदन मद जागि ॥20॥
ताकी बातनि और न पाइये अति गावत सुघर सुदेस।
खेलत छिन छिन ख्याल में मोहिं मिल्यौ मनोहर बेस॥21॥
गुनगन रूप अचागरौ अति चञ्चल अँग अंग।
कोक मनौं मुख ही पढ़्यौ तन उपजत अनंत अनंग॥22॥
तब मेरौ हाथ छियौ हियौ छियौ पुनि कर परसि कपोल।
चितवत ही चितवित हरयौ मेरे सुनत मधुर मृदु बोल॥23॥
इक दिन कालिन्दी के कूल ही ठाढ़ौ ललिता के संग।
तैं मोसौं तबहीं कह्यौ यह तेरेई रस रंग॥24॥
तूँ कछु उनहीं मिलावती मोसौं करत सैन की बात।
मेरी सी मोसौं कहै उनकी पुजवति सब घात॥25॥
प्यारीजू तुम हम सौं ऐसी कहौ तेरे पिय के प्रेम अवेस।
तेरे मन कौ भामतौ मिलि करि रमत सुदेस॥26॥
प्यारीजू हम साँझ समै साँझ कहैं (और) भोर सौं भोर।
बात कहौ सो समझिये पै मन कौ ओर न छोर॥27॥
सखि तू जानत सब दिन की सबै घट नटनागर की बात।
कौतिक नित नये करै बहु निपुन कला सत सात॥28॥
अजू तुम मिले सयाने चतुरई बिच भोरी हूँ दै दै जात।
मेरौ यहै सहज सदा सुख देखत सुनत न अघात॥29॥
मोहन सौं मुख की कछु कहि आवै पै जिय ते निकसि न जाइ।
सब दिन यह सुख जीजिये नेंकु तुम सौं कहत लड़ाइ॥30॥

भावत सबही भाँवतौ सुनि तेरे सुख संतोष।
तेरे सुखतेई सुखी अरु है समरथ सब घोष॥31॥
(सखि) इकदिन हौं जमुना जल न्हात ही मैं देख्यौ बनमें जात।
ना जानौं कित ह्वै मिल्यौ हौं चौंकि परी सब गात॥32॥
केस कुसुम बैनी सिथिल गई जलजमनि माला टूटि।
करनफूल खुटिला खुले कंचुकि नीबी बन्द छूटि॥33॥
सादौ भेष उताइलौ फिर सच्यौ आपने हाथ।
बैनी गुहत कछू कह्यौ मोहिं राखि आपने साथ॥34॥
सखि तोहू सों न जनावहीं मोसों हरुवे हाहा खात।
नेंक निकट ही ओट होत तब तोही सों बिललात॥35॥
प्यारीजू तुम इनहीं कौ कह्यौ करौ कछु हौं तौ नहीं अनखात।
भीर परै जो साँकरें कछु हौं सँग तते नहिं जात॥36॥
तुम्हरी इनकी अटपटी एकौ जानी नहिं जाइ।
अनजानत हूँ जानिये पै प्रेम न बरन्यौ जाइ॥37॥
प्रेमै आहि कहै कोऊ यह सुख दुख लाभ कि हानि।
रिसही में हाँसी आवै हौं कहत नहीं कछु बानि॥38॥
सखि तोते अधिक न जानिहौं कोउ कहै तो लागौं पाँइ।
मेरे मन संसै रहै मोसौं तू कहि दाव उपाइ॥39॥
प्यारीजू तुम मेरौ कह्यौ करौ ये कहैं सो कीजै बेगि।
सखि तेरौ कह्यौ कहा करौं यह लावनि भर्‌यौ अनेगि॥40॥
मोहन करिहो कहा सु कीजिये यों सुनत भयौ चित चाव।
जगत बिदित हमहूँ सुन्यौ तू रसिक रँगीलौ राव॥41॥

प्यारीजू तेरे बरन बसन करौं तन तेरेई उनिहार।
तेरी सी बातें लगें कहि जीवत बदन निहार ॥42॥

तौलों चलौं मिलौं तोही लौं तौ पहिचानिहै न कोइ।
मिले मिलाये रंग रहै तौ खेल चौगुनौ होइ ॥43॥

मोहन आहि भली जो ह्वै आवै तौ मिलौ सखिन सों जाइ।
बहुर्यौ मिलिहैं कुञ्ज में लियो जलहू कौ सुख पाइ ॥44॥

तब निकट सुनत ही सहचरी फिर चितयो नैन बिसाल।
मनिचूरा चौकी चुरी दै राती बैंदी भाल ॥45॥

सखि देखत है याकौं मतौ यह याकी टेब न जाइ।
बरजत की बरजत हठि आयो फोंदा फूली बनाइ ॥46॥

तब लाल सकुचि ठाढ़ौ भयौ कछु रूप न बरन्यौ जाइ।
चितै चितै मुख साँवरौ तन उपजत अगनित भाइ ॥47॥

तन मन प्रान पलटि परे लीनें उर सों उर लाइ।
रस बस भये न जानहीं निसि बासर गयो बिहाइ ॥48॥

सखि तेरे सँग सुख पाइये सब तेरौ कियौ सहाइ।
सुरति रंग में रँग रह्यौ रस रीझि रह्यौ गहि पाइ ॥49॥

सुन्दरि तेरी कृपा कहा कहौं यह रस जस प्रेम प्रकासि।
बलि बलि श्रीहरिदास की जिन करी (है) बिहारिनिदासि ॥50॥43

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - राग - ललित, ताल -धीमा तित

जागे री जाने क्यों मन मानै।
झगरत जुरत किसोरकिसोरी बड़े भोर में बतबतात उनमानै॥
ओढ़े उलटि बसन सम्भ्रम निसि पलटि लेत पहिचानै।

श्रीबिहारिनिदासि दम्पति कौ सुख निरखत
हरषत सखी वारत तन मन प्रानै ॥44॥

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद–

जागौ जी जागौ भोर भयौ।
आलस खोलौ श्रीमुख बोलौ अब जिन करौ ऐसो हियौ॥
मान कियें न बनै मम जीवन या रस बस हौं जियौ।
श्रीललितमोहिनी यों समुझावत करियै जू इनकौ कह्यौ ॥45॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद –

यों हँसि हँसि कहत हैं बात सुन तिन बातनि हूँ न पत्यात।
कोमल करन सों मुख मूँदि राखत श्रवननि तन न जात॥
बचन रचन बनत नाहिन पुलकित (है) सब गात।
श्रीबिहारिनिदास के नैननि में सुख सैननि लटपटात ॥46॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद –

नैन घूमत हैं मद छाके।
जगे जम्हात सिथिल पट भूषन सुख सन्तोष न थाके॥
पलकनि पीक अधर अञ्जन रद छद कपोल ललना के।
श्रीभगवतरसिक पौंछि अञ्चल मुख प्यावत अधर सुधा के॥47॥

श्रीस्वामीजू के पद – राग – भैरौं, ताल – ध्रुपद

प्रियापिय के उठिबे की छबि बरनी न जाइ सब तें न्यारे। मानौं द्यौस रैन इकठौर सोये ना भये न्यारे॥ बार लटपटे मानौं भँवर जूथ लरत परस्पर कमलदलनि पर खञ्जरीट सोभा न्यारे। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारीबिहारिन उपर कोटि कोटि अनंग कोटि ब्रह्माण्ड वारि किये न्यारे ॥48॥

प्यारीजू बोलत नहीं कै तू सोवत उनीदी कैधौं काहू कछु कह्यौ कै तो
ऐसौई सुभाव। मोहि तेरे देखे बिन कल न परै (री) कै तू छाँड़ि कुभाव।
काहू की झुक हमै देत (है) री उपजत दुभाव। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम
कहत ताके बस परे प्रगटत जु भाव ॥49॥

आलस भीजे री नैन जँभाति आछी भाँति सुदेस। कर सौं कर टेक
अँगुरिन पेच मानौं ससि मंडल बैठ्यौ अति भाँति सुदेस॥ मन के हरिबे कौं
और सुख नाहिनें कोऊ प्यारी नख सिख भाँति सुदेस। श्रीहरिदास के स्वामी
स्यामा कुञ्जबिहारी छाती सों छाती लगायें अँग अंग सुदेस ॥50॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद -

आवनि कुञ्ज तें पहपीरी।
प्रिया जँभाति कर जोरि रसमसी ललन खवावत बीरी॥
सुरत श्रमित अँग अंग सिथिल अति भुज भरि स्याम रसीरी।
श्रीबीठलबिपुल विनोद करत मिलि नहिं ललितादिक नीरी ॥51॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद -

मुख पट ओट न कर री प्यारी।
काहे को झूठिये झुक झुकति रसिकनी कहत हैं रसिकबिहारी॥
तू जो इतौ हठ करति चतुर प्रिया रति के चिह्न देखियत निहारी।
नवकिसोरै मिलि किसोरी मान तजि श्रीबिहारिनिदास बलिहारी ॥52॥

श्रीस्वामीजू कौ पद-

स्यामा स्याम आवत कुञ्जमहल तें रगमगे रगमगे। मरगजी बनमाल
सिथिल कटि किंकिनी अरुन नैंन चारौ जाम जगे॥ सब सखी सुघराई गावत
बीन बजावत सब सुख मिलि संगीत पगे। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम
कुञ्जबिहारी की कटाक्षि सों कोटि काम दगे ॥53॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

राग - चर्चरी, ताल - चौताल

रगमगे अंग अंग संग राजैं रसिक सुरति रंग जागे निसि नवल नेह सुन्दर सुखदाई। कबरी कुसुम सिथिल अलक अञ्जन अधर पीक पलक बदन झलक ललित ललक ललना लाल लड़ाई॥ हँसि हँसि मृदु कहत बैन नैन सैननि मुदित मैन मोहत मन रीझि लै सखि आरसी दिखाई। दासि श्रीनागरि नवेलि विहरत भुज कंठमेलि नव निकुञ्ज सुखद केलि करत हैं मनभाई॥54॥

लटपटात गात गलित लाड़िलीलाल हँसत लसत भुजनि कसत काम नैनति नेह निहारैं। एक ही सुर स्वास सैन विहरत वर विचित्र बैन अधर सुधा सहज सुन्दर पियत मधुर धारैं॥ छाके रसमत्त मगन अँग अंग अनुराग सघन वरबिहारिनिदासि लै उर सेवत श्रम निवारैं। बलि बलि (नव) नागरीदास श्रीकुञ्जबिहारी सुख की रास रीझ ललित श्रीहरिदास तन मन धन वारैं॥55॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद -

प्रातही किसोर जोरि कुञ्ज केलिनी।

अँग अंग गुन तरंग गौर स्याम रूपरासि मदन केलि सुरत सिन्धु पुलकि झेलिनी॥ तरनिनन्दिंनी सुतीर गावत निक भृंग कीर तृगुन मरुत माधुरी श्रमम्बु पेलिनी। वर बिहार शजनी सुनूपुरादि बाजिनी श्रीबीठलविपुल वारनें भुज कण्ठमेलिनी॥56॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद-

करत केलि कुञ्ज कुञ्ज कुँवरि कामिनी।

अद्भुत बन रूप राज सहचरि अति सुख समाज गौरस्याम मौजनि घन बरष दामिनी॥ पुलिन नलिन विविध फूल जल थल कालिन्दी कूल लेत

सुख देत प्यारी रवन रामिनी। दास श्रीनागरि नवेलि नागर नवरंग झेलि बिहरत अँग संग श्रीहरिदास स्वामिनी ॥57॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद–

सुन्दर रज तिलक भाल बाँकी भृकुटी विसाल रतनारे नैन नेह भरे दरस पाऊँ। वारौं छबि चन्द बदन सोभा सुख सिन्धु सदन नासा वर क़ीर कोटि काम कौ लजाऊँ॥ अधर अरुन दसन पाँति कुन्द कलिका बिसाँति कमल कोस आनन दृग मधुप लै बसाऊँ॥ मधुर वचन मन्द हास होत चाँदनी प्रकास जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत गुन गाऊँ॥58॥

कम्बु कण्ठ मंजु दाम गौर अंग छबि सुधाम कुन्दन तें सरस मृदुल मोहन मन भायौ। नाल सहित कञ्ज पान देत सदा अभय दान तज़िकैं अभिमान साह अकबर सिर नायौ॥ चरन कमल कामधेनु सकल कामना सुदैन दरसैं दृग होग चैन आपदा भगायौ॥ करुवा गूदरा पास वृन्दावन करहिं वास जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत अपनायौ॥59॥

कुञ्जबिहारी एक आस और सकल तजि दुरास असन वसन तें उदास बाँके व्रतधारी। गान कला गुन निधान रसिक मुकुट मनि प्रधान रागभोग बखत जानि तोषत पिय प्यारी॥ तिमिर हरन कौं दिनेस ताप हरन कौं निसेस पाप दहन पावकेस गुरुता मुखचारी। निधिवन आसीन नित्त वरबिहार सरस बित्त जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत बलिहारी॥60॥

राधा गुन गान करैं जमुना अस्नान करैं जमुना जल पान करैं वास श्रीवृन्दावन कौ। रसिकन को संग करैं कर करुवा गूदर गरैं प्रेम अँग अंग भरैं नेम यही पन कौ॥ वासी निर्दोष रहैं मधुकर की वृत्ति गहैं काम क्रोध लोभ दहैं मोहादिक तन कौ। भगवत यही भाँति बसैं इन्द्रीगन जुगत कसैं नैनन जुग रूप लसैं विलसैं सुखधन कौ॥61॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद –

राग – खट, ताल – अद्धा तिताला

प्रात समय नब कुञ्ज द्वार है ललिताजू ललित बजाई बीना। पौढ़े सुनत स्याम श्रीस्यामा दम्पति चतुर प्रवीन प्रवीना॥ अति अनुराग सुहाग परस्पर कोककला निपुन नवीन नवीना। श्रीबिहारिनदासि बलि बलि बन्दसि पर मुदित प्रान न्यौछावर कीना॥62॥

श्री स्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद–

प्रात समय आवत जु आलस भरे जुगलकिसोर देखे कुञ्जनि की खोरी। लटपटी पाग छुटे बन्द पिय के प्रियाजू की बैनी बिथुरी छुटी कच डोरी॥ ललितादिक देखति जु नैन भरि अति अद्भुत सुन्दरवर जोरी। श्रीबीठलविपुल पुहुप बरसत नभ तृन टूटत अब हो हो होरी॥63॥

आजु बनी लाड़िली प्रीतम सँग आवति।

सौंधे भीजी लट छूटी पिय के अंस भुज पाछैं सखि सुघर विभासहिं गावति॥ श्रमजल विन्दु निसि के सुख सूचित मोहन बदन सौं बदन मिलावति। श्रीबीठलविपुल कल रसिकबिहारीलाल आनन्द समुद्र मथि मदन झिलावति॥64॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद –

प्रात समै दोऊ उठे (हैं) प्रजंक पर सौरभ सरस स्वाद लपटाते। लोचन ललित अरुन निसि जागे सुरत अंत पुनि पुनि ललचाते॥ अति रसमत्त सुरत सुखसागर वचन रचन कहि मृदु मुसिक्याते। श्रीनागरीदास दम्पत्ति रति बिलसि विलसि सुख ये न अघाते॥65॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद –

जगाइ री (ललिता) भई बेर बड़ी री।

अलबेली खेली पिय के सँग अलकलड़े की लाड़ लड़ी (री)। तरनि

किरन रन्ध्रनि ह्वै आई लगी निवाई जान सुकर पर तब हों ही ह्वै रही अड़ी (री) ।। श्रीबिहारनिदासि रति बरने को कवि जो छबि मो मन मांझि गड़ी (री) ।।66 ।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद –

सोवत निसि नहिं जानी जात।

अलसानैं जमुहात प्रियापिय उठि बैठे सज्या परभात ।।
पसरी किरन अरुन अति राजत कुञ्ज फूल फल कोमल पाल।
कोमल भान उदित मन सोभा स्याम तनै दोऊ लपटात ।।
भई (हैं) प्रकासि सकल द्रुम वेली वन सोभा सोभित सब गात।
चौंकि चक्रित अति होत परस्पर फूले तन मन अंग न समात ।।
गावति सखी मधुर सुर मीठे रति जागे की जो है बात।
श्रीनरहरिदासि गोरी की छवि पर कोटि मयंक भानु दुरि जात ।।67 ।।

श्रीस्वामी नवलदासजू कौ पद–

श्रीनागरिदासि सिरोमनि जू मोकों नव वास कृपा करि दीजै।
माँगत हूँ करुना करिकैं तुमहीं दिन देखि सदा सुख जीजै ।।
रजधानी भली रज सेये बनैं अजू मोकों रजायसु तौ कछु कीजै।
द्वार परे की अब लाज करौ किन दीन दुखी छिन ही छिन छीजै ।।68 ।।

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद –

प्रियापिय सुरति सेज उठि जागे।

घूमत नैन अरुन अलसाने मनहु समर सर नागे ।।
सिथिल अंग छूटी सिर अलकैं बदन स्वेद कन लागे।
मानहु बिधु कुसुमनि करि पूज्यो अंग अंग अनुरागे ।।
चितै परस्पर ब्रीड़त दोऊ कामकेलि रस पागे।
श्रीनरिहरिदास अंग छबि निरखत गंड पीक सौं दागे ।।69 ।।

श्रीस्वामीरसिकदेवजू कौ पद –

सोभित नैन कमल रतनारे।
रूप भरे मटकत खंजन से मनौं बान अनियारे ॥
माथे मुकुट लटक ग्रीवा की चित तें टरत न टारे।
अलिगन मनु झुकि रहे री बदन पर केस तें घूँघरवारे ॥
छूटे बैन्द झीनौं तन बागौ मुकर रूप तन कारे।
ढरकि रही माला मोतिन की छकित छैल मतवारे ॥
अंग अंग की सोभा निरखत हरषत प्रान हमारे।
श्रीरसिकबिहारी की छबि बरनत कोटिक कविजन हारे ॥70॥

श्रीगुरुदेवजू के पद –

मन मेरे भजि लै श्रीकुञ्जबिहारी।
सब सुख सागर रूप उजागर अँग संग प्रीतम प्यारी ॥
वृन्दावन निज कुञ्जमहल में केलि करत भुज चारी।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि लड़ावत जीवन प्रान हमारी ॥71॥

बसिवौ श्रीवृन्दावन कौ नीकौ।
छिन छिन प्रति अनुराग बढ़त दिन दरस बिहारीजी कौ ॥
नैन श्रवन रसना रस अचवत अँग संग प्यारी पीकौ।
श्रीबिहारीबिहारिनदास लड़ावत बिछुरत नाहिं रती कौ ॥72॥

मैं संग पायौ ओर निबाहू।
रसिक अनन्यनि सौं मन मान्यो अब न बूझि हौं काहू॥
छाँड़े कूर कृपन कर्मठ सठ जिनके मन न उमाहू।
मारग विविध बहत बहकावत उपजावत दुख दाहू॥
श्रीवृन्दावन धन धर्म राधिका लीने गहि बलबाहू।
श्रीबिहारिदास कौ सुलभ भयौ सुख दुर्लभ अगम अगाहू॥73॥

अखियाँ लाल की ललचौंहीं।
इत उत चितै हँसत सकुचत से पुनि बात कहत गहि गौंहीं॥
नैन श्रवन नासा अवलोकत भाल तिलक दरसौंहीं।
श्रीविहारिनिदास स्वामिनी मुख निरखत यह सुख समुझत हौंहीं॥74॥

★ पंचम दिवस ★

झूमका (पृष्ठ 26 पर देखें)

श्रीबिहारीबिहारिनीजू कौ होली महोत्सव

(फाल्गुन शु० ८ से फाल्गुन शु० १५ तक)

★ प्रथम दिवस ★

श्रीस्वामीजी कौ पद- राग - धनाश्री, ताल-चौता

दिन डफ ताल बजावत गावत भरत परस्पर छिन छिन होरी।
अति सुकुमार बदन श्रम बरषत भले मिले रसिक किसोर किसोरी॥
बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यौ इत उत चाहं चलत तकि खोरी।
सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सों लता लपटि कंचन की थोरी॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद- राग - विहाग, होरी ताल-धम

होरी रसरंगा री खेलत स्याम प्रिया गौरा री॥
प्रेम सहित सखि श्रीवृन्दावन सेवत जल जमुना री।
ढिग ढिग कुञ्जनि कुञ्जनि कूलनि फूल रही फुलवारी॥1॥
सकल सुगंधनि रंध्रनि लै लै बहत मलय सुखकारी।
छिरकत छुवत सुधाधर पुहुप पराग उड़ावत डारी॥2॥
गावत चैत सुनावति चाँचरि सहचरि अति चतुरा री।
सुनत श्रवन मन मोद भयौ खेलन कों हरषे श्रीकुञ्जबिहारी॥3॥
कहैं प्रिया मेरे को खेलै लाल करैं मनुहारी।
अति सुख में सुख देखि सखी री देत परस्पर गारी॥4॥

खेलत झेलत अति रंग में रंग रहसि बहसि हँसि डारी।
अरुन बरन नव कुमकुम के रंग पीक कपोलनि पारी ॥5॥
मूलताल – सब अंग चित्र बिचित्र बिहारी बिहारिन सुरति सिंगारी।
तन मन बारि देति छबि पर तृन तोरति कौतिकहारी ॥6॥
निसिदिन यह सुख जीजत पीजत प्याय सुधा पियप्यारी।
मत्त भये युगराज बिराजत मिलत मुदित भुजचारी ॥7॥
अति श्रम सिथिल भये दोऊजन तिहि छिन सखी सम्हारी।
श्रीबिहारिनदासि दरसि मुख सुख दिन धन्य पहर पल घारी ॥8॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद–

राग – धनाश्री, होरी, ताल – धमार

मेरी सहज रँगीली नागरी यों राजैं स्याम सँग गोरी हो।
दिन दूलह दुलहनि लाड़िली अति बिचित्र बनी यह जोरी हो ॥1॥
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज में प्यारी उबटि बदन सिर खोरी हो।
सारी सुरंग स्याम कंचुकी गुही कबरी कुसुम कच डोरी हो ॥2॥
तब चित्र चतुर नख सिख कियें दै अञ्जन मृगमद रोरी हो।
खुभी पोति चारि चारि चूरी पग नूपुर की धुनि थोरी हो ॥3॥
सुन्दर बर कर दर्पन लियें मुख निरखत कुँवरि किसोरी हो।
जाँचत रति चित चौंपसों नवनागरि नाहु निहोरी हो ॥4॥
प्यारी नखसिख सुन्दरि मोहनी मृदु मुसकति हैं मुख मोरी हो।
श्रवत सुधा ससि माधुरी पिय प्रीतम दृष्टि चकोरी हो ॥5॥
अँग अंग अनंग उदित भये दै परिरम्भन रस रोरी हो।
सुरति रंग तन मन रंगे गुन गूढ़ ग्रन्थि हँसि छोरी हो ॥6॥
मूलताल–दोउ उमँगि उमँगि रस बिलसहीं घन दामिनि भामिनि भोरी हो।
सब सम्पति कौ सुख सूचहीं यों खेलत हैं रस होरी हो ॥7॥

श्रीबिहारिबिहारिनदासि कौ सुख बरनै को मति थोरी हो।
बलि नागरीदासि दरस सुखै रीझि वारति मन तृन तोरी हो ॥8॥

★ द्वितीय दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद - राग - धनाश्री, ताल - ध्रुपद

श्रीराधा रसिक (नव) कुञ्जबिहारी खेलत फाग सब जुवती जन कहत हो हो होरी। भरत परस्पर काहू की काहू न सुधि हँसि कें मन हरत मोहन गोरी॥ कर सौं करव जोरि कटि सों कटिव मोरि करत नृत्य काहू न रुचि थोरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा फिरत न्यारेई न्यारे सब सखियन की दृष्टि बचावत तकि तब खोरी॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद - राग-धनाश्री होरी, ताल- धमार

हमारौ माई लालबिहारी मन हर्यौ जै जै श्रीवृन्दाविपिन बिलास।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज में फूले बहु भाँतिन सुमन सुबास॥1॥
अलिकुल संकुल गूँजहीं रस लोभी तजि नैकु न जात।
मुदित सिखीकुल नृत्यहीं कूजित कल कोकिल सुरसात॥2॥
त्रिविध समीर बहै तहाँ सीतल री अति मन्द सुगन्ध।
जल कमलनि बन परसि कैं सुखदायक रोचिक रतिबन्ध॥3॥
तरु फल फूल मधुर झिलैं छै रितु बसन्त रहत हित स्याम।
नित नौतन सम्पति सबै सेवत श्रीस्यामा अभिराम॥4॥
और कहौं सुख सुनि सखी संजोगी रस परस बिहार।
प्रेम मगन सन्तत सदा सावधान अँग अंग न सँभार॥5॥
सब गुन रूप अचागरी सेवति अपने अपने भाइ।
दम्पति मुख सुख निरखहीं निसिदिन जात न जानत जाइ॥6॥
कोऊ कर किन्नर साजहीं कोउव कर लीनें कठतार।
कोऊ आवझनि बजावहीं सब मिले हैं संच गति भेद अपार॥7॥

झाँझ मुरज डफ बाँसुरी बीना मुखचंग उपंग रसाल।
अरु बाजे बहु को गनै जे लिये हैं सुघर सुंदरि नव बाल॥8॥
श्रीललितादिक सखी मिलि चलीं देखन पिय प्यारी कौ अनुराग।
जमुना कूल कदम्ब तरु राजत बर-भामिनि सुभग सुहाग॥9॥
पूरन आनँदकन्दिनी करूनानिधि सुखसिन्धु उदार।
रसिक कुँवर पर बरषहीं जब बोलति बचन कुसुम सुकुमार॥10॥
प्यारी मोहन सौं हँसि कह्यौ आवौ (आवौ) जू मिलि खेलैं फाग।
सुनि मन मुदित उदित भये को बरनै कबि तिनकौ भाग॥11॥
मनिकञ्चन की पिचकारी लई है कुँवरि भरि अपने हाथ।
तिनहीं कौं तकि तकि छिरकहीं जे अपने प्राननि के नाथ॥12॥
मोहन दृष्टि दुराइ कैं चले (हैं) अनत तकि ओरैं घात।
दाव न पावत भरन कौं बहुरयौ प्यारी छिरकि हँसि जात॥13॥
छबीले छदम कछू कियौ और (और) सखी दै आगे ओट।
नख-सिख लों सुन्दरि भरी मानों सचे (हैं) मदन के लूटे कोट॥14॥
कामिनि कर कटि पट गह्यौ अलक छुवत नैननि भयौ मेल।
पान करत मुख माधुरी बाढ़्यौ प्रेम परस्पर खेल॥15॥
भूषन बषन सबै सनें सौंधे बिबिध बरन बहु मोल।
अरगजा रंग रुचि कीच में पानि परसि हँसि करत किलोल॥16॥
सखी मंडल मध्य बिराजहीं मानौं नव कमलनि बिच उज्जल हंस।
ठुमकि ठुमकि गति मति हरैं जब धुकि धरत बिमल भुज अंस॥17॥
सुघर सिरोमनि गावहीं तान तरंग अनंग नचाइ।
हाव भाव उपजत घने उमँग्यौ उर आनँद न समाइ॥18॥

मृदुमालति कल नवलता नवतमाल अँग अंग अरुझात।
पुलकि पुलकि अंकौं भरैं परिरम्भन चुम्बन न आघात॥19॥
मूलताल – गौरस्याम तन अति बनें दोउव रँगे हैं प्रेम के पाग।
नील अरुन छबि पीत में कौन करि सकै अंग बिभाग॥20॥
तब निरखि श्रमित मुख सहचरी दोउव धरि राखे उर माँहि।
और निकट निज कुञ्ज में बैठारे करि कुसुमनि की छाँहि॥21॥
कोउ कर चरन पलोटहीं कोउव अञ्चल पोंछत मुख वारि।
कोउ छबि पर तृन तोरहीं कोउ प्रेम पीवति जल वारि॥22॥
कोउ कर स्त्रक चन्दन लियें कोउव कर लीनें उपहार।
याही सुख सचु खेलिये बहुरयौ बलि कीजै बिसद बिहार॥23॥
जै जै श्रीहरिदास कृपा करी यथासक्ति गाई रस रीति।
जिनकें यह रस सेइये श्रीबिहारीदास करि तिनसौं प्रीति॥24॥

★ तृतीय दिवस ★

श्रीस्वामीजी कौ पद- राग–सारंग, होरी ताल– धमार

डोल झूलत बिहारीबिहारिनि रागु रमि रह्यो।

काहू के हाथ अधौटी काहू के बीन काहू के मृदंग कोउ गहैं तार काहू के अरगजा छिरकत रंग रह्यौ॥ डाँड़ी छाँड़े खेल बढ्यौ जू परस्पर नहिं जनियत पग क्यौं रह्यौ॥ श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी कौ खेल खेलत काहू ना लह्यौ॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद –

श्रीगुरु कृपा जथामति बरनौं श्रीवृन्दावन अति राजैं री।
आसपास जमुना रस झूमी सुखद रमित अति भ्राजैं री॥1॥
सखि मृदुल सुबास पुलिन कन झलकत बिमल कमल अति फूले री।
नील अरुन सित पीत अधिक छबि सौरभ मनमथ मूले री॥2॥

सारस हंस चकोर कुलाहल कूजित कल सुर भारी री।
अति रसमत्त चलत मधुरी गति लटकनि की छबि न्यारी री ॥3॥
कुञ्ज सघन घन नव नाना रँग फूली हित रति सूचैं री।
सम्पति सुख सब सौंज सजैं यों दम्पति अति मन रूचैं री ॥4॥
अद्भुत सहज बिबिध निर्मित धर मनिमय मृदु अति सोहै री।
नव कर्पूर रमित रज राजत बरनैं ऐसो कवि को है री ॥5॥
सुन्दर सुभग सरोवर नाना सहज रमी सुखदाई री।
मनसिज रंग समूहनि कौतिक रहि जित तित छबि छाई री ॥6॥
नृत्तत मत्त मयूरनि झुंडनि बोलत मधुरी बानी री।
कोकिल कल सुर कीर भीर अति कूजित काम कहानी री ॥7॥
ललित लता नाना रंग फूली माधुरी कुन्द चमेली री।
चम्पकलता अरु बकुल केवरौं केतुकी कदम्ब सहेली री ॥8॥
स्वर्णजूथिका रूपमञ्जरी कुंजैं बेलि निवारी री।
दौना चम्पौ गुलाब जुही अति फूली सखी फूलवारी री ॥9॥
पारिजात केसर जु कल्पद्रुम फलित लालमनि सोहै री।
सौरभ सरस गुच्छ मुक्तनि के झलकत छबि मन मोहैं री ॥10॥
अति रसमत्त सुजस अलि गुंजैं स्याम अरुन सित पीरैं री।
नव पराग अनुराग त्रिबिध बहै सीतल मन्द समीरैं री ॥11॥
छै रितु बसन्त सदा वृन्दावन सेवत सुख मन लीने री।
अपने अपने भाइ भजत सब सावधान चित दीने री ॥12॥
नारिकेलि नव नूत सदा फल नीबू फलित सुपारी री।
ललित लवंग-लता जु इलायची दार्यौ दाख छुहारी री ॥13॥

द्वै द्वै रूप कियें सेवत सखी नाना रति सुख साजैं री।
मन्दिर नवलनि मनिमय मण्डल अनंग रंग रति काजैं री ॥14॥
सौरभ मृदु सेज्या बहु रंगनि रचि रचि सहज बनाई री।
बिहरत नित्य नवल दोउ प्रीतम कुँवरि कुँवर सुखदाई री ॥15॥
नव नव रंग नये नित साजैं खेलत छिन छिन भारी री।
जो इच्छा मन करत सोई अब जाचैं श्रीकुञ्जबिहारी री ॥16॥
कबहुँक रंग हिंडोरें झूलत गौरस्याम तन राजैं री।
बन किन्नर कठतार बीन डफ रहत सबै सुख साजैं री ॥17॥
गावत चैत परस्पर झुंडनि रंग अनंग बढ़ावैं री।
झूलत फूलत बिपुल बिनोदनि रीझि दुहुन पै पावैं री ॥18॥
कबहुँक कुञ्ज कुञ्ज प्रति डोलैं बोलैं हँसि मधुरी बानी री।
अरुन पीत पट लसत सुभग तन देत सकल सुखदानी री ॥19॥
कबहुँक दृष्टि बचाइ सबनि तें रंगमहल दोउ खेलैं री।
दरस परस सुख केलि कलोलनि राग रंग रस झेलैं री ॥20॥
मूलताल –बीरी परस्पर खात खवावत मधुर मधुर मृदु बोलैं री।
नैन सों नैन मिलाइ छन्दबन्द कर कंचुकि बन्द खोलैं री ॥21॥
परिरम्भन चुम्बन जु अधरमधु पीवत त्रिपित न मानैं री।
प्रमुदित मत्त रहत जु निरन्तर निसिदिन जात न जानैं री ॥22॥
अंगराग अनुराग रँगे दोउ सुरति बिवस जब जानैं री।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनिदासि दोऊ उर आनैं री ॥23॥
फेरि सिंगार हार रति साजैं यौं नित नेह बढ़ावैं री।
बलि बलि नागरिदासि दरसि सुख प्रमुदित प्रेम लड़ावैं री ॥24॥

श्रीस्वामीजू कौ पद –

चतुर्थ दिवस राग –धनाश्री, ताल – ध्रुपद

झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े।
हाँगत जोर सहित जैसो जाके डाँडीव गहैं गाढ़े॥
बिच बिच प्रीति रहसि रस रीति की राग रागनीन के जूथ बाढ़े।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी राग ही के रंग रँगि काढ़े॥

श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों–बनौ (पृष्ठ 16 पर देखें)

श्रीस्वामीजू कौ पद –

पंचम दिवस राग – धनाश्री, ताल – ध्रुपद

झूलत डोल श्रीकुञ्जबिहारी।
दूसरी ओर रसिक राधावर नागरि नवल दुलारी॥
राखे न रहत हँसत कहि कहि प्रिया बिलबिलात पिय भारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी अब कैं राखि हा हा री॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद–

राग–काफी, होरी–धमार

सब सखी मिलि झूमक देहिं, मेरौ लालबिहारी मन हर्यौ॥
श्रीहरिदास सहज रति बरनौं श्रीवृन्दावन अति रम्य।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास कृपा बिनु सबके मननि अगम्य॥1॥
कमल कुमुद फूले जल थल सखि सुखद तरनिजा कूल।
सारस हंस चकोर ललित गति लटकि चलत मन फूल॥2॥
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज मनोहर उदित कमल की काँति।
नृत्य करत सिखीकुल फूले कौतिक नाना भाँति॥3॥
द्रुमबेली फूली लता नितही रितु सरद बसन्त।
अद्भुत भूमि रंग राजैं अति सोभा सुखहिं न अन्त॥4॥
रज कर्पूर सुगन्ध त्रिविध बहै सीतल मन्द समीर।
अति रसमत्त मुदित कल कूजित सुक पिक भृंगनि भीर॥5॥
सेबत काम अनन्त कला नित कुञ्जमहल आगार।
लाल रतनमनि मुक्ता झूमत रचित वितान अपार॥6॥

कनक खचित मनिमण्डल पर राजैं कुँवरि संग सुकुँवार।
मृदुमनि स्याम तमाल लता मानौं कनक कुसुम उर हार॥7॥
श्रीललितादिक सखी आईं झूमि सब आवझ साजि मृदंग।
एक लियें करताल झाँझ डफ बर बाँसुरी मुखचंग॥8॥
एकनि कर कठतार अधौटी मुरज रबाब उपंग।
एक लियें किन्नर कर बीन बजावत गावत तान तरंग॥9॥
एक अरगजा कनक कलस भरि सौंधैं सरस रसाल।
एकनि पुरे पिचकारी एकनि कर बूकाबन्दन अरुन गुलाल॥10॥
एक लियैं बीरी कर कन्दुक अरु कुसुमनि के हार।
झूमत सुघर सुनावत चाँचरि सप्त संच सुरतार॥11॥
प्यारी हँसि मोहन सौं बोली आवौ जू मिलि खेलैं फाग।
सुखद बचन सुनि स्याम सहेलिन बाढ्यौ अति अनुराग॥12॥
ललिता लै पिचकारी दीनी श्रीस्यामाजू कौं आइ।
छिरकति भरति भाँवते पिय कौं रहसि बहसि हसि जाइ॥13॥
मोहन भरि पिचकारी लै कर छलबल तकत उपाव।
नागरि नवल प्रबीन प्रिया ये क्यौंहूँ न पावत दाव॥14॥
दृष्टि बचाइ अलि आगे लै बूकाबन्दन अरुन गुलाल।
आइ अचानक भरि प्यारी हँसि होरी (है) बोलत ताल॥15॥
कामिनि कटि पीताम्बर कर गहि कहति बचन मुसिकाइ।
बहुरि भरौ चपल नटनागर नख सिख छबि रहि छाइ॥16॥
भूषन बसन सबै सनें (और) कुमकुम सौंधे गुलाल।
निरखि हरखि सुख प्रेम उमँगि गुन गावत सखि नव बाल॥17॥
मूलताल – गौरस्याम तन रुचिर मनोहर चितवत बिबि मुख ओर।
करत सुधारस पान परस्पर लोचन त्रिषित चकोर॥18॥

दरस परस रसमत्त भये दोउ बिलसत हँसत अनंग।
अनँग अँग हरषत सुख बरषत खेलत भरि रस रंग॥19॥
राग रंग रस सुख बाढ़्यौ अति सोभासिन्धु अपार।
बिपुल प्रेम अनुराग नवल दोउ करत बिहार अहार॥20॥
श्रीबृन्दाबिपिन बिनोद करत नित छिन छिन प्रति सुखरासि।
कामकेलि माधुर्य प्रेम पर बलि बलि नागरिदासि॥21॥

★ षष्ठ दिवस ★

श्रीस्वामीजू कौ पद –

राग – धनाश्री, ताल–ध्रुपद

एक समय एकान्त बन में डोल झूलत श्रीकुञ्जबिहारी।
झोटा देत परस्पर सब मिलि अबीर उड़ावत डारी॥
कबहुँक वे उनके वे उनके हौं दुहुँन की एक सारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी बाढ़्यौ रंग भारी॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद–

राग – काफी धनाश्री होरी, ताल – धमार

रूप अनूपम मोहनी मोहै कुँवर किसोर।
लाड़ गहेलरी रंग राचे लाल॥
बदन सुधा ससि श्रवत री पीवत नैन चकोर॥1॥
नैन कमल मुख कमल के चरन कमल कर लाल।
तन मन फूले कमल री मोहन मुदित मराल॥2॥
हासि कुसुम जोवन लता अलि आसक्त तमाल।
बचन रचन सुर शब्द के मृग मन मोहे रसाल॥3॥
ये घन तुम दुति दामिनी मिलि बरषहु प्रेम सुहाग।
आलस क्यों बलि कीजिये हिलमिलि खेलौ फाग॥4॥
सुनत भयो चितचाव री सुघर सिरोमनि जान।
सहचरि संच सुरन लियें करत मधुर कल गान॥5॥

श्रीकुञ्जबिहारी खेलहीं प्रेम भरे रस रंग।
बूकाबन्दन मेलहीं कुमकुम कुसुम सुरंग॥6॥
मदन मुदित अँग अंग री करत सुखद कल केलि।
उर कर बर परसें हँसें जुगल नवल रस झेलि॥7॥
पियत सुधाधर माधुरी चित्रित पीक कपोल।
अंग अंग अनुराग री कहत मधुर मृदु बोल॥8॥
मूलताल – राग रंग अति रँग रह्यौ श्रीहरिदास बिनोद।
श्रीबिचित्रबिहारिनदास री बिपुल बढ़ावत मोद॥9॥
छिन छिन प्रति रति साजहीं कुञ्जसदन सुखरासि।
मधुर प्रेम रस बिलसहीं बलि बलि नागरीदासि॥10॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद– राग–धानाश्री होरी, ताल –धमार

मेरी रसिक रँगीली नागरी मिलि खेलत पिय सँग होरी हो।
सखि नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज में अति राजत अद्भुत जोरी हो॥1॥
अरुन पीत तट कंचुकी तन निर्तत अति रँग साजैं हो।
सखि भूषन रव सुर संच सौं मानौं मृदंग ताल डफ बाजैं हो॥2॥
अलि आनन्द विराजहीं नव कोकिल कल सुर गावैं हो।
सखि द्रुम बेली फूली लता नव पुहुप पराग उड़ावैं हो॥3॥
सौरभ सरस पवन बहै नव रितु बसन्त सुखकारी हो।
सखि अति आनन्द उमँगि ढरैं रस बरषत कुञ्जविहारी हो॥4॥
अँग अंग अरगजा रँग छिरकहीं नव नेह नयौ अनुरागौ हो।
सखि मुदित परस्पर खेलहीं अति सुरति रसीली फागौ हो॥5॥
हावभाव भ्रूभंगनी अति चौंप बढ़ी चित चारौ हो।
बदन विलोकत माधुरी मची मौज मनोजनि मारौ हो॥6॥

कर कमलनि परसैं हँसैं उर आनन अलक सँवारौ हो।
जुगल नवीन रसपान के भये विवस बसन न सँभारौ हौ ॥7॥ नव
सुरति रंग अँग रगमगे अति भ्राजत कुँवरि किसोरी हो।
सँग सुखदायक सहचरी रीझि रीझि कहत हो हो होरी हो ॥8॥
मूलताल – इहि रसमत्त मगन रहैं नित नौतन नित्त बिहारौ हो।
छिन छिन प्रति रस बिलसहीं मृदु रस जस करत अहारौ हो ॥9॥
जै जै श्रीहरिदास प्रताप तें बलि बिपुलबिहारिनिदासी हो।
बलि नागरीदास दरस सुखै सेवै सन्तत प्रेम प्रकासी हो ॥10॥

श्रीस्वामीजू कौ पद –

सप्तम दिवस राग–धनाश्री, ताल–चौताल

झूलत डोल दुलहिनी दूलहु।
उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत खेल परस्पर सूलहु॥
बाजत ताल रबाब और बहु तरनि तनैया कूलहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी कौ अनतव नाहिनै फूलहु॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद –

चल सखि देखन जाहिं (पृष्ठ 14 पर देखे)

श्रीस्वामीजू कौ पद – अष्टम दिवस राग–सारगं, होली ताल–धमार

(सोई) डोल झूलत श्रीविहारीविहारिन पुहुपबृष्टि होति।
सुरपुर पुर गन्धर्व और पुर तिनकी नारि देखति वारति लर मोति॥
घेरा करत परस्पर सब मिलि कहूँ न देखी ऐसी जुवती जोति।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जविहारिनि सादा चुरी खुभी पोति॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद –

श्रीस्यामाप्यारी कुञ्जबिहारी राजत अद्भुत जोरी हो।
अति रसमत्त परस्पर बिहरत खेलत हैं रस होरी हो ॥1॥
सोंधे सरस अबीर अरगजा छिरकति कुँवरि किसोरी हो।
हावभाव चितचाव बढ़्यौ अति बूकाबन्दन रोरी हो ॥2॥

रतन खचित पिचकारी हाथनि भरि लई मृगमद रोरी हो।
वे उनके वे उनके ताकत मुसिकति हैं मुख मोरी हो ॥3॥
कोउ करतार कोऊ कर किन्नरि संच सुरनि गति थोरी हो।
बीना मुरज पखावज बाजत विविध डफन की जोरी हो ॥4॥
कोकिल कीर अलापनि में सुरताल देत गुन गोरी हो।
लेत अतीत अनागत नागरि नृत्य करति मुखमोरी हो ॥5॥
मूलताल–राग रंग सबकौ मन करषत भई अबिचल मति भोरी हो।
तन मन प्रान करौं न्यौछावर या छबि पर तृन तोरी हो ॥6॥
श्रीहरिदासी इष्ट उपासी या सुख में मति मोरी हो।
श्रीनागरिदासि की दासि परम रुचि जैसे चन्द चकोरी हो ॥7॥2॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद – राग – काफी होरी, ताल – धमार

हो हो होरी खेलैं साँवरौ अपनी कुँवरि लड़ैती साथ।
ललिता चोंप लगाय दुहूँ दिसि गहि पकराये हाथ॥
प्रेम भरे जु फाग खेलैं भई है दुहूँ दिसि भीर।
आनँद उमगि लई करजेरी धरत निमिष नहिं धीर॥
भरि पिचकें मानौ सुरति की सजनी छुटत दृगन की कोर।
उड़त अबीर गुलाल फूल सतभाइ अतर के बोर॥
मन्द मधुर बाजें बजैं (और) बाढ़्यौ अति उत्साह।
छाइ रह्यौ अनुराग परस्पर देत नेक नहिं चाह॥
मूलताल – इहि बिधि खेल मच्यौ कुञ्जनि में रँगे प्रेम के रंग।
यह सुख निरखत सखी सबै दुरि रसिक बिहारिन संग॥3॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद राग–धनाश्री होरी, ताल–तिताला

एरी सखी नित्यबिहारिन बाल बरषत रूप रसाल री॥(रंगहोरी)
एरी सखी चंचल नैन बिसाल निरखत लाल निहाल री॥

एरी सखी अद्‌भुत सुख की रासि मधुर मधुर मृदु हास री।
एरी सखी हुलसि हुलसि लड़कात आनँद उर न समात री॥
एरी सखी अंस अंस भुज देत अंकौ भरि भरि लेत री।
एरी सखी मिलत मिलत न अघात रोम रोम फूले गात री॥
एरी सखी बाढ्यौ है रंग अपार उपजत कोटिक मार री।
एरी सखी परे हैं प्रेम रस जाल प्रान प्रिया उर माल री॥
एरी सखी इन से येही आहि पटतर दीजै काहि री।
एरी सखी ललित सु केलि अभंग श्रीरसिकसखी अंग संग री॥4॥

ताल – तिताला

अतिरंग बिहारिनि बाल वरषति लाल पै।
इकटक निरखत सहज लाड़िली भाग्य लिख्यौ है भाल पै॥
चूमि चूमि तरुवा हिये लाये माथे धरे हैं बिसाल पै।
ललित प्रिये या छबि पर बारी रीझि रसिक सु ख्याल पै॥5॥

प्यारी सहजहिं मृदु मुसिक्याय मोहन बस करे।
जब अनुराग भरी ढरि हित सौं बिबस भये अंकौं भरे॥
मानत भाग्य धन्य धन्य हमहीं आजु प्रिया अपने करे।
ललित केलि निसिबासर बिहरत रसिकसखी के हिये अरे॥6॥

नित कुञ्जबिहारनिबाल खेलत लाल सौं।
महा प्रेम भरि भरि पिचकारी छिरकत दृगन बिसाल सौं॥
सहज सनेह सोंधे में सोंधी रंग रँगीले हाल सौं।
ललितप्रिये अँग सँग सुख बिलसत अद्‌भुत चाह रसाल सौं॥7॥

रसमत्त बिहारिनि बाल मो हिय में रहौ।
हुलसि हुलसि आनन्द महा ह्वै लपटि लपटि मो तन चहौ॥

रोम रोम सुख पाइ छबीले हँसि हँसि कैं बातें कहौ।
श्रीहरिदासीजू रसिकसिरोमनि तन मन मिलि यह सुख लहौ॥8॥

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद–
राग–काफी, ताल–धमार

होरी आई रंग भरी खेलत तन सुकुमार।
अबीर गुलाल के बादर छाये बरषत धार फुहार॥
उमँगि उमँगि बरषत रँग भारी छूटत कर पिचकार।
श्रीललितमोहिनी के हित बिहरैं वे उनके व उनके हार॥9॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद–

रँग होरी रँग होरी खेलत स्यामा गोरी।
अति लड़काइ धरा भुज पिय पर रस बरषत घनघोरी॥
प्रान प्रान मिलि तन मन फूले दृष्टि दृष्टि सौं जोरी।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत प्रीति बढ़ी दुहूँ ओरी॥10॥

श्रीस्वामीं सरसदेवजू कौ पद–

मतवारे री तेरे छैल छबीले नैना।
घूमि रहे अलबेले अलौकिक करत कटाक्षनि सैना॥
चपलारे अनियारे भारे कजरारे सुख दैना।
श्रीसरस प्रिया बस भये हैं बिहारी कहि कहि साधू बैना॥11॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद –

नवकुञ्ज सदन में आजु रँगीली होरी।
इत स्यामा उत स्याम मनोहर खेलत उमँगि न थोरी॥
छल बल घात लगावत मोहन अंग बचावत गोरी।
सावधान दोउ सुघर सिरोमनि अपनी अपनी ओरी॥
कोककला कलकेलि परस्पर जोवन जोर किसोरी।
चतुर खिलार लाड़िली लालन तुम जिनि जानौ भोरी॥

मूलताल – हा हा करौ परौ पायन अब ना चलि हैं बरजोरी।
भगवतरसिक उदार स्वामिनी दै हैं सर्वसु छोरी॥12॥

श्रीस्वामीरसिकदेवजू कौ पद – ताल – तिताला

होरी खेलन स्याम हुलसि छबीली आई।
अबीर गुलाल लिये नैननि में आजु करत मन भाई॥
बाजे बजत दुहूँ दिसि नीके मनमथ मोद बढ़ाई।
छबि तरंग छूटत पिचकारी भृकुटिन मार मचाई॥
गावत गीत रस रीति जीति कें पुलकि किलकि सुखदाई।
श्रीरसिकबिहारनि की छबि निरखत ज्यों दामिनि घन छाई॥13॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद–

पिया अब हैं तो बिपुन निरन्तर हो हो हो हो होरी है।
श्रीललिता हम तुमकौं दीनी रसिक हमारी ओरी है॥
कौधौं जीतैं कौधौं हारै पैज बदी ना थोरी है।
पीताम्बर तुम धरौ दाव पै जीती कुँवरि किसोरी है॥14॥

श्रीस्वामी राधाशरणदेवजू कौ पद –

होरी रंग महल में खेलत हैं पियप्यारी।
ललिता भरि भरि देत उमगि सों केसरि रंग पिचकारी॥
कमल करनि भरि बूकाबन्दन घालत जब सुकुमारी।
मूठि बचावत नवल छबीलौ श्रीराधारसिक बिहारी॥15॥

नयौ होरी कौ खिलार आजु घात में आयौ।
झपटि फैंट कर गह्यौ लाड़िली गाल गुलाल लगायौ॥
मन्द मन्द मुसिकात छबीली नैननि सैन जनायौ।
छीन लियौ पट पीत मुरलिका दै दै ताल नचायौ॥

संग सखी ललिता हरिदासी हँसि हँसि मोद बढ़ायौ।
श्रीराधारसिक नव कुञ्जबिहारिनि ऐसौ फाग मचायौ॥16॥

राग – काफी होरी, ताल – चौताल

सुन्दर बर नवकिसोर खेलत रंग होरी।
प्यारी संग नवलबाल झोरिन लीनें गुलाल कञ्चन पिचकारी हाथ केसरि रंग घोरी॥ रोरी मुख मलत धाइ पीताम्बर लियौ छुड़ाइ ताल दै नचाइ मुदित बिहँस मुख मोरी। हँसत लसत चन्द्रबदन बारौं छबि कोटि मदन श्रीराधिकाप्रसाद सखी निरखत तृन तोरी॥17॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद – अद्धा – तिताला

हो हो होरी खेलैं री मोहन अपनी प्रानप्रिया सँग सोहन।
गावत तान तरंग परस्पर हँसत भेद भरि भौंहन॥
भरि सौंधे सुरंग अबीर अरगजा छिरकत रीझि रिझौहन।
श्रीनागरीदास रसमत्त बिहारी बिहारनि मुख छबि जौहन॥18॥

श्रीस्वामीराधाप्रसादजू कौ पद – होरी तिताला

ललित नवकुञ्ज में होरी पिया सँग खेलती गोरी।
सप्त सुर साज सब साजैं बाँसुरी बीन डफ बाजैं॥
मान भरि तान सौं गावैं रँगीले दोऊ फाग सरसावैं।
झमकि पिकारियाँ घालैं धाइ रोरी सौं मुख मालैं॥
करत जब लाल बरजोरी झपटि गहि पीतपट गोरी।
बिहँसि हँसि रंग सौं बोरी परस्पर करत झकझोरी॥
भीजि रस रंग सुखरासी रसिकवर संग हरिदासी।
श्रीराधाप्रसाद बलिहारी बसौ इन नैन पियप्यारी॥19॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद-

राग – परज, धीमा – तिताला

रंग महल में आजु रंग होरी हो।
फाग खेलन में बनी ही है रही पट झकझोरी॥
प्रमुदित नारि गुलाल उड़ावति गारी गावति चहुँओरी।
दूलह श्रीरसिकबिहारीजू सुन्दर दुलहनि कुँवरि किसोरी॥20॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद –

राग – बहार, होरी – धमार

होरी खेलैं श्रीराधाजू प्यारी लियें कर रंगभरी पिचकारी।
अञ्जन दै दृग कञ्जन ले खञ्जन लजत बिचारी॥
गञ्जन करत मीन मृगनैनी लखि बस होत बिहारी।
लहँगा सुरँग कंचुकी अद्‌भुत तनसुख सोहत सारी॥
अंग अंग आभूषन राजत मोतिन माँग सँवारी।
मूलताल–सहचरि जंत्र बजावति गावति गति उपजावति न्यारी॥
ललित रूप निरखत निसिबासर तन मन अति हितकारी॥21॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद –

ताल – धमार

तन मन मौज मनोज भरी प्यारी पिय संग खेलति होरी।
चोबा चन्दन अरगजा के रँग भरत ढुरत दुहूँ ओरी॥
अँग अँग सुख रुख लै परसत हँसत लसत मुख मोरी।
श्रीहरिदास ललित अद्‌भुत छबि निरखि हरषि तृन तोरी॥22॥

राग – विहाग, ताल – तिताला

श्रीबिहारीबिहारिन की री मोपै यह छबि बरनी न जाइ।
कुञ्ज महल में होरी खेलैं जाके अँग अँग रंग चुचाइ॥
तन मन मिलैं झिलैं मृदु रस में आनँद उर न समाइ।
श्रीहरिदास ललित छबि निरखत सेवत नव नव भाइ॥23॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद– राग – पीलू, ताल – धमार

अबकैं फाग रसिक सुख दीनौ।
तन सुगन्ध की मूक झूक भरि दृग गुलाल कर लीनौ ॥
बाजे अंग संग सब बाजत राग बारनै कीनौ।
मुसिकनि रंग सुरंग भरे अति पीताम्बर रँग भीनौ ॥24॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद– राग – धनाश्री, होरी – तिताला

प्यारी पिय खेलैं होरियाँ।
हित सौं सरस दुति अरस परस मिलि नैन सैन चित चोरियाँ ॥1॥
छबि तरंग छूटै पिचकारी उर अनुरागी झोरियाँ।
अधर पान नव रंग गुलाली अँचवत प्रीतम गोरियाँ ॥2॥
ललित लाल ललना दोऊ परसैं कर कटि जोरियाँ।
श्रमकन बदन मदन रन माते कल किसोर वर जोरियाँ ॥3॥
बजत किंकिनी कंकन नुपूर छुटी अलक अरु डोरियाँ।
केसरि प्रीति नेह सौंधौ सुठि बन्द कंचुकी छोरियाँ ॥4॥
अति सुकुमार सनैं सिज्या पर छिन–छिन रति निसि भोरियाँ।
कुञ्जमहल मनिमय धरनी सौं अलि सुगन्ध कै डोरियाँ ॥5॥
दम्पति श्रीवृन्दावन राजैं अति उदार सु किसोरियाँ।
अलि मिलि अपने–अपने पन चलत तकत बन खोरियाँ ॥6॥
अनिमिष इकटक निरखि बिहारैं वारति हैं त्रन तोरियाँ।
झलकत रूप अमित सोभा के प्रतिबिंबित चहुँ ओरियाँ ॥7॥
रंग हो हो हो हो होरियाँ ॥25॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद–

एरी हेली अलक लड़ती के सँग अलक लड़ैतो खेलहीं। रंग होरी
एरी हेली पिय पिचकारी प्रेम उमगि उमगि रँग रेलहीं ॥

एरी हेली प्यारी (जू) के अति अनुराग बूकाबन्दन मेलहीं।
एरी हेली डफ किंकिनी कठतार बलया बाजत केलहीं॥
एरी हेली कुटिल कटाक्षनि मार करत दुहूँ दिसि झेलहीं।
एरी हेली भगवत रसिक रसाल सुरति सुधानिधि हेलहीं॥26॥
बिहारिनि रंग सौं आई। बिहारी उमगि उर लाई॥
भई रस रीति मन भाई। मनौ निधि रंक ने पाई॥1॥
करैं दोऊ प्रेम की बतियाँ। हरैं मन नैन बहु भतियाँ॥
न जानैं जात दिन रतियाँ। हँसैं बिलसैं सुभग थतियाँ॥2॥
अनंगनि रंग बरसावैं। कुसल रस कोक सरसावैं॥
कपोलनि करनि परसावैं। नयौ नित नेह दरसावैं॥3॥
छके रहैं रूप रस माहीं। पलक पलहूँ लगत नाहीं॥
विवस अंसनि दियैं बाहीं। लसैं नव कुञ्ज परछाहीं॥4॥
कनकबेली मनौ फूली। लपटि तरु स्याम सौं झूली॥
किधौं घन दामिनी भूली। कि भगवत सुकृत अनुकूली॥5॥27॥

अक्षय तृतीया : चन्दन-बन्दन महोत्सव

श्रीगुरुदेवजू के पद - राग - ललित, ताल - धीमा तिताला

चन्दन बन्दन की तन सोभा।
मानहुँ निसि नक्षत्र प्रगटे घन बिमल बसन बिच ओभा॥
करि सिंगार सहचरि लै आई सुख देखन के लोभा।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनि मुख निरखत काम विवस चित चोभा॥1॥

पिय प्यारी जू चन्दन चित्र कियें।
मानहु काम प्रेम के अंकुर सींचत दृष्टि दियें॥
अति अभिलाष लाल ललना मिलि सीतल होत हियें।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति दुलरावत यह सुख सखी जियें॥2॥

श्रीस्वामी किसोरदासजू के पद –

चन्दन चौंप तें घिस लाई।
परसत बिबस भये भरि लोचन निरखि न सकत अघाई॥
कहत भलें जू भलें बर भामिनि भुज भरि भवन बसाई।
श्रीदासकिसोर प्रकास परस्पर फूली अंग न माइ॥3॥
चन्दन चित्र बनायें सोभित भामिनि पति प्यारे।
अति बिचित्र दोउ मित्र मनोहर सुन्दर नवल दुलारे॥
तैसिये प्रेम सखी अनुरागिनि नख सिख सुखद सँवारे।
श्रीदासकिसोर परस्पर प्रीतम टरत नेकु नहिं टारे॥4॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद–

री हौं रीझि चित्र कियें चन्दन के।
सारी सिर सँवारी प्रीतम अँगिया पर बन्दन के॥
बागौ पाग पिया तन साँवल सहचरि गति फंन्दन के।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ रंग रँगे छन्दन के॥5॥

श्रीस्वामीजू कौ पद– राग – विलावल, ताल – चौताल

हरि के अंग कौ चन्दन लपटानौं तन तेरे देखियत जैसें पीत चोली।
मरगजे अभरन बदन छिपावत छिपै न छिपायें मानो कृष्ण बोली॥
कहुँ अञ्जन कहुँ अलक रही खसि सुरति रंग की पोटैं खोली।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम मिलत बिहारिनि हार र रह्यौ कंठ बिच ओली॥6॥

श्रीस्वामी किसोरदासजू के पद–

चन्दन सिंगार करि मृगमद बिन्दु भाल केसरि की खौर गौर साँवल लल्लाट पर। कमल महल मधि तलप मृदुल तन बहत पवन मन्द सौरभ सनेह भरि। उदित उसीर अति अतर सुगन्ध नीर छूटत फुहारे तीर बाहुन सों बाहु अरि। अमृत पिवात प्यात राग रागिनी मिलात श्रीकिसोरी किसोरदास नेकु न सकत टारि॥7॥

ग्रीषम रितु हित जानि प्रानपति छिरकत छींट लगावत चन्दन।
चन्दन पावस वारि खौर कर कमल माल पहिराइ सुगन्धन॥
अरगजा अतर घोरि कस्तूरी चित्रित चोली रचित सुछन्दन।
अति उदार रिझावर कहत अब दासकिसोर निरखि आनन्दन॥8॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद-

राग - भैरवी, ताल-अद्धा तिताला

एरी कहुँ देख्यौ री चन्दन चोलना।
गौरांगी के उर बर राजत नीलमनिनं कौ ढोलना॥
सकल सिंगार करौं न्यौछावर नैन निरखि मुख बोलना।
रसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ राजत सहचरि ओलना॥9॥

श्रीगुरुदेवजू के पद -

राग - पीलू, ताल - धमार

फूल फब्यौ सिरमौर सिंगार कौ।
सेवत कोटिक काम कला अँचला चल चौंर मनौं छत्र ढार कौ।
नासिका नैन सुबैन श्रवन सभा कुच उच्च सुभाव उदार कौ॥
उरगे हरि यों ढरि आपुही आइ रहे गहि पाँइ अहार बिहार कौ।
श्रीकुञ्जबिहारिनि राज बिराजत फूल फब्यौ सिरमौर सिंगार कौ॥10॥

राग - खम्माच, ताल - चौताल

श्रवननि फूल फूले फूल सौं धरति हैं।
अलबेली ये बातैं अलबेली ये लाल की घातैं गनी न परति मोपै मननि हरति हैं॥ यह मैं जिय में जानी रसिक सुराजरानी लालहिं विवस भये अंक में भरति हैं। देखि श्रीबिहारिनिदासि अपने सुकृत हास सखिन के नैननि कौं सुफल करति हैं॥ री फूल फबि रह्यौ अवतंसनि सोहत सुठि श्रवननि फूल फूले फूलसों धरति हैं॥11॥

फूलनि की सारी प्यारी पहिरें तन।
फूलन की कंचुकी फूलन की ओढ़नी अंग अंग फूले फूल ललना के मन॥

फूलन के हार उर फूलन की माला फूलन के आभरन केस गूँथे फूल घन। फूलन के हाव भाव फूलन के चोज चाव बिबिध बरन फूल फूले श्रीवृन्दावन॥ फूली फूली सखी आईं बीनि बीनि फूल लाईं पञ्चम सुर सुहाई रचित वितान गन। फूल सों लाड़िली पाई फूल सों लाल लड़ाई श्रीबिहारिनिदासि गाई फूले फूले प्रेम पन॥12॥

फूलन की सारी चोली फूलन कौ लहँगा।

फूलन की पाग बाँधे फूल कर बान साधे फूलन कौ उपरैना मोल माई महँगा॥ फूलन की सेज सोहै फूल बैठे मन मोहै फूलसौं जामिनी जाम हौं न जानौं कहँगा। श्रीबिहारिनिदास फूली गावति रस में झूली और फूल इहि फूल सब छबि छँहगा॥13॥

राग – विहागरौ, ताल–अद्धा तिताला

फूले री फूल बसीले तन में सब इनहीं के मन की फूल।

नैन कमल सुख कमल सखी कुच कमलनि ऊपर मनहु अलक अलि भूल॥ चरन कमल कर कमलनि पूजत फूलत सिथिल दूकुल। श्रीबिहारिनिदासि नव कुञ्ज पुञ्ज में झूलत गहि भुज मूल॥14॥

नव निकुञ्ज मन्दिर में ए फूल फूले री श्रीवृन्दावन।
जुगल नवल मुख कमल बिराजत गौर बरन साँवल तन॥
सरस पुलिन सेवत सिज्या सखी उपजत कोटि मदन मन।
झूलत फूलत प्रेम परस्पर सौरभ स्वास मलय पवन॥
महामाधुरी पीवत नैनन अलि सहज सनेह सुख सदन।
श्रीबिहारिनिदास रसिकन की जीवन सन्तत सुखद धनी धन॥15॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद–

गोरे तन में प्रतिबिंबित फूल बीनत लालबिहारी।
जब जब हाथ परत न तबहीं (यौं) हँसि जात हैं प्यारी॥

अरबराइ अंकौं भरति हैं छिन छिन कर मनुहारी।
सुरति बिबस बिहरत दोउ प्रीतम श्री सरसदास बलिहारी ॥16॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद – राग– खम्माच, ताल – तिताला

फूल सों सोहति अति स्यामा सुकुमारी।
फूलन कौ साज समाज आजु बन्यौ फूल सौं लड़ावत रसिकबिहारी ॥
फूली जहाँ तहाँ कुञ्ज मधुप करत गुञ्ज फूले जस गावत कोकिल सुक सारी।
श्रीनागरिदास बारी फूले फिरत बिहारी फूली सब सखी देखि जाति बलिहारी ॥17॥
फूलनि के हार डोर फूलनि की माला। फूल सौं रसिक नव रचित रसाला ॥
फूलन के आभरन फूल गूँथे केस घन। फूलनि की सारी चोली फूली नवबाला ॥
फूलनि की सेज बनी फूल बैठे धन धनी। फूलनि के महल बिचित्र विसाला ॥
फूल सों बिलास हास फूली श्रीनागरीदासि,
फूलनि की छबि देखि भई हौं निहाला ॥18॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद – राग – जोगिया आसावरी, ताल–धमार

फूल महल फूले पिय प्यारी।
फूली सेज फूल पुनि बरसत फूले फूल भये हितकारी ॥
फूल की मुसिकनि चितवनि फूल की फूलि-फूलि अंसनि भुजधारी।
फूली ललित फूल लखि फूलनि फूलि फूलि फूलनि पर वारी ॥19॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद – राग – खम्माच, ताल –तिताला

देख री देखि सखी कौतिक कुञ्ज खिरकी।

कुसुम अनेक रंग रुचिर सेज्या सुरंग सीतल बहत मन्द सुगन्ध समीर की ॥ खेलत सुन्दरी स्याम अंग–अंग अभिराम ग्रीषम समयो जानि जमुना नीर छिरकी। श्रीबिहारिनदासि वारी जय श्रीस्यामा सुकुमारी सीत भीत भई प्यारी, पिय हिय हिरकी ॥20॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद - राग - स्याम कल्यान, ताल-तिताला

एरी नवल नव रंग सों बैठे भाव यों बनि बैठे फूलनि की नाव।
अद्भुत छबि फबि रही परस्पर संग सहचरि यों जगमगै जटित जराव॥
विमल जमुना जुगराज बिराजत मानो फूले फूल चित चाव।
यह कौतिक जल बिहार देखि दासिनागरी गुन निधान,
नव नागर उपजत नव नव भाव॥21॥

गुरु-पूर्णिमा : पावस महोत्सव

श्रीगुरुदेवजू के पद - राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

श्रीगुरु सेवत सबै सहाइ।
ज्यों जल मूल दियें फल फूलनि उमगि चलत अरुनाइ॥
साधन सिद्ध होत ताही छिन भ्रम तम श्रम नसि जाइ।
तिनसों प्रीति प्रतीति बढ़त छिन ही छिन सहज सवाइ॥
वृन्दावन घन नवनिकुञ्ज दम्पति सम्पति (ये) सुखदाइ।
बिहारिदास (श्री) हरिदास कृपा तें हस्तामल विमलाइ॥1॥

सतगुरु गोविंद वैद बिहारी।
दीनों मधु मथि प्रेम सु औषधि हर उपाधि उपचारी॥
नेंकु बदन दरसैं दुख जानत बिनु परसें कर नारी।
काम कुरोग ग्रसित संसृत मन तृषना हरी हमारी॥
अति निरपेक्ष उदार कहावत सन्तत सब सुखकारी।
श्रीबिहारिदास से हुते मृतक की प्रगट प्रतिज्ञा पारी॥2॥

राग - विलावल, ताल - चौताल

गुरुन कौ गुरु श्रीहरिदास आसुधीर कौ।
सन्मुख भयें अभय कीनें निजु जन जानि जिन जिनके मन सन्देह भ्रम भीर कौ॥ साधन सिद्धान्त सब कहत कवि महन्त भजन एकान्त रस हंस नीर

क्षीर कौ। निपट नित्यविहार रसरीत कौ सिंगार ऐसौ को उदार उपकारी पर पीर कौ॥ रसिक अनन्यनि भावै श्रीमुख साँवरौ गावै गुरुन कौ गुरु श्रीहरिदास आसुधीर कौ॥3॥

श्रीस्वामीजू कौ पद –

राग – मल्हार, ताल – चौताल

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहै बोलत मोरनि। नीके बादर नीके धनुष चहुँदिसि नीकौ श्रीवृन्दावन आछी नीकी मेघन की घोरनि॥ आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी नीकी बूढ़िन की रेंगनि काम किरोरनि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कैं मिलि गावत राग मल्हार जम्यौ री किसोर किसोरनि॥4॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद–

हरी हरी भूमि अरुन बूढ़ैं अरु नाचत मुदित बन मोर। सारी सुही जुही सिर गूँदें बूँद बचन मृदु स्याम गगन घन घोर॥ हरषि हरषि बरसत मन ही मन प्रेम परस्पर आनन्द हिये हिलोर। श्रीबिहारिनिदासि दंपति सुख दरसत छिन हीं छिन रंग बढ़्यौ दुहुँ ओर॥5॥

धूमरे गगन गरजत घन मन्द मन्द बरसत वर वृन्दावन सघन सरस पावस रितु जु सुहाई। चात्रिक पिक मोर मुदित नाचत गावत भरे रंग निरखि निरखि दम्पति सब सम्पति सुखदाई॥ तैसीये सरस सरद निसि आई तैसीये निकुञ्ज कुसुमनि छाई तैसीये ललना लाल लड़ाई कंठ लपटाई॥ श्रीबिहारिनिदासि गाइ गूढ़ ओढ़नी उढ़ाई रीझि रहे अंग भीजि मिलि मल्हार गाई॥6॥

श्रीस्वामीजू कौ पद–

नदित मन मृदंगी रासभूम सुकान्ति (अभिनै) सुनव गति त्रिभंगी। धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गाइतेग्रिनाभि तान तुंगी॥

रसद बिहारी बन्दे बल्लभा राधिका निसदिन रंग रंगी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी संगीत संगी ॥7॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद–

धूमरे गगन गरजि गरजि ओल्हरि आये री-बरसन कौं। तैसोई करि सिंगार स्याम सुभग अंग अंग उमगि इत अवनी रवनी पिय मुख सुख दरसन कौं॥ नान्हीं नान्हीं बूँद बचन चनक मूँद अरुन हरित प्रेम भरित पियरे पट परसन कौं। श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी स्याम सब रितु राजत रहे लटपटाइ उर सों उर सरसन कौं॥8॥

राग–मल्हार, ताल–धीमा तिताला

श्रीस्वामीजू के पद–

ये अचरज देख्यौ न सुन्यौ कहूँ नवीन मेघ सँग बीजुरी एक रस।
तामें मौज उठत अधिक बहु भाँति लस॥
मनके देखिबे को और सुख नाहीं प्यारी तूँ चितवत चितहिं जू करत बस।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारीबिहारिनिजू कौ पवित्र जस॥9॥

दामिनी कहत मेघ सौं हमारी उपमा देहिं ते झूठे एई मेघ एई बीजुरी साँची। जिन जिन हमारी उपमा दीनी तिन तिन की मति काँची॥ ऐसी कहूँ सुनी जू बूँद ते कन न्यारौ ता पटतर क्यौं दीजै समुद्र राँची॥ श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी की अटल अटल प्रीति माँची॥10॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद–

नीके द्रुम फूले फल सुभग कालिन्दी कूल इन्द्रधनुष राजैं स्याम घटनि में। नीकी ग्रह-लता कुञ्ज नीकी आली अलि गुञ्ज नीकौ राग रमि रह्यौ पिकनि की रटनि में॥ नीकी गति मन्द मन्द बिहारी आनन्दकन्द नीकौ भेद बन्यौ अरुन पीत पटनि में। श्रीबीठलबिपुल रंग ललिता के फूले अंग मिलि ते देखौगी नैननि की आछी बिधि छटनि में॥11॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद–

पावस रितु आई सबनि के मनभाई तैसोई श्रीवृन्दावन राजैं सुखदाई। तैसिय घन की घोर धनुष चहुँ ओर तैसोई नाचत मोर तैसिये चातृक पिक बोलनि सुहाई॥ तैसी भूमि हरी हरी डोलैं बूँढ़े रंग भरी लता अनुराग ढरि रही छबि छाई। निरखि नागरीदासि प्रियापिय सुखरासि विलसत मन हुलासि गावत मल्हार लाल ललना लड़ाई॥12॥

श्रीस्वामीजू के पद –

बूँदें सुहावनी (री) लागत मति भीजै तेरी चुनरी। मोहिं दै उतारि धरि राखौं बगल में सो तूँ न री॥ लगि लपटाइ रहे छाती सौं छाती लगाइ ज्यौं न आवै तोहिं बौछार की फूनरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत बीजुरी कौंधैं करि हाँ हूँ न री॥13॥

राग– गौड़ मल्हार, ताल –धमार

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहिं रिझावत। तैसिये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर तैसोई मेघ गरजि मृदंग बजावत॥ तैसिये स्याम घटा निसि सी कारी तैसिये दामिनी कौंधि दीप दिखावत। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी रीझ राधे हँसि कंठ लगावत॥14॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू के पद–

राग– मल्हार, ताल –धमार

हमारे माई स्यामाजू कौ राज।
जाके अधीन सदाई साँवरौ या ब्रज कौ सिरताज॥
यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन नाहिं आन सौं काज।
श्रीबीठलविपुलबिहारिनि के बल दिन जलधर ज्यौं गाज॥15॥

जमुनातट स्याम घटनि की पाँति।
हरित भूमि बन हरित सिखंडी बोलत अति रस माँति॥

सुरंग चूनरी की छबि दुलहिन अभरन नाना भाँति।
श्रीबीठलविपुल विनोद बिहारी सौं मिलि बिलसति किलकाँति॥16॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद–

आजु सखी आये मेह सुहाये।
गौरघटा उमड़ी आनँद में महाप्रेम झरि लाये॥
राजत धनुष चहुँदिसि नीके छिन छिन रंग सवाये।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत करत लाल मन भाये॥17॥

राग– मल्हार, ताल – तिताला

श्रीस्वामीजू के पद–

आये दिन पावस के सचु के सुबोल बोलिये जू मान न करिहौं।
घरी घरी के रुसने क्यौं बनै ते बोल बोलिये जू मन क्रम बच के।
भयो है बन्धान बहुत जतननि करि बिसरे गुन गस के॥
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी ए प्यारी बस के॥18॥

भीजन लागे री दोऊ जन।
अँचरा की ओट करत री दोउ जन॥
अति उनमत्त रहत निसिवासर राग ही के रंग रँगे री दोऊ जन।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्रेम परस्पर नृत्य करन लागे री दोऊ जन॥19॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद–

एरी सखी गगन सघन घन गरजै।
चपला चमकनि बूँदें झमकनि छबि पर मोहन लरजै॥
अञ्चल ओट चोट नागर सों नेही नेहि न बरजै।
कुञ्जमहल श्रीबिहारिन प्यारी प्रीतम की निजु अरजै॥20॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू कौ पद–

पावस रस बस बिहरें री दोऊ, बिहरें बिहारी देखि देखि मुख सुखकारी।
रतिपति अति गति उपजत अँग अँग अनंग रंग सुकुमारी॥
सारी सुही फुही फबि छबि पिय पीत बसन तन मन हारी।
वर विनोद मन मोद दुहुँकोद श्रीसरसदास अलि बलिहारी॥21॥

रसिक शिरोमणि श्रीस्वामीजू महाराज की

मंगल-बधाई

ललितप्रिये हरिदास जू, नित्यकेलि सुखदानि।
कुञ्जबिहारिनिलाड़िली, प्रगटी रस की खानि॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद – राग-ललित, ताल-धीमा तिताला

प्रगटी श्रीललित ललित ललिते।
महाप्रेम अद्‌भुत रस छीकी गुननिधि सुख सलिते॥
प्रिया-लाल कौं लाड़ लड़ावत उमगि उमगि मिलिते।
श्रीहरिदासी(जू) रसिक सिरोमनि कुञ्जकेलि कलिते॥1॥

रसिकबर प्रगटे ललित उदार।
बरषत घन ज्यौं अति आनन्दहिं महाप्रेम सुखसार॥
जो साँचौं सनमुख भयौ कोऊ दीनौ नित्यविहार॥
दासबिहारिनि अंग-संग राजत छिन छिन प्रीति अपार॥2॥

भूपर प्रगटी ललितकिसोरी।
लोक लोक अति आनन्द बाढ़्यौ भई रंगीली जोरी॥
लियें सुभाव रहित नित पिय कौ तैसीये रहै गोरी।
कुञ्जमहल रस दुर्लभ सब तें रसिक बिना कहै को री॥3॥

ललित रसभीनी हो स्यामाप्यारी जू रूप नवीनी।
लखि लालन आनंद अति बाढ़्यौ फूलि अंक भरि लीनी॥
याही के सुख में सुख पावत परम सु रसिक प्रवीनी।
श्रीहरिदासी ललित केलि हित हँसनि बधाई दीनी॥4॥

ताल – धीमा तिताला

हमारे स्वामी सिरोमनि आये।
अति आनन्दभरे सुखरासी महाप्रेम झरि लाये॥
श्रीरसिकसिरोमनि परम प्रीति सौं हँसि हँसि कैं बंतराये।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि कुञ्जकेलि दरसाये॥5॥

राग – विलावल, ताल – चौताल

कुञ्जमहल में मंगलचार।
गौरस्याम तन मन लपटाने वे उनके वे उनके हार॥
महापरम रस लेत लाड़िले उमगि उमगि आनन्द सुखसार।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि इनहीं के ये प्रान अधार॥6॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद–

कुञ्जमहल के आँगन बाजत सुखद बधाई।
बीना नाद मृदंग मधुर सुर लागत परम सुहाई॥
फूली सखी सब मंगल गावत आनन्द उर न समाई।
करि सिंगार दूलह दूलहिन बैठे उमगि बढ़ी अधिकाई॥
श्रीनरहरिदासि निरखि तृन तोरत यह छबि बरनी न जाई।
नैननि भरि सोभा रस पीवत पीवत मन न अघाई॥7॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद–

आजु की कृपा मोपै कही न जाई।
श्रीहरिदास रसिकवर प्रगटे मेरे हित अतिहीं सुखदाई॥

छिन छिन प्रति आनन्द बढ़ावत पोषत मन के भाई।
श्रीललितकिसोरी नित्य केलि में रीझि रीझि हँसि कंठ लगाई ॥8॥

प्रगट भई ललितप्रिये रंगभीनी।
श्रीकुञ्जबिहारिनि अपु बपु धार्‍यौ छिन छिन प्रीति नवीनी॥
महाभाग्य बड़भाग सिरोमनि तिनहीं इनकौं चीनी।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि सदा केलि लवलीनी॥9॥

प्रगट भई ललितप्रिये हरिदासी।
रसिकन के आनन्द भयो अति पाई सुख की रासी॥
छिन छिन गावत प्रति दुलरावत हिये सु प्रेम हुलासी।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास की जीवनि नित्यबिपुन की बासी॥10॥

सुखरासि नवेली प्रगट भई।
अनि आनन्द बढ्यौ सन्तनि कैं छिन छिन प्रीति नई॥
सहज लाड़िली नित्य विपुन की जीवन प्रान मई।
परम उदार ललित हरिदासी रसिकनि केलि दई॥11॥

महल में बाजत बधाई नीकी।
प्रियालाल अति हीं आनन्दे उमँगि बढ़ी निजु ही की॥
गुप्त रीति प्रगट भइ सुख निधि सहज सु बनाबानी की।
श्रीकुञ्जबिहारिनि ललित लाड़िली करी रसिक के जी की॥12॥

राग – खम्माच, ताल –तिताला

श्रीहरिदास महल ते प्रगटे बिपुन निसान बजाये जू।
अद्भुत प्रेम दियौ तिनहिंन कौं जे जे सरने आये जू॥
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस के भये मनोरथ भाये जू।
नागरि नरहरिदास रसिकवर सबके हिये सिराये जू॥13॥

अति भली भई नित ललिते जू प्रगटीं भाग्य हमारे जागे री।
अब मिलि हैं पिय कुञ्जबिहारी रोम रोम अनुरागे री॥
चितवनि हँसनि लसनि सुखरासी कामकेलि रस पागे री।
श्रीहरिदास रसिक की जीवनि हँसि हँसि कंठनि लागे री॥14॥

राग – भैरवी, ताल – तिताला

भादों सुकल अष्टमी भू पर प्रगटे श्रीहरिदास।
घर घर प्रति अति होत कुलाहल नर नारीन हुलास॥
उदित मुदित दुति भानु किरन ज्यौं पूरन प्रेम प्रकास।
बिपुल विनोद भयौ सबहिन कैं संग बिहारिनिदास॥15॥

रसनिधि स्वामी अष्टमी आई।
भादौं सुकल पच्छ रसिकन हित ललित केलि संग लाई॥
साधुन कैं अनुराग भयौ अति प्रेम बढ़्यौ अधिकाई।
श्रीहरिदास रसिकवर प्रगटे गौरस्याम सुखदाई॥16॥

महल तें प्रगटे श्रीहरिदास।
सुखसागर नागर रसभीनें अद्‌भुत प्रेम विलास॥
सहज सनेह प्रीतम आनन्दनिधि गौरस्याम लियें पास।
ललित केलि रसिकन कौं दीनी निजु वृन्दावन वास॥17॥

प्रगटे श्रीहरि श्रीहरिदास।
गुप्त रीति रसिकन (प्रगट) दरसाई अद्‌भुत प्रेम विलास॥
छिन छिन प्रति दुलरावत गावत तन मन लियें हुलास।
अति आनन्द भयौ सबहिन कें ललितकिसोरी पास॥18॥

प्रगट भये श्रीस्वामी हरिदास।
गौरस्याम अंग संग दरसावत बरसत केलि विलास॥

छिन छिन प्रति अति मोद बढ़ावत महामधुर मृदु हास।
श्रीविपुलबिहारिनिदास रसिकवर हिये सु प्रेम हुलास॥19॥

प्रगट भई प्यारी ललित उदार।
गुप्तरीति प्रगट करी सुखनिधि निरवधि नित्यविहार॥
अति आनन्द भयो सन्तनि कैं बाढ़्यौ प्रेम अपार।
रसिकसिरोमनि की निजु जीवन पाई (है) प्रान अधार॥20॥

महल तें प्रगट भई सुखदाई।
गुप्त केलि दरसाय रसिकवर प्रेम प्रीति उर लाई॥
इनहीं के हित श्रीकुञ्जबिहारिनि लाल अधीन सदाई।
श्रीहरिदास ललित लखि रसिकनि कीनी परम बधाई॥21॥

राग - बरवा, ताल - धमार

आजु बधाई कुञ्जमहल में बाजत परम सुहाई जू।
ललित प्रिये रसरासि उदौ करि नित्यकेलि दरसाई जू॥
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस मिलि महाप्रेम झरि लाई जू।
श्रीनागरि नरहरिदास रसिक कैं आनन्द उर न समाई जू॥22॥
आजु बधाई रंगमहल में बाजत परम सुहाई जू।
गौरस्याम कौ आनंद प्रगट्यौ सब सखियन मिलि गुन गाई जू॥
देत असीम सदा चिरजीवौ इह आनन्द लेहु लड़ाई जू।
श्रीहरिदासी की निजु जोरी करत केलि मन भाई जू॥23॥

राग - मल्हार, ताल - चौताल

श्रीहरिदास सदा सुख मेरे।
बरसत घन सम अति आनन्दहिं जुग रूप सुधा रस घेरें॥

रसिकन के हिय पोषत तोषत गौरस्याम लियें नेरें।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि महाप्रेम के फेरें ॥24॥

धन्य धन्य दिन घरी धन्य धन्य छिन पल धन्य धन्य श्रीहरिदासी अवतरी। धन्य धन्य जुगल रस बरसत इन्द्र सम धन्य धन्य रसिकनि हिय अवनि भरी॥ धन्य धन्य विपुलबिहारिनिदासी धन्य धन्य यह जननि बरी।धन्य धन्य नर नारी मंगल गावत नाचत धन्य धन्य कहि कहि अनुसरी॥ धन्य धन्य दसों दिसा भई प्रगट नई रस रीति, धन्य धन्य नित्यविहार लै उच्चरी। धन्य धन्य रसिक ललित की जीवन धन्य धन्य निरखि निरखि नैंन सुफल करी॥25॥

श्रीहरि श्रीहरिदास नित्य यह धाम।
भादव सुकल अष्टमी के दिन भयो मनोरथ पूरम काम॥
कुञ्जबिहारीबिहारिनि के संग राग रंग रस बस अभिराम।
विपुल प्रेम अनुराग भाग सुख दरस परस पद स्यामा स्याम॥26॥

राग – जोगिया आसावरी, ताल – धमार

कुञ्जनि मंगल मंगलचार।
प्रगटी रसिक अनन्य मुकुटमनि ललिता रूप उदार॥
श्रीहरिदासी निजु नाम धाम नित्य रसकनि प्रान अधार।
पीताम्बर लखि मौज रसिकनी पहिरायौ उर हार॥27॥

बधाई बाजति है सुखदानी।
प्रगटी श्रीहरिदासि स्वामिनी नित्यबिहारिनिरानी॥
रसिक अनन्य सिरोमनि जीवनि सोभा सहज सुहानी।
श्रीवृन्दाविपुन बिहार प्रकास्यो बिपुल विनोद रिझानी॥28॥

प्रगटे श्रीस्वामी हरिदास।
आनन्द को घन इच्छा वपु धरि बरसत जुगल विलास॥
कुहुकि उठे बन मोर रसिक जन सींचै हृदै निवास।
श्रीविपुल प्रेम रसराज रासि रस बाढ़्यौ सिन्धु हुलास॥29॥

मंगल कुञ्जमहल में गावति।
प्रगटी श्रीहरिदासदुलारी फूली अंग न मावति॥
श्रीकुञ्जबिहारीबिहारिनि दोऊ उमगि उमगि दुलरावति।
भादों सुकल अष्टमी सुभ दिन सोभा कहत न आवति॥
श्रीवृन्दावन रसभूमि प्रकास्यौ रसिकन हिय सरसावति।
श्रीबिपुल चरन परताप बिहारिनिदासी नैंन सिरावति॥30॥

श्रीस्वामी प्रगटे रसिकमनि भूप।
श्रीहरिदास नाम निजु रसनिधि कुञ्जबिहारिनि रूप॥
भादों सुकल अष्टमी मंगल नित्यबिहार अनूप।
उमड़े घन रसिकन हिय माहीं बरषनि सरस सरूप॥31॥

राग – मल्हार, ताल – तिताला

प्रगटी श्रीहरिदासिदुलारी।
भादों सुकल अष्टमी मंगल अंग अंग उजियारी॥
बाजत सुखद बधाई कुञ्जनि निरतत कुञ्जबिहारी।
कुञ्जबिहारिनि रूप अनूपम महाकेलि विस्तारी।
श्रीबिपुलबिहारिनि सरस नागरी सोभा नैन निहारी॥32॥

महल में बाजति सुखद बधाई।
प्रगटी श्रीहरिदासिस्वामिनी रसिक जननि सुखदाई॥
भादों सुकल अष्टमी अद्भुत सोभा कही न जाई।
कमलबदन लखि कुञ्जबिहारिनि फूली अंग न माई॥

श्रीविपुलबिहारिनिदासि सरस को सुख नैंननि दरसाई।
श्रीनागरि रूप उजागरि छबि पर माधुरीदासि बलिजाई॥33॥

राग – मारू

सुखद बधाई बाजै श्रीवृन्दावनधाम। प्रगट्यौ कुल कोटि अनन्यनि की मनि रसिक जननि विश्राम॥ श्रीस्वामीहरिदास नाम निज अद्भुत पूरन काम। राख्यो बंस बिहार कौ जस छयौ बिमल अभिराम॥ नित्यबिहार अहार सुखद सुख दाता स्यामा स्याम। श्रीविपुलविहारिनिदासि लड़ावति सरस जामिनी जाम॥34॥

रसिकवर श्रीहरीरामजी व्यासजू कौ पद–

अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास।
श्रीकुञ्जबिहारी सेये बिन छिन न करी काहू की आस॥
सेवा सावधान अति जानि सुघर गावत (दिन) रस रास।
ऐसौ रसिक भयौ नहिं ह्वै है भूमंडल आकास॥
देह विदेह भये जीवत ही बिसरे बिस्व बिलास।
श्रीवृन्दावन रेनु तन मन भजि तजि लोक वेद की त्रास॥
प्रीति रीति कीनी सबहिन सों किये न खास खवास।
अपनो व्रत यह और निभायो जौलौं कंठ उसास॥
सुरपति भूपति कञ्चन कामिनि जिनके भाये घास।
अबके साधु व्यास हमहूँ से जगत करत उपहास॥35॥

श्रीस्वामी अग्रदासजू कौ कवित्त–

नमो नमो श्रीहरिदास वृन्दाविपिन बास वर प्रान सर्वस बाँकेबिहारी।
स्यामा–स्याम जुगल रूप माधुर्य के रसिक रिझावर प्रेमावतारी॥
परम बैरागनिधि बसत निधिबन सदा भावना लीन सु प्रबीन भारी।
कामना कल्पतरु सकल संतापहरु अग्रदास अलि कल्यानकारी॥36॥

श्रीस्वामी नाभादासजू कौ छप्पय-

जुगल नाम सौं नेम जपत नित कुञ्जबिहारी।
अवलोकत रहैं केलि सखी सुख के अधिकारी॥
गान-कला गंधर्व स्यामा-स्याम को तोषैं।
उत्तम भोग लगाय मोर मरकट तिमि पोषैं॥
नृपति द्वार ठाड़े रहैं दरसन आसा जास की।
आसुधीर उद्योत करि रसिक छाप हरिदास की॥37॥

श्रीगोविन्दस्वामीजू कौ सवैया-

जा पथ कौ पथ लेत महामुनि मूँदत नैंन गहैं नित नाँकौ।
जा पथ को पछितात हैं वेद लहैं नहीं भेद रहै जकि जाकौ॥
सो पथ श्रीहरिदास लह्यौ रसरीति की प्रीति चलाय निसाँकौ।
निसाननि बाजत गाजत गोबिंद रसिक अनन्यनि कौ पथ बाँकौ॥38॥

प्रगट्यौ कुल कोटि अनन्यनि की मनि धन्य कहैं जग जानि नम्यो।
परमारथ सिद्ध महन्त इतै उत स्वारथ साहिन दुःख दम्यौ॥
श्रीबिहारी बिहारिनिदास लै संग अनंग के रंग रिझाय रम्यो।
ऐसो निस्प्रेही को उपहार करै श्रीहरिदास की राति न और जम्यो॥39॥

हम बेपरवाह बिहारिन के।
श्रीहरिदास के गर्व भरे हम नेह अनन्य निहारिन के।
महामधुरे रसपान करें अवसान खता सिलहारिन के॥
दियो नहिं लेहि ते माँगहि क्यों बरने गुन कौन तिहारिन के।
किये रहे ऐंड़ बिहारी हू सों (हम) बेपरवाह बिहारिन के॥40॥

राख्यो बंश बिहार को, भू प्रगटे श्रीहरिदास।
इन बिन को उपदेस तो, इष्ट अनन्य उपास॥

इष्ट अनन्य उपास त्रास, सुनि होत सबनि मन।
साधन विविध किये, दुःख दिये कहा तन॥
श्रीबिहारिनदास प्रबोध सोध श्रुति सुमृति भाख्यौ।
अति दुल्लभ में दुल्लभ सुल्लभ हस्तामल राख्यौ॥41॥

श्रीहरिदास कृपानिधि सागर हैं।
निसदिन नैनन के डोरनि सों, झुलवति नागरि नागर हैं॥
सरस गान करि रिझवति दम्पति, सब रसिकन तें आगर हैं।
श्रीललितकिंसोरी विजै रूप धरि, निधिवन वास उजागर हैं॥42॥

श्री बिहारी बिहारिन और स्वामी जी अभेद हैं। श्रीहरिदास किधौं हरि आप बिहारी।
एक ही रूप अनूप विराजत एक हिये रस वैस तिहारी।
एक ही प्रान समान सखी वपु खेलत द्वै दृग दृष्टि निहारी॥
स्वामिनी स्याम अनन्य भजैं भ्रम दूर कियो तिनकी बलिहारी।
श्रीबिहारिनदास के भेद नहीं श्रीहरिदास किधौं हरि आप बिहारी॥43॥

सरि श्रीहरिदास की को करि हैं।
कर्म धर्म भक्ति मुक्ति इति मरजादहिं को टरि हैं।
अंस कला अवतार नखे ब्रज के रस सिंधुहि को तरि हैं॥
रस रीति सौं प्रीति प्रतीति यहै श्रीबिहारिनदासहिं जो बरि हैं।
जिनकैं सुख सार बिहार सही सरि श्रीहरिदास की को करि हैं॥44॥

श्रीहरिदास रसिकवर प्रगटे नित्य सुकेलि उदारा हो।
जोई जोई सन्मुख भरे कुँवरि के देत महासुख सारा हो॥
गौर स्याम को है निज आनन्द करि राखी उर हारा हो।
सखी शिरोमणि परम लाड़िली ललित प्रानतें प्यारा हो॥45॥

अनन्य जनन को न्यारोई तोरा।
फबी अति ऐंड सबै मन मैंड सदा संग क्रीडत कुञ्ज किसोरा।
रसरीति सों प्रीति प्रतीति निरन्तर चौंप बढ़ी जैसे चन्द चकोरा॥
अति आनन्द में अमनेक विराजत गाजत भाजत लोग लटोरा।
सरस शिरोमणि श्रीहरिदासी अनन्य जनन्य को न्यारोई तोरा॥46॥

तो सी तू ही हरिदास दुलारी।
तेरी सरि दूजो नहिं कोई तेरेई रस बस कुञ्जबिहारी॥
तेरो रूप कहत नहिं आवे तैसीये तेरी प्रीति महारी।
तैसीये ललित केलि सुखरासी रसिकसिरोमणि प्राण अधारी॥47॥

श्रीहरिदास रसिक अनन्य बिनु कापै परत बिहार बखान्यौं।
कर्म ज्ञान और भक्ति ब्रज विभौ बाकस छांड़ि मधुर रस छान्यौ॥
साधक सिद्ध प्रसिद्ध प्रसंसित जहाँ तहाँ जब जब जस जान्यौ।
ललिता रूप पलटि प्रगटे श्रीबिहारिनिदासि कृपा पहिचान्यौ॥48॥

हौं तो श्रीहरिदासी जू की दासी।
राखी अंग संग नित्य केलिमें कीनी अद्भुत प्रेम विलासी॥
रीझि रीझि मेरी मेरी कहि छिन छिन हिये हुलासी।
श्रीकुञ्जबिहारिन ललितकिसोरी सदा निरन्तर पासी॥49॥

हमारे श्रीहरिदास महा सुखदाई।
जोई जोई रुचै करै हित सोई पोषत मन के भाई॥
हरषि हरषि अनुराग बढ़ावत चितवन रस बरसाई।
श्रीललितकिसोरी कुञ्जबिहारन मिलत मिलत न अघाई॥50॥

बारक श्रीहरिदास बिलोकत तेल की बूँद समुद्र तरी।
बादि करें श्रम साधन कोटिक पंक में ढारि भरी गगरी॥

न तुलै करुणालय लाड़िली को बल लालहिं लै अनुराग ढरी।
श्रीबिहारिनदासि ह्वै सेय तिन्हें जिन दंपति संपति सांचि धरी॥51॥

हम अनन्य श्रीस्वामी हरिदास वंशी।
नित्य सर्वोपर बिहारी वृन्दाविपिन सकल संदेह गत ग्रन्थ नँसी। जै श्रीवर बिहारनदास हरषि गावत सुजस सेष श्रुति थकित श्रीमुख प्रसंसी॥ और स्थूल सूक्ष्म घनें को गनें सबै जाने कला अंस अंसी। जै श्रीबिपुल बरराज रस रीति के रसिक धनि हम अनन्य श्रीस्वामी हरिदासी वंशी॥52॥

रस-सागर श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेवजू की बधाई

दोहा

अगहन शुकला गौरस्याम वपु श्रीविहारिदास दरसाय।
विपुल पञ्चमी गाइहौं मन वच सीस नवाय॥

राग – ललित, ताल – धीमा तिताला

श्रीकुञ्जबिहारी जा दिन प्रगटे बिपुल पञ्चमी सोई।
अगहन पच्छ उज्यारी सहचरी भई रजनी तम भोई॥
श्रीगुरु बन जोरी की जीवन रसिकराज रस-राज समोई।
श्रीबिहारीबिहारिनिदास की आसा और न जानै कोई॥1॥

अगहन सुकल पञ्चमी के दिन बीठलबिपुल प्रकासे।
श्रीहरिदास कृपा की मूरति दरस ताप त्रय नासे॥
श्रीवृन्दावन स्याम स्वामिनी सहचरि के सुख भासे।
श्रीसरनदास अनयास सकल सुख दरसे परसि उपासे॥2॥

प्रगट्यौ बिपुल रसन कौ सागर।
श्रीहरिदास प्रेम की मूरति बीठल नाम उजागर॥
फूले रसिक नरेस भ्रमर जन गावत रस जस गुन के आगर।
अगहन सुकल पञ्चमी को सुख दियौ है नागरी नागर॥3॥

राग – विलावल, ताल – चौताल

नरवर जय जय करत अहो अब अगहन सुकल पंचमी आई।
स्वामी समुद जुगल रस घन ह्वै बरसे विपुल रसिक सुखदाई॥
नवक्षा खेत बीज निजु प्रेमा सुफल फले ऊसर सरसाई।
प्रगट्यौ धर्म अवनि परिपूरन पीताम्बर उर तृषा बुझाई॥4॥
अगहन सुकला आई माई साज समाज करो री पाँचैं।
पोथी खोलि पुरानी बानी वर्ष गाँठ दिन बाँचैं॥
आदि अनादि बिपुल वृन्दावन सहचरि वपु सुख साँचैं।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ उदित मुदित मन नाँचैं॥5॥
दिव्य रूप रस गन्ध सपरसी पंच पंचमी जानैं।
अगहन सुकला श्रीस्वामीजू बिपुल बिनोदहि बानैं॥
श्रीबिहारीबिहारिनिदास मनोरथ सरस करत गुन गानैं।
श्रीनरहरि रूप रसिकवर सुन्दर पीताम्बर पहिचानैं॥6॥

राग – ईमन, ताल – तिताला

मंगल कुञ्जभवन मधि आज।
श्रीहरिदास बंस की सोभा श्रीमुख गावत करत समाज॥
बीठलबिपुल विनोद पंचमी सहचरि कुल कौ दीनौ राज।
रसिक रसिकनी रसिक सहेली प्रगट भई सिरताज॥7॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद– राग – भैरवी, ताल –अद्धा तिताला

आज हमारे महल पंचमी।
श्रीहरिदास बिपुल परकासी बरषी विपिन अमी ॥
श्रीबिहारीबिहारिनिदास सरस रस कहा कहौं उपमी।
श्रीनरहरिरसिक निरखि सुख पायौ पीतांबर षिय संग रमी ॥8 ॥

राग – भैरवी, ताल – तिताला

जै स्वामी जै स्वामी स्वामी जै स्वामी धुनि छाई।
प्रगट्यौ बिपुल विनोद हमारे अगहन सुकल पंचमी आई ॥
धाम स्यामस्यामा सहचरि कौ करि सिंगार अभिषेक बधाई।
अछत तिलक छिरकि दधि गावत पीतांबर पिय लाड़ लड़ाई ॥9 ॥

अगहन सुकल पंचमी आई, आजु बधाई देखौ री माई।
नित्य बिहार विपुन सुख भुव पर श्रीहरिदासि बनाई ॥
प्रगटे विपुल विनोद बिहारी श्रीबिहारिनिदासि दिखाई।
श्रीसरस नरहरी रूप रसिक लखि पीताम्बर बलि जाई ॥10 ॥

अगहन सुकल पंचमी आई।
श्रीबीठलबिपुल महल तें प्रगटे रसिकनि के सुखदाई ॥
श्रीराधासरन सखियनि मिलि गावति अति आनंद बधाई।
श्रीहरिदास के बंस उजागर रस सागर नहिं थाई ॥11 ॥

श्रीबाँकेबिहारीजू महाराज के प्राकट्य महोत्सव की

卐 मंगल बधाई 卐

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

राग – जोगिया आसावरी, ताल – धमार

बाँके बिरदनि विदित बिहारी।
इछ्या विग्रह धरि लीला वपु सब अवतारनि पर अवतारी।
लछमीपति व्रजपति कौं दुर्लभ इनतैं कौन बड़ौ अधिकारी॥
नित्यकिसोर निरंतर विहरत सेवत श्रीहरिदास दुलारी।
ऐंडि ऐंडाइल अरुन कमल वाँके बिरदनि विदित बिहारी॥1॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद-

राग – सारंग, ताल – धमार

हमारें बिहारी उत्सव आज।
अति प्रसन्न भई नित्यलाड़िलीं सुधर्‍यौ सबही काज॥
महाप्रेम अनुराग बढ़्यौ है बनि गयौ सबही साज।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि दियौ कुञ्ज कौ राज॥2॥

प्रगट भये श्रीकुञ्जबिहारी।
रूप अनूप सकल गुन सीवाँ सब अवतारनि के अवतारी॥
नित्यकिसोर निरन्तर विहरत अपनी प्रानप्रिया उर धारी।
जनम करम जिनके परिपूरन चहूँ ओर जगमग सहचारी॥
एकहि रूप अनूप रूप धरि भक्तनि हित लीला विस्तारी।
श्रीवृन्दाबिपुन विहार सार रस रसिकनि जीवनि जीव जिवारी॥
श्रीहरिदास कलपतरु जोरी रसना बरनें सु कहा विचारी।
ललितविनोद मोद रस छाके श्रीरसिकसखी छिनु छिनु बलिहारी॥3॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ पद- ताल – दादरा

रसिक हरिदास के बाँकेबिहारी।
लछिमीपति व्रजपति अति दुर्गम रास रसिकवर सरन तिहारी॥
अद्भुत धाम नित्य वृन्दावन नित्यकिसोर किसोरी प्यारी।
महल निकुञ्ज बिहार सार सुख इच्छ्या विग्रह धरि अवतारी॥
बाँके विरद बुलावत साँचे महाप्रेम अद्भुत छवि (सुख) भारी।
रसिक रूप अवलोकित सोभा श्रीस्वामी जू के अधिकारी॥4॥

राग – रासबहार, ताल – तिताला

घन तैं लसति नीलमनि तन दुति अति अद्भुत कल सोभा छबी।
झलमलात मुख दृग श्रुति कुण्डल ललित पाग पर कलँगी फबी॥
मनमथ रति दम्पति पर वारौं कमल चन्द सुन्दरता रबी।
स्वामी हरिदास जू कौ डंका बाज्यौ औरनि की डुगडुगी दबी॥5॥

श्रीस्वामी राधासरनदेवजू कौ पद राग – खम्माच, ताल – तिताला

ललिता हरिदासी के आँगन सुखद बधाई बाजैं हो।
महल ते प्रगटे श्रीबाँकेबिहारी रसिकनि के सुख काजैं हो॥
सखी सहेली सहचरि गावति अति आनन्द समाजैं हो।
श्रीराधासरन छबि निरखत बीठलबिपुल प्रेम सुख साजैं हो॥6॥

राग – सारंग

आजु हमारे मंगल माई।
मंगसिर सुदि सुकल पञ्चमी आनन्द की निधि आई॥
भवन भवन प्रति बन्दन माला तोरन धुजा सुहाई।
बाँके रसिकबिहारी कौ सुभ प्रगट दिवस सुखदाई॥
श्रीहरिदासी रंगमहल में बाँटत सुखद बधाई।
श्रीबिपुलबिहारिनि नागरि फूली नवल प्रेम सरसाई॥

बाजे बिबिध बजावैं गावैं महामधुर धुनि छाई।
करत कुलाहल सुखद सहचरी कुञ्ज-कुञ्ज उठि धाई॥
प्रानपियारे अधिक सिंगारे छिन-छिन छबि हुलसाई।
सरबसु प्रान करत न्यौछावरि मनु नैन सजीवनि पाई॥
श्रीनरहरिदासि रासि रस सुख की अति बरषा बरषाई।
लाल लड़ैती की छवि ऊपर श्रीरसिकदासि बलि जाई॥7॥

अनन्य मुकुटमनि श्रीस्वामी बिहारिनदेवजू की मंगल-बधाई

रसिकवर श्रीस्वामी व्यासजी कौ पद -

ताल -दादरा

साँची प्रीति बिहारिनिदासै।
कै करुवा कै कुञ्ज कामरी कै थर श्रीस्वामी हरिदासै॥
प्रतिबाधक सहि सकत न तिनकौं जानत नहीं कहा कहि त्रासै।
महामाधुरी मत्त मुदित ह्वै गावत रस जस जगत उदासै॥
छिन ही छिन परतीति बढ़त रसरीति निरखि बिबि दिन बिलासै।
अँग संग नित्यबिहार बिलोकत यहै आस निज बन बसि व्यासै॥1॥

श्रीस्वामी नवलदासजू कौ पद-

राग - रासबहार, ताल -तिताला

एक ही सिंगार तन एक प्रान एक मन एक ही स्वरूप कापै परत बखानी है। एक ही बरन अंग भूषन बसन सुरंग एक ही सुभाव प्रेम रंग रससानी है॥ एक ही सुदृष्टि सखी नैनन सों नैन जोरैं एक ही समाज राग रंग सुखदानी है। नवल निहार दोऊ पटतर कौं न कोऊ श्रीबिहारिनिदासि किधौं बिहारिनि रानी है॥2॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद- राग – मल्हार, ताल – तिताला

आज बधाई आई री माई।
नव वन नव निकुञ्ज नव पल्लव लखि सोभा अधिकाई॥
रितु पावस सावन तिथि तृतिया कौतिक सहचरी आई।
मन्द मन्द पग धरति अवनि पै नूपुर गरजि सुहाई॥
अलकावलि घन स्यामगौर तन दामिनि कोटि निकाई।
दृग कटाच्छि करि पवन रवन हिय रूप लहरि झरलाई॥
तैसेई वसन सुरंग अंग में निरखि काम सिर नाई।
लखी अभूत सहेली भू पर प्रिया पीव हिय लाई॥
श्रीहरिदासी बंस जानिकें बिपुल सरस सुखदाई।
श्रीनरहरिरसिक सखी सुख पायौ पीताम्बर पहिराई॥3॥

सावन तीज रूप धरि आई।
कच घनघोर दामिनी दमकनि राग मलारनि धुनि गरजाई॥
रूप लहरि सों धनुष चहूँ दिस जल श्रमकन बूँदन झरिलाई।
अरुन वसन आभूषन की छवि प्रिया प्रान हिंडोर झुलाई॥
नाम बिहारिनिदासि सखी कौ सरस मनोरथ की मन भाई।
निरखत बलि पीताम्बर दीनों श्रीहरिदासी बिपुल बनाई॥4

स्यामा धाम बाम रितु पावस सावन तीज हिंडोरे झूली।
श्रीहरिदासी संग बिपुल कुल बिहारिनिदासि सखी समतूली॥
श्रीनागरीनवल माधुरी अँग संग सरस सहचरी गुननिधि फूली।
श्रीनरहरिरूपरसिक रस बरषत पीताम्बर निरखत मति भूली॥5॥

महल में मंगल आज बधाई।
प्रगटी श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी सोभा सहज सुहाई॥

सावन तीज सरस रस भीजी रीझे रसिकनि राई।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस महानिधि पाई ॥6॥

सावन तीज मन भावन आई।
प्रगटी (श्री) बिहारिनिदासि बिहारनि कैं सरस प्रेम झरलाई॥
विपुल नवल अनुरागे सुहायो सोभा बरनी न जाई।
गावत मंगल गीत बधाई (श्री) नरहरिदासि लड़ाई ॥7॥

कुञ्जन में बरषत सुख मेह।
प्रगटी श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी बाढ्यौ सरस सनेह॥
सावन तीज महारस भीनी मंगल निधिवन गेह।
श्रीहरिदास रसिक को सरबस नागरि उर धरि लेहु॥8॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू की मंगल-बधाई

रास – ललित, ताल – धीमा तिताला

प्रगटे श्रीसरसदेव रसभीनें।
निधिवन नित्यविहार विलोकत प्रियालाल उर लीनें॥
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस प्रिया रस दीनें।
श्रीललित रूप रस बिबस बिहारी बिहारिनि के बल कीनें॥1॥

बजत बधाई परम सुहाई।
रास रसिक श्रीसहचरि प्रगटीं सरस प्रिया सुखदाई॥
दासबिहारिनि अँग संग राजत बिपुल प्रेम सरसाई।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर लै लै सबको आनि पहिराई॥2॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद –

प्रगटे सुखनिधि रसिक प्रवीन।
श्रीसरसदासि रस रूप उदौ करि रसिकनि हिय सुख कीन॥

श्रीबिहारिनदासि की दासि प्रकासी अँग अंग सरस नवीन।
सरद समै मिलि मंगल गावैं पीताम्बर रस भीन॥3॥

प्रगटी सरस सरस रँगभीनी।
गुप्तकेलि रस रास प्रकासी अद्‌भुत प्रीति नवीनी॥
छिन छिन प्रति आनन्द बढ़ावत महाप्रेम रस लीनी।
श्रीहरिदासि ललित वपु धार्‌यौ रसिक सु अति परबीनी॥4॥

प्रगटी श्रीसरस सरस सुख दैंन।
श्रीबिहारिनिदासि लाड़िली के सुख सोभा कहत बैंनन॥
सरद निसा सहचरि मन मोहत सोहत सुन्दर अैंन।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवन सुनत रसभरे बैंन॥5॥

राग – विलावल, ताल – चौताल

माई आजु रसमसे रस बनि बैठनि अंग अंग रोम रोम सुख भरे।
कहाँ लौं कहौं री और रहसि बहसि रस,
हाँसि ही के मिस मिलि जे जे रंग करैं॥
बार बार बदन निहारि मन वारि वारि,
अंक भरत पुनि आतुर ह्वै इत उत न टरैं।
श्रीसरसदास वारी बिबस बिहारी प्यारी,
इहि विधि तन मन मोद भरैं॥6॥

कुञ्जभवन मधि मंगलचार।
श्रीहरिदासि रसरासि विलास सरस प्रिया सुख सार॥
श्रीबिपुलबिहारिनिदासि नागरी इनहीं के ये प्रान अधार।
श्रीकिसोरी किसोरदासि मिलवत सुखरासि नृत्यत रास विहार॥7॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद – राग – भैरवी, ताल – अद्धा तिताला

सब मिलि गावत आज बधाई।
प्रगटी सहचरि सरस प्रिया की सरद महा सुखदाई॥
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि नागरि नवल लड़ाई।
श्रीरसिक उदारहिं दियौ कृपा करि पीताम्बर पहिराई॥8॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू की मंगल-बधाई

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद– राग – ललित, ताल – धीमा तिताला

प्रगटे श्रीनरहरिदेव उदार।
श्रीहरिदास ललित वपु धार्‌यौ महाप्रेम सुख सार॥
श्रीवृन्दावन सनमुख जिनने कीने जीव अपार।
रसिक सिरोमनि की निजु जीवनि निरखत नित्यविहार॥1॥

प्रगटे श्रीनरहरिदेव रँगीले।
परम कृपाल उदार सिरोमनि प्रिया प्रेम गरबीले॥
श्रीवृन्दावन की निधि एई अद्भुत रूप छबीले।
श्रीरसिकसखी अँग संग सहज ही ललितकेलि मन मीले॥2॥

राग – विलावल, ताल – चौताल

श्रीनरहरिदेव रसिकबर प्यारे।
परम प्रेम सुखरासि छबीले प्रगट भये सन्तन हितकारे॥
दासबिहारिनि सरस नागरी इनकी जीवनि प्रान अधारे।
श्रीललितकिसोरी तन मन मिलि कैं लाड़ लड़ावत नित्यबिहारे॥3॥

श्रीनरहरिदेव रसिकवर आये।
अति आनन्द भयो सबहिंन कें किये मनोरथ मन के भाये॥
छिन छिन प्रीति नई नई उपजत कहा कहौं गुन परत न गाये।
श्रीहरिदासि ललित रस भीनें गौर स्याम मिलि रस बरसाये॥4॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद–

जेठी दुतिया आई री माई।
आगें ते हरिदासि बिपुल सुख वर बिनोद दरसाई॥
सरस मनोरथ किये सबनि के नरहरि रूप धराई।
रसिक प्रिया पीताम्बर लै लै सहचरि सब पहिंराई॥5॥

जेठी दुतिया भई (है) महल में।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस नरहरी लई टहल में॥
स्यामास्याम धाम धन पायो निरखत वपु रस परी चहल में।
प्रगट्यौ धर्म रसिक सहचरि कौ पीताम्बर कौ मिल्यौ सहल में॥6॥

गावो री बधाई (माइ) मंगल गीत।
जेठी दुतिया ज्यौं ठकुराइनि प्रगट भई मोहन की मीत॥
दरस दिखावो सहचरि लावो बरष गाँठ की करिये रीति।
पीताम्बर पहिरावो सबकों रसिक प्रियाहि समीति॥7॥

आजु हमारे मंगल भये।
अबलौं भू भ्रम श्रम सब जन जे सूद उदै भ्रम तम श्रम हये॥
श्रीनरहरि स्वामी प्रगट होत ही पापी पाप ताप नसि गये।
जेठी जठर अँध्यारी दुतिया रसिकदास सीतल करि लये॥8॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू की मंगल-बधाई

श्रीमत रसिकदेव प्रगटे।
गौरस्याम कौं अति सुखदाई इनहीं के रंग जटे॥
रोम रोम अति आनन्द बरषत नित्य सुकेलि रटे।
श्रीहरिदासि ललित वपु धार्‌यौ अवधि प्रेम अघटे॥1॥

प्रगटे श्रीरसिकदेव सुखसार।
मंगल बसन्त पञ्चमी भू पर छायो नित्यबिहार॥
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिन सरस महा रिझवार।
श्रीनरहरि रसिक कृपा पहिरायौ पीताम्बर उर हार॥2॥

प्रगटे रसिक सिरोमनि राई।
आनन्द की निधि रसिक स्वामिनी अद्‌भुत रूप अनूप बनाई॥
मंगल बसन्त पञ्चमी सुभ दिन नित्यबिहारी दयो दरसाई।
श्रीहरिदास कृपा की मूरति दासि नागरी लाड़ लड़ाई॥3॥

राग – विभास

प्रगटे श्रीरसिकदेव सिरमौर।
मंगल बसन्त पञ्चमी सुभ दिन आनन्द भयो न थोर॥
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस नरहरि के चितचोर।
सरस बधाई लै पीताम्बर पहिरायो नागरि तन गौर॥4॥

राग – रामकली

प्रगटी रसिक सिरोमनि रानी।
बसन्त पञ्चमी सुभ दिन मंगल नित्य बिपुन सुखदानी॥
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनि सरस सुखन सौं सानी।
श्रीनरहरि कृपा रसिक वपु धार्‌यौ नागरि रूप लुभानी॥5॥

राग वसन्त, ताल धमार

अबकैं बसन्त अतिसै सुखदाई।
श्रीहरिदासी को सर्बस धन रसिक महल में आई॥
श्रीबिपुलबिहारिनिदासि सरस मिलि नरहरि प्रान लड़ाई।
श्रीरसिकबल्लभा प्रानप्रिया पिय पीताम्बर पहिराई॥6॥

अबकैं बसन्त सुख हो हो होरी।
प्रगटी रसिक सजीवन मेरी नव नव नेह सनेह झकोरी॥
श्रीहरिदासी दई कृपा करि बिपुल बिहार सु सरस करो री।
श्रीनरहरि प्रान रसिक मम जीवनि पीताम्बर के चित की चोरी॥7॥

अबकैं बसन्त हम भागनि पायौ।
श्रीहरिदासि कृपा सुख प्रगट्यौ बिपुल बिहार बढ़ायौ॥
श्रीसरस नरहरि ने सुख अपनों सो हम ऊपर छायौ।
श्रीरसिक स्वामिनी निरखि रीझि के पीताम्बर पहिरायौ॥8॥

अबकैं बसन्त अति अद्भुत होरी।
श्रीहरिदासि प्रगट करि दीनी बिपुल बिहार सुसरस करोरी॥
श्रीनरहरिदासि रसिक मुकुटमनि जै जै शब्द कहोरी।
पीताम्बरदासी कौं दीजै नव नव नेह नयौ निबहोरी॥9॥

राग – बसन्त

रसिक बसन्त कुञ्ज में आये।
श्रीललिता हरिदासि सखी के विपुल विनोद फूल बरसाये॥
दासिबिहारिनि करत पाँवड़े सरस आरती थार सजाये।
नरहरिदासि बसन सुविंजन अमृत जल दै पान खवाये॥

अतर गुलाल अबीर अरगजा छिरकि गुलाब परसपर धाये।
बाजत तार मृदंग झाँझ डफ अति ऊँचे सुर धुनि लै गाये॥
रीझि प्रियाजू रसिक सखी कौं भूषन बसन सकल पहिराये।
पीताम्बर दासी कौं दीनों सैंन कुञ्ज लखि अति सुख पाये॥ 10 ॥

खेलि बसन्त कुञ्ज में आये।
आगे स्याम स्वामिनी पाछैं सहचरिगन चहुँदिसि उमड़ाये॥
पियरे बसन प्रियाजू पहिरैं पियरे ही पिय कौं पहिराये।
पियरे ही भूषन सब अंगनि प्रीति सहचरी रंग रँगाये॥
केसरि अगर कपूर कुमकुमा बसन सरीर कछू लपटाये।
अतर सुगंध बहुत विधि छिरक्यौ अति सुवास मन भ्रमर भुलाये॥
सनमुख चली सहचरी पिय कें कलस पाँवड़े सुवन सुहाये।
मंगल गीत रीति आवनि की सुखद समाज नृत्य करि गाये॥
रतन जटित सिंघासन आसन सुखद फूल स्वेत छबि छाये।
जय-जय धुनि इह कहत सखीगन प्रानप्रिया पिय कौं बैठाये॥
देत असीम अचल सिंहासन इहीं कुञ्ज मधि रहो सदा ये।
सामिग्री भोजन जो चाहत सोई परसि रसिकवर पाये॥
रूप सुधारस भरि जमुना कों नीर पीव कों लै अँचवाये।
रुचिर सिंगार सेज सुख कीन्हों दरसि परम सुख नैंन सिराये॥
भये मनोरथ रसिक सखी के नव-निकुञ्ज में सुख दरसाये।
रीझि कह्यौ पीताम्बर मेरौ लै सहचरि हम अति सुख पाये॥ 11 ॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू की
मंगल – बधाई

राग – जोगिया आसावरी, ताल – धमार

लोक वेद नवधा प्रसिद्ध सुख कौन तरै लीला अवतार।
कर्म धर्म की आस त्रास नित अति भैभीत बहत संसार॥
लोभी लोग भोग के लालच पचि मरते विद्या आचार।
जो न प्रगटती ललितकिसोरी तौ न प्रगटतो नित्यबिहार॥1॥

श्रीस्वामी सीलसखीजू के पद – राग – विलावत, ताल –चौताल

प्रिय हित अैंन हौ जू लाल सुख दैंन हौ जू दुहुँन चित चैन हौ जू महा सुख सार हौ। रसिक सिरताज हौ जू प्रेम के जहाज हौ जू नेह के समाज हौ जू निरधार हौ॥ अति रिझवार हौ जू सारन को सार हौ जू दुख निरवार हौ जू परम उदार हौ। श्रीललितकिसोरी हौ जू ललित हरिदासी हौ जू अैंड गरबीली हौ जू ललित बिहार हौ॥2॥

लाड़िली कौ लाड़ किधौं प्रीतम कौ प्रेम किधौं महामाधुरी तरंग आनन्द निकेत री। सोभा कौ सिंगार किधौं अवधि रिझवारता की रसिक दुलारी प्यार पिय सुख देत री। करुनानिधान गुन कहाँ लौं बखान करौं सुरति सुहाग फूल फूल्यौ रसखेत री। श्रीललितकिसोरी रूप प्रगट कृपा अनूप राख्यौ रस बस निज रसिकन सुहेत री॥3॥

राग रासवहार, ताल तिताला

अगम ते अगम अति दुर्लभ निकुञ्ज रस सुल्लभ दिखाय रूप रसिकन दृढ़ायौ है। घुरत निसान गुन बिरद बखानैं कौन साधक अरु सिद्धन प्रसंसि सिरनायौ है। सुभग सिंहासन निधिवन (श्री) निकुञ्ज धाम ललितकिसोरी

नाम बिरदवर पायौ है। रसिक नृपति वर बंस रसराज रानी रसिक तिलक दै राज कौ पठायौ है॥4॥

श्रीहरिदास के गर्व भर्‍यौ हँसि दीनौं लड़ैती ने पत्र निसाँकौ।
केलि कलोलनि क्रीड़त हैं नित रंग बढ़ावत हैं दुहुँ घाँकौ॥
औरनि कौ मन और पर्‍यौ इन प्रेम समुद्र कौ बाँध्यौ है नाँकौ।
बाँके की बाँकी चितौनी में बींध्यौ सु दास किसोरी कौ पैंड़ो है बाँकौ॥5॥

श्रीगुरुदेव की साहिबी में अमनेक अनन्य भयौ अलबेला।
एकही रीति की प्रीति प्रतीति है बाँकी लड़ैती सौं कीनौं है मेला॥
नेह के पुञ्ज निकुञ्ज मढ्यौ हरिदास कौ पूत सपूत अकेला॥
दासि किसोरी जू प्रेम समुद्र में कूदि पर्‍यौ निसंक दै हेला॥6॥

लाड़िली कौ लाड़ किधौं प्रीतम कौ प्रेम नित्य सरस गुन गर्व रस चाड़न समेत हैं। सेज कौ सुबास किधौं रंग कौ बिलास अली सुख कौ निवास मन आनन्द निकेत हैं॥ रूप की निकुञ्ज सोभा फूली हाव भावन सौं चाव चित चातुरी कौ आतुर अचेत हैं। ललितकिसोरी रूप प्रगटी कृपा अनूप रसिक अनन्यनि के आनन्द के हेत हैं॥7॥

श्रीस्वामी सहचरीदेषजू कौ पद –

प्रेम की पताका दिन रात फहरात जाकी बाजत निसान मुद वृन्दावन धाम हैं। स्यामास्याम आँखिन में नाम जस लाखन में भाषन में जात बलिहारी जन ग्राम हैं॥ परम प्रचण्ड तेज मारतण्ड हूँ ते अति सीतल ससी के सम सोभा अभिराम हैं। स्वामी हरिदासजू के दुतिय अनूप रूप ललितकिसोरी कैधौं ललित ललाम हैं॥8॥

स्वामी ललितमोहिनीदेवजू की मंगल-बधाई

राग – विलावल, स्याम कल्याण, ताल –चौताला, अद्धा तिताला

मोहिनी सी गोरी अति मोहिनी सी भोरी छबि मोहनी रँगीली रंग भरि रंग होरी है। मोहनी बिचित्र सोभा मोहनी आनन्द गोभा मोहनी छबीली संग रसिक रस बोरी है॥ मोहनी परम पास मोहनी हिये हुलास मोहनी मधुर हास मोहनी की ओरी है। मोहनी उजारी रूप मोहनी रसिक भूप मोहनी सरूप किधौं मोहनी किसोरी है॥1॥

मोहनी नवेली अलबेली संग लसै सखी मोहनी निरखि सोभा सरस सँवारी जू। मोहनी रसिक रासि मोहनी हिये हुलास मोहनी सहज प्यारी पीय हीय धारी जू॥ मोहनी रँगीली गोरी मोहनी बिचित्र भोरी मोहनी रसाल केलि परम उदारी जू। मोहनी बिसाल नैन मोहनी मधुर बैन मोहनी सुहाग भरी मोहनी निहारी जू॥2॥

राग – बसन्त बहार, ताल –तिताला

रूप के जाल पर्यौ मन मेरौ।
जोवन रस पीवत न अघातौ मुसकिन हूँ अरुझेरौ॥
कुञ्जमहल रतिपति दल छायौ बिवस भयौ बिबि नेरौ।
श्रीललितमोहनी सब दुख दीनों दुहुँन नेह घनेरौ॥3॥

खेलत आजु प्रिया नवरंगी।
चमकत रमकत लागि स्याम उर ललितमोहनी संगी॥
जोवन झलक ललक सुन्दरि की बाढ्यौ रंग अनंगी।
यह सुख पीवत जीवत हम सब देखत केलि तरंगी॥4॥

मोहनी मोहनलाल प्रिया की है निसिबासर हेत में पागी।
किये बहु जीव सनमुख जानि दियो बनवास सबै भय भागी॥
सदा सब पोष रहैं निरसोक महामधुरे कहैं बैन अनुरागी।
रहैं बन गाज निसानन बाजत प्रगट हरिदास महा बन रागी॥5॥

श्रीस्वामी राधाप्रसादजू के पद–

राग – ललित, ताल – धीमा तिताला

प्रगटे श्रीललितमोहनीदेव उदार।
रसिकन के आनन्द अति बाढ्यौ महाप्रेम सुखसार॥
श्रीवृन्दावन सुखसागर नागर ललित रूप अपार।
श्रीराधाप्रसाद सखी निरषि हरषि कें पहिरायो उर हार॥6॥

माघ एकादसी आई जू कृष्णा।
श्रीहरिदास कृपा की मूरति जनम जनम की गई तृष्णा॥
श्रीगुरु सेवा रसनिधि सिज्या करि परिहरी सब पृष्णा।
श्रीराधाप्रसाद इनहीं की सेवा और करै सो (सब) धृष्णा॥7॥

बजत बधाई परम सुखदाई।
प्रगटे परम उदार सिरोमनि श्रीललितमोहनी (अति) सुखदाई॥
प्रगट कियो रसरीति गान कौ ललित रूप रस अधिकाई।
सन्तन सेवा रस अमृत जान्यौ श्रीराधाप्रसाद बनि आई॥8॥

राग – भैरवी, ताल – अद्धा तिताला

आजु बधाई श्रीवृन्दावन।
कुञ्जमहल श्रीबिहारीबिहारिन केलि करत छिन ही छिन॥
श्रीहरिदासीजू लाड़ लड़ावत इनही कौ ये हैं धन।
श्रीललितमोहिनी की निजु जीवन ये वे वे एकै मन॥9॥

आजु बधाई श्रीवृन्दावन सुखसिंधु हिलोर।
प्रियालाल तन मन हुलसाने मनसिज सौं मेघन की ओर॥
सब सखी उमगि उमगि गुन गावैं नाचत मोर चकोर।
ललितमोहिनी के उर बिहरें नैंन चमकि चितचोर॥10॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ प्राकट्य-महोत्सव

प्रथम दिवस -	श्रीवृन्दावन कौ री चोज	(पृष्ठ 5 पर देखें)
द्वितीय दिवस -	चलौ जू कौतिक देखन जाहिं	(पृष्ठ 9 पर देखें)
तृतीय दिवस -	प्यारी सहज मनै हरि लेत	(पृष्ठ 12 पर देखें)
चतुर्थ दिवस -	चल सखी देखन जाहिं	(पृष्ठ 14 पर देखें)
पंचम दिवस -	(बना)	(पृष्ठ 16 पर देखें)

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू की मंगल-बधाई

राग - बरवा, ताल - धमार

श्रीअनन्य नृपति जू कैं नव निकुञ्ज में बाजति आज बधाई।
श्रीपीताम्बर जुगराज प्रगट भये रसिकराज सुखदाई।
भादौं प्रथम अष्टमी सुभ दिन आनन्द की निधि आई॥

श्रीबिपुलबिहारिनि सरस नरहरी रसिक सु मंगल गाई।
फूले फिरत निरखि मुख छवि कौं छिन छिन लाड़ लड़ाई॥
छायो घन अनुराग भाग बड़ सोभा कही न जाई।
श्रीनागरिदासि सुफल मनोरथ सरस बधाई पाई॥1॥

आजु महा मंगल सुखदाई।
श्रीपीताम्बरदास प्रगट भये भादौं कृष्ण अष्टमी आई॥
नित्यबिहार सार सुख अद्भुत घन दामिनी बरषा झरि लाई।
श्रीहरिदास के बंस उजागर दासनागरी लाड़ लड़ाई॥2॥

प्रगट्यो श्रीनित्यबिहारी रूप।
श्रीहरिदासी बंस उजागर श्रीपीताम्बर रस (के) भूप॥
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस कौ आनन्द सुखद सरूप।
श्रीनरहरि रसिक निकुञ्ज बधाई नागरि करत अनूप॥3॥

राग – मल्हार, ताल –तिताला

नव बन भादों मास सुहायो।
कृष्ण जन्म दिन की आठैं सुभ श्रीपीताम्बर प्रगटायो॥
नित्यबिहार सार सुख अद्भुत सो सनेह झर लायो।
बाजत ताल मृदंग मधुर धुनि सखियनि मंगल गायो॥
श्रीहरिदासी बंस उजागर बिपुल बिहार बढ़ायो।
सरस नागरी नरहरि रसिका नागरिया मन भायो॥4॥

बधाई री बाजति नवल निकुञ्ज।
श्रीपीताम्बर प्रगट होत ही बरषै सुख के पुञ्ज॥
श्रीरसिकरसिकनी रूप अनूपम रस घन उमड़्यौ आइ।
नित्यबिहार सार झरि लायौ रसिकनि हियौ भिजाइ॥

भादूं प्रथमि अष्टमी सुभ दिन अति घन स्याम सुरूप।
श्री हरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस समाज अनूप॥
श्रीनरहरि रसिक रूप भक्तन हित पूरन प्रेम प्रकासि।
गावत मंगल सखी सुखद बलि जाइ नागरीदासि॥5॥

श्रीस्वामी गोबर्धनदेवजू महाराज कौ प्रकट्य-महोत्सव

आषाढ़ सुदी १०

प्रथम दिवस -	कुञ्जबिहारी हरषि बुलाई	(पृष्ठ 47 पर देखें)
द्वितीय दिवस -	तू ना करि मान	(पृष्ठ 48 पर देखें)
तृतीय दिवस -	चलौ जू कौतिक देखन जाहिं	(पृष्ठ 9 पर देखें)
चतुर्थ दिवस -	प्यारी सहज मनै हरि लेत	(पृष्ठ 12 पर देखें)
पंचम दिवस -	सुलेहरा	(पृष्ठ 10 पर देखें)

विशिष्ट-पद

श्रीगुरुदेवजू के पद- राग- धनाश्री (पटदीप) होरी, ताल - धमार

मृदुरस रंग रंगीली नागरि रस रँगे हैं रसिक सुकुँवार।
दोऊ इकरस वैस बिराजहीं सुख साजत बिसद बिहार॥
जै श्रीवृन्दाविपिन विलोकहीं सब द्रुम दल बेलि विकास।
निज आनन्दहिं सूचहीं मिलि करत परस्पर हास॥
कुञ्जावलि कुसुमावलि अलि अवलिन के वृन्द।
कौतिक भूले कौतिकी मिलि पान करत मकरन्द॥

सुमननि सेज सहज सजैं बनि बैठे अंक निसंक।
अंगराग अँग मरगजे मानौं उपजे हैं मदन मयंक॥
कज्जल मंजुल अरुनई मिलि कलित कपोल तँबोल।
यों हिलि मिलि रस बस भये हँसि मृदु मुख मीठे बोल॥
माँग पाग धसि खसि रही सनि मृगमद सिंदूर।
अति श्रमजलनि सिथिल भये बलि राते बदन गरूर॥
दसन बसन रसना रसैं बस पान करत मन धीर।
उरज करज परसैं हँसैं रस विवस विसरि गये चीर॥
इहि रसमत्त मगन भये मनमोहन मिथुन किसोर।
बिपुनबिनोदनि बरषहीं यहै रहनि निसि भोर॥
इहि सुबास रस परसहीं दिन दरसैं केलि कलोल।
सुनि दीनं बचन आधीन के यों लीन भई बिनु मोल॥
इनके अँग संग कौ सुख को कहै अभिकृत अभिसार सिंगार।
श्रीविचित्रबिहारिनिदास कें निरवधि नित्यबिहार॥

राग – राग-सुहो विलावल, ताल – धमार

नूपुर रव श्रवन परी। सुनि स्यामहिं सुधि बिसरी॥
बिसरी सबै सुधि सुनत स्यामहिं पीत बसन कहूँ खसे।
कहूँ मुरली मुकुट कहूँ हरि प्रान प्यारी में बसे॥
जकि थकि रहे तिहि ठौर। श्रोता सुघर सिरमौर॥
श्रोता सुघर सिरमौर सुन्दर विस्वमोहन मोहिये।
सखी कछु आसक्त सूचत विवस है हरि सौं हिये॥
नित करत कुंज कौतूह। मिलि सुखद समर समूह॥
मिलि सुखद समर समूह सुर सर स्याम यों मरमनि हये।
देखि मुरलीधरनि की गति गर्व मुरली के गये॥

मोहन मुख मौन धरी। पुनि सुनिबे की साध करी॥
करी साध सुनाइ प्यारी बहुरि चरन चपल किये।
सप्त सुर संगीत वारत रीझि पिय पद उर लिये॥
प्यारी पिय अंक भरैं। आनंद आँसू उमगि ढरैं॥
ढरैं आनंद अश्रु पिय के पलक सौं पल ना लगै।
पाइ सोभासिंधु तन मन मत्त सब जामिन जगै॥
माधुरी धार बर व्योम। रसधार बर्षत रोम॥
रोम रोम बसीकरन गुन प्रिया तन सेवत सदा।
नव निकुंज बिहार राजत महामत्त मदन मदा॥
ये नित्य कौतुकी कुँवरि किसोर। जानत नहिं निसि गत भोर॥
भोर जानत नाहिं निसि गत नवल नव रुचि क्रीड़हीं।
अनन्य श्रीहरिदास अंग संग बिपुल प्रेमनि ब्रीड़हीं॥
ये बन बिहरत प्रेम प्रवीन। नागरी नेह नवीन॥
नागरी नेह नवीन छिन छिन या सुखै कासौं कहौं।
महामधुरे रस उपासक स्वादभेदी जो लहौं॥
यह रस रसिकन कौ रस सार। यह रस रूप बिसद बिहार।
रस रूप विसद बिहार जिनकैं और सुन्यौ न भावई।
जै श्रीवरबिहारिनिदास रसिकन हरषि सुजस सुनावई॥
यह रस रसिकन कियौ है निदान। यह रस सुनहु तजि अभिमान॥
अभिमान तजि भजि सुनहु प्रानी जन्म जन्म के श्रम मिटै।
प्रगट ललिता रूप श्रीहरिदास निज नामहिं रटै॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू के पद - राग - विहाग, ताल - धमार

श्रीबृन्दाविपिन बिनोद मोद अति रति मन भाई।
पुलिन नलिन नव रंग सुभग जमुना फिरि आई॥

सारस हंस चकोर मोर नृत्तत गति माई।
कमल कुञ्ज कल्पद्रुम लपटि लता ललिताई॥
चित्रित दल फल फूलनि पीत असित अरुनाई।
विविध फूल फूले मधुरितु माधविका मधु आई॥
कूजित कोकिल कीर भीर भृंगनि गुञ्जाई।
त्रिविध पवन मृदु गवन भवन मन अति रुचिदाई॥
बनबीथी विचित्र सुरंग अनंग चित्र चतुराई।
रंगमहल मनिमय प्रतिबिम्बित धार झाँई॥
कुसुमित विमल वितान लाल मुक्तन छबि छाई।
अद्‌भुत सखी सुख दम्पति सम्पति देखि सिहाई॥
रतनखचित सारोट सेज्या सौरभ सरसाई।
बैठे निकुञ्ज झरोखनि विचित्र बनै बनराई॥
छत्र चँवर जुगराज सजैं सहचरि सुखदाई।
ललितादिक झूमि झुंडनि झूमक दै दुलराई॥
एक अरगजा सरस सुगंध अबीर उड़ावत आई।
एक बाजे विविध बजावत गावत सुरनि सुहाई॥
एक नृत्त गीत संगीत उघटत सब्द सुनाई।
तान तिरप में मान जान अतिसै सुघराई॥
रुख लै स्वास सुरन सेवत सखी करत बधाई।
उड़त पराग रह्यौ रमि राग सुरंग बढ़ाई॥
करत कुञ्ज कौतूहल प्रीतम प्रियहिं रिझाई।
तब कहत प्रिया जू सौं लाल ललित मुख करत बड़ाई॥
रीझि रसिक बीरी देत बसन भूषन पहिराई।
दोऊ गुन रस रूप अनूप सकल अंग सुन्दरताई॥

प्रतिबिम्बित विवि बदन बिलोकत अति चपलाई।
अंग अंग पुलक ललक मन लालन लेत जँभाई॥
अति उदार सुकुँवार त्रिषित आतुर अकुलाई।
तब जानि बिबस मनमोहन मानिनि मृदु मुसकाई॥
तब हँसि कसि कामिनि कंत लटकि उर कंठ लगाई।
दरस परस रस सरस अधरसुधा मधु प्याई॥
मगन मन मुदित छबीली छबीले लाल लड़ाई।
गए चिकुर चन्द्रिका छूटि कुसुम मनो मधुप उड़ाई॥
कहुँ अञ्जन कहुँ बन्दन चन्दन चित्र बनाई।
इहि विधि खेलें फागु सरस अनुराग सदाई॥
न जानत कुंवरि किसोर कित नसि निसि जाई।
राग रंग अंग संग बिहरत अति सुख पाई॥
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि सुखद संग सुरति सहाई।
श्रीनागरीदासि निरखि छबि तृन तोरति बलि जाई॥

राग- धनाश्री होरी, ताल - धमार

मेरे लाल लड़ैती रंग भरे मिलि खेलत छिन छिन होरी हो।
सुरति रंग अंग अंग छिरकत नित नवल छबीली जोरी हो॥
नव गुन रस रूप बिराजहीं कोककला अति जान।
तान तरंगनि मन हरैं मिलि गावत रसिक निधान॥
प्रेम उमगि चित चौंप सौं चितवत बिबि मुख सुखरासि।
कर कपोल परसैं हँसैं अँग अंग अनंग प्रकासि॥
पुलकि पुलकि प्रीतम प्यारी लीने उर सौं उर लाइ।
महामाधुरी पान के उपजत नव नव भाइ॥

नवल निसंक अंक भरैं मन मगन भये चित चाइ।
रस सागर नागर नव क्रीड़त अति सुख पाइ॥
तान तरंग मन भाँवती छबि उपजत रति दुहुँ कोद।
रँगभीने लीने सहचरी सँग बढ़े विचित्र विनोद॥
नैंन मैंन रंग रगमये मृदु बैन सिथिल सुकुँवार।
श्रीविचित्रबिहारिनिदासि के उर आनन्द करत बिहार॥
सरस सुहागिनि सहचरी नागरि नवल किसोर।
निव नव निकुञ्ज सुख पुञ्ज में मिलि विलसत निसि भोर॥

महामत्त मनमोहनी मोहन खेलत है रस होरी हो।
प्रेम सहित सेवत सब सम्पत्ति लिये रुख सुख सोई सोरी हो॥
सखी बाजें विविधि बजावैं मधुरे सुर गावैं सहचरी चहुँ ओरी हो।
सुक पिक भृंगनि राग रह्यौ रमि सुर देत हैं मोरी मोरी हो॥
मौज मनोजनि चोज लाड़िलीलाल लेत चितै चित चोरी हो।
सौरभ सरस अंग अंग अरगजा छिरकत छबि स्यामा गोरी हो॥
छन्द बन्द तकत छबीले इत भामिनि भेद भृकुटी भरि भोरी हो।
सुर स्वासनि कसत हँसत कहि कहि रीझि रीझि कहत हो हो होरी हो॥
अंग संग सुरति हिडोरैं झूलत फूलत उर कर चिबुक टटोरी हो।
अद्‌भुत रंग अनंग प्रेम रस बिहरत कुंवरि किसोरी हो॥
दोऊ लटपटात घूँमत मद झूमत नैननि नेह नयो री हो।
मधु मकरन्द दुलहिनी दूलहु पीवत मुदित मधु घोरी हो॥
फूले बदन कमल लोचन मानों मधुप पराग प्रेम रंग रोरी हो।
रगमगे बसन कसन कंचुकी छवि बिथुरी अलक कच डोरी हो॥
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि सुखद रति बरनैं ऐसो कबि को री हो।
रहैं मगन दासि श्रीनागरी नागर नव अबिचल यह जोरी हो॥

झूलत फूलत लाड़िले मिलि अँग संग सुरति हिडोरैं।
आभूषन बाजे बाजहीं मधुर मधुर सुर थोरैं॥
सप्त सुरनि राग रमि रह्यौ गावैं हँसैं संग सहचरी चहुँ ओरैं।
मदन मुदित मन मानिनी नव नेह सौं नवल निहोरैं॥
वचन रचन सुनि लाल के प्यारी मुसिकत हैं मुख मोरैं।
दूलहु दुलहिनि लाड़ली नव रंग अनंगनि रोरैं॥
बिबि विधु बदन बिलोकहीं रँगे लोचन ललित चकोरैं।
मैन ललक पलक न लगैं यौं हँसि हँसि चिबुक टटोरैं॥
हाव भाव चित चौंप सौं कंचुकी छंद बंद छबि छोरैं।
छबि सों छैल छबि छिरकहीं अंग अगरजा रंग घोरैं॥
मौज मनोजनि चोज सों छुटै भृकुटी कटाछि झकोरैं।
रीझि रसिक रस बस भए सौरभ रससिंधु हिलोरैं॥
अधरसुधा मधु माधुरी पीयें जीयें मुखसों मुख जोरैं।
फूले अलि पराग अनुराग सों रंति रगमगे हित चित चोरैं॥
यों बिहरत नवल निकुंज में राजैं सुभग साँवल तन गोरैं।
श्रीबिहारिनिदासि लड़ावहीं भई विपुल प्रेम मन भोरैं॥
जै जै श्रीहरिदास प्रताप ते सुख लह्यौ सरस सिरमोरैं।
श्रीनागरिदास बलि बलि हौं तुम नित नव नवल किसोरैं॥

राग-काफी धनाश्री होरी, ताल - धमार

लाल मनमोहनी को।

काम कुंज कल कौतुकी मनमोहिनी हो मनमोहन मन हरि लेत।
अद्भुत रूप अनूपम छबि प्यारी पियहिं सहज सुख देत॥लाल0
केस कुसुम कबरी लसैं मोतिन मंग अभंग।
अलक झलक श्रवनन खुभी बैंदी विचित्र सुरंग॥

भ्रूभंग तरंग अनंग नचैं ललित बति लोचन लोल।
नासिका नथ निरखि कैं ललित लाल लियैं मोल॥
अरुन अधर दुति दसन की चिबुक चारु स्याम बिन्दु।
झलक कपोलन छबि छई वारों कोटि रवि इन्दु॥
चित्रित चोली उर लसै कण्ठ जगमगति पोति।
मृदु मनि लाल गुलालकी द्वै लर मोतिन जोति॥
बाहु विचित्र बलया लसैं कृसि कटि किंकिनि जाल।
पग नूपुर मनि चूरा लसैं गति मोहत मत्त मराल॥
सारी सुवन लँहगा लसैं स्याम सुभग गोरै गात।
निरखि नव नैंन सिरात स्याम खेलन कौं अकुलात॥
निरखि हरखि बरषत सुखै हँसि कसि काम क़िसोर।
लाल उदित मदन मन मुदित है छुवै अंचल छबि छोर॥
हँसत लसत लाल रुख लिये कहत मधुर मृदु बैंन।
बहँसि रहसि रस रंग बढ्यौ सैन मैन सुख चैंन॥
चारु चितै चित वित हरैं मिलि अंग रंग सलोल।
बिहरत भुज डाँडी गहैं झूलैं सुरति रंग हिंडोल॥
सौरभ सरस अंग अरगजा छिरकि मुख उरज सरोज।
श्रम जलकन छबि छीटैं फबी अंग मौज मनोजनि चोज॥
अंग अंग रति प्रेम सौं मन तरंग झोटा देति।
रीझि बसन भूषन अलकैं छुटी वारों मोती कुसुम समेति॥
उदार अधर मधु माधुरी प्याइ पीवत कुँवरि किसोर।
रस बस मत्त मगन भये नहिं जानत निसि भोर॥
कपोल पलक रँगे पीक सों अधर अंजन अनुराग।
सुरत खेल अतिरँग रह्यौ सरस रस फाग सुहाग॥

सेवत सुख रुख सहचरी ललित जै श्रीहरिदासि।
श्रीबिहारीबिहारिनदासि अंग संग फूलत बलि नागरीदासि॥

राग – मारू, ताल – धमार

खेलत आजु रसिकबर नवल कामिनी कंत।
नव बन नव निकुंज नित्य नव आनंदहिं न अंत॥
नव द्रुम बेलि केलि नव सुखद तरनिजा कूल।
तहाँ भृंग बिहंग कुलाहला मत्त मुदित मन फूल॥
पुहुप पराग पवन अहै बिलसत नान रंग।
नव अनुराग नई रीति नवल सहचरी संग॥
संच सप्त मधुरे सुर गावत सरस धमारि।
सुनत श्रवन मन हरषित नेह नवल सुकुँवारि॥
गौरस्याम रति सागर नागर नवल किसोर।
मौज मनोज मनहीं मन उठत तरंग दुहुँ ओर॥
खेलत अति रस मेलत रंगभरे सुखरासि।
मदन मुदित दोऊ मिलि करत परस्पर हासि॥
भृकुटि कटाछिन चितवत प्रिया अंचल की कोर।
श्रवत सुधा ससि मानों मोहन नैन चकोर॥
रोम हरषि पुलकावलि बिहरत प्रेम गंभीर।
गावत रीझि रिझावत सुघर सुरत मन धीर॥
कबरी कुसुम केस कटि कसन कंचुकी छूटि।
सहज सुधा सुंदरवर पीवत अधर मधुर रस घूँटि॥
अंजन अधरनि पीक कपोलनि नखसिख चित्र बनाइ।
अंग अगरजा श्रमजल मानों छिरकत छबि रही छाइ॥

रहसि रवन तन मन मिलि भये मत्त मगन मन मोद।
तब श्रीहरिदासी सहचरी धाइ धरे दोऊ गोद॥
जै श्रीबिपुलबिहारिनदासि दरसि सेवत नव नव भाइ।
श्रीनागरीदासि निरखि दम्पति छबि तृन तोरत बलि जाइ॥

बिहरैं श्रीस्यामा स्याम उदित अनंगे। सौरभ सदन सुख सेज सुरंगे॥
गौर साँवल झलमलैं अँग अंगे। मौजनि मनोज मनौं नृत्तत सुधंगे॥
लटकति ग्रीवाँ गति भेद भूभंगे। उघटत सब्द ग्रिग्रि ताता थुंगे थुंगे॥
बाजत बलय मानौं मधुर मृदंगे। कुंणित किंकिनी सुर नूपुर उपंगे॥
सादीये सहजादी सुंदरि सोहै सीसमंगे। मोहै हैं निरखि मोहन नासिका लवंगे॥
प्रतिबिंबित विवि बदन दुरंगे। लगत न पलक नैना नेह भये पंगे॥
सोभित सुभट पट नट नवरंगे। काम कटाछिन बान धनुष भूभंगे॥
अधर मधुर जीति प्रीति रति रंगे। मान न विरह भ्रम तहाँ न प्रसंगे॥
जचि रचि सचि सुख ललन त्रिभंगे। प्रेम प्रवीन प्यारी हँसि कसि रंगे॥
रोम रोमनि रमन रमे आनंद उतंगे। रस बस प्यारी प्रीतम लेत उछंगे॥
सुरत संगम सिंधु प्रेम की तरंगे। तन मन मगन चतुर चित चंगे॥
विटप लपटी लता कूजे ज्यौं विहंगे। पुहुप पराग अलि अंगनि आलिंगे॥
विपिन बिनोद नित यहै हौं जाचिंगे। रसिक अनन्य-श्रीहरिदासी सुख संगे॥
विचित्र बिहारीबिहारिनिदासि सब अंगे। सेवैं श्रीनागरिदासि प्रेम अभंगे॥

झूलत डोल नबल स्याम प्रिया इत गोरी।
नव निकुंज नव रंगमहल अति विचित्र बनी यह जोरी॥
भृकुटि कटाछ निहारत नैननि बैंन बदत चित चोरी।
गावत तान तरंग अनंगनि रीझि कहत हो हो होरी॥
डाँड़ी छाँड़े खेल करत परिरंभन चुंबन देत निहोरी।

कच कुच कर कंचुकी रस परसत बिहरत कुंवरि किसोरी ॥
तब सहचरी अति अनुराग उड़ावत बूका बंदन रोरी।
निरखि नागरीदासि दम्पति छबि बिपुल प्रेम भई भोरी ॥

राग – काफी-होरी, ताल – धमार

छबीली नागरी हो, सारी सुमन सीसफूल राजैं मोतिन मंग सुरंग।
कबरी कुसुम करनफूल झलमलैं अंग अंग ॥
आनन अलकावली छबि बैंदी भृकुटी भाल।
अरुन अधर दसननि दुति लोचन लोल बिसाल ॥
नासामनि चिबुक चारु कण्ठ जंगाली पोति।
कुच कमल कंचुकी चित्रित द्वै लर मोतिन जोति ॥
बाहु बलय लँहगा लसैं कटि नूपुर रव (जु) रसाल।
लटकि चली पग प्रेम प्रिया मोहै मत्त मराल ॥
बैठी सौरभ सुख सेज पर पोषति पिय प्रान।
रोम रोम सींचत रसै दै अधरामृत पान ॥
हँसत लसत प्रेम मुदित उदित अति उदार।
परस सरस सुरत रंग वर विचित्र बिहार ॥
अंग अंग माधुरी तरंग सुन्दरी सुकुँवारि।
अद्भुत मौजनि चोज रहत नित नागर नैन निहारि ॥
श्रीकुञ्जबिहारीबिहारिनिदासि सुप्रेम प्रकासि।
नव नव रति रंग महल सेवैं श्रीनागरीदासि ॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद–

डोल झूलैं स्यामास्याम सहेली।
नव निकुञ्ज नवरंग पिया संग बिहरत गर्व गहेली ॥
कबहुँक प्रीतम रमकि झुलावत कबहुँक प्रिया नवेली।
श्रीबीठलविपुल पुलकि ललितादिक देखत आनन्द केली ॥

श्रीगुरुदेवजू के पद –

डोल झुलावत कुञ्जबिहारी।
रमकि धरत पग नव जोवन भरि अति आनंद दुलारी॥
सारंग राग अलापत लाल रसाल दै दै करतारी।
कबहुँक हँसत हँसावत रीझि रिझावत प्रीतम प्यारी॥
री तब कर गहि लेत किसोरकिसौरी पुलकि भरत अँकवारी।
श्रीबिहारिनदासि दंपति नव नव छबि पर छिन छिन बलिहारी॥

डोल डुलावत लालबिहारी, नाँउ, लै लै बोलैं लालन प्यारी।
हों दुलहा दुलहिनी दुलारी सुन्दरबर सुकुमारी॥
नखसिख सुन्दरि सिंगारी केस कुसुम सुहस्त सँवारी।
स्याम कंचुकी सुरंग सारी अंचल अंचल छबि न्यारी॥
बारम्बार बदन निहारी अलक झलक झलमलारी।
रीझि रीझि लालन लै बलिहारी पुलकि भरत अँकवारी॥
कोकलकला निपुन नारी कंठ सुघर सरस भारी।
सुजस गावत दासबिहारी बिहारिन की बलिहारी॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद–

झूलत फूलत स्यामा स्याम।
फूलडोल को फूल बनायो फूलैं फूल सुभग सुभ ग्राम॥
फूलन ही की सेज्या राजत फूलनि ही के धाम।
उभै अंग पर फूल परस्पर उपजावत अभिराम॥
फूलन ही के आभूषन राजत देखे पूरन काम।
श्रीनागरिदासि निरखि ललितादिक फूल सों फूली भाम॥

श्रीस्वामीजू कौ पद–

राग – गौरी, ताल – चौताल

नव निकुंज ग्रह नवल आगैं नवल बीन मध्य राग गौरी ठटी। मानौ दस इन्दु पीयूष बरषंत सुखद चपल करजावली दृष्टि पिय की जटी॥ रीझि

रीझि पिय देत भूषन बसन दाम उर रसन दसननि धरत निरखि सारंग कटी। रसद श्रीहरिदास बिहारी अंग अंग मिलत अतन उदोत करत सुरत आरंभटी॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद–

मंद मंद गति धरति अवनि पग श्रीस्यामा जू देखत बन सोभा। प्रीतम कौ गहैं हाथ पाछै निजु सखी साथ चौंर सौं भौंर उड़ावति निकटि झुकि आवत सौरभ के लोभा॥ कालिंदी के कूल नाना विधि फूले फूल रहसि कछु कहत बात मंद मुसिक्यात चितवन चित चोभा। श्रीरसिकबिहारी रूप उजारी बैठे पुलिन बिछाइ दुकूल आनंद के गोभा॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद–

सुनहु रसिक श्रीवृन्दाबन कौ जस।
कुञ्जकेलि मानिनी मनोहर परबस भये नाहिनैं अपने बस॥
यहि बन नित्य नवीन जुगलबर द्रुमदल दिव्य श्रवत सलिता लस।
श्रीबीठलविपुल विनोदबिहारी कौ पान कियौ चाहत रसना रस॥

श्रीगुरुदेवजू के पद–

देखि सोभा सखी अति बन बिराजैं।
फूल में फूल अनुकूल सब द्रुम लता लपटि भावै भजति स्याम सुख साजैं॥
और रोचिक रसिक रहत राधा बसिक सघन तन तडित मिलि मधुर मृदु गाजैं।
मुदित मोरी मोर देत चित चहूँ ओर रीझि कुँवरि किसोर सब सुख समाजैं॥
कहत श्रीमुख धनि धन्य रसिक अनन्य रहत सन्मुख सुखद मम केलि काजैं।
श्रीबिहारिनदासि बिदित सुख समै मिलि हँसत सुजस रसनां रसत सब दिन सुधनि आजैं॥

दूलहु दुलहिन दिन दुलराऊँ।
कुमकुम मुख माँडों मडवातर नवल निकुञ्ज बसाऊँ॥

बिबिध बरन गुहि सुरंग सेहरे रसिकनि सीस बँधाऊँ।
कोमल पीठ दीठि करि ईठनि डीठि मिलै बैठाऊँ॥
पानि परसि हँसि बचननि रुचि अंचल चंचलहिं गहाऊँ।
परम नरम रस रीति प्रियाजू की प्रीति निरंतर गाऊँ॥
उत्कंठित जाँचित जुवतिन हित केलि बेलि बरषाऊँ।
श्रीबिहारिनिदासि हरिदासी के संग देखि दुहुँन सचु पाऊँ॥

प्यारीजू मोकों कृपा करौ।
ऐसी रुचि उपजै जिय मेरे तुमहिं न छिन बिसरौं॥
आपुन अपनी करि प्रेम बढ़ावहु निज रस रीति सौं हियो भरौ।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि कहत यों विपिन बिहार ढरौ॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू के पद–

मंजन करि मनमोहनी मोहन मुदित परस्पर करत सिंगार।
माँग सुहाग कुसुम रची पाग अति अनुराग पहिरि उर हार॥
मृगमद आड़ बनी बर बैंदी अंजन नैंन निरखि मुख चारु।
श्रीनागरीदासि बलि विचित्र बिहारीबिहारिन हुलसि बिलसि सुखसार॥

बैठे नव निकुञ्ज मंदिर में गावत राग विभास प्रवीन।
नव किशोर चितचोर भोर प्यारी अति ही सरस बजावति बीन॥
कोक निपुन गुन सुघर लाड़िली पियहिं रिझै रस बस करि लीन।
श्रीनागरीदासि बलि बलि ललितादिक फूलत दिन देखि रसिक नवीन॥

श्रीस्वामी सरसदेवजू के पद–

लाल प्रिया कौं सिंगार बनावत।
कोमल कर कुसुमनि कच गूँथत मृगमद आड़ रचित सचुपावत॥
अंजन मन रंजन नखवर कर चित्र बनाइ बनाइ रिझावत।
लेत बलाय भाय अति उपजत रीझि रसाल माल पहिरावत॥

अति आतुर आसक्त दीन भये चितवत कुँवर कुँवरि मन भावत।
नैंननि में मुसिकानि जानि पिय प्रेम बिबस हँसि कंठ लगावत॥
रूप रंग सीवाँ ग्रीवाँ भुज हँसत परस्पर मदन लड़ावत।
श्रीसरसदासि सुख निरखत निहाल भये गई निसा नव नव गुन गावत॥

आज अति राजत नागरि नाहु।
बन घन कुञ्ज कुञ्ज प्रति डोलत अंसन पर धरि बाहु॥
फूली लता परसि रस हँसि भरे गावत अधिक उछाहु।
मंद मंद गति छबि उपजत निरखि सखी बलि जाहु॥
आनंद मगन भये लटकत नट पट भूषन तन जाहु।
श्रीसरसदास सुखरासि लाड़ली लालन संग किलकाहु॥

श्रीस्वामी नवलदेवजू कौ पद–

रंग भर्‌यो लालन रंगीली प्यारी राधा।
एक तन एक मन एक ही समान दोऊ नेक हूँ न न्यारे ह्वै सकत पल आधा॥ छबि सौं छबीली भाँति नैननि में मुसिकाति मुसकनि ही में रंग बढ़्यौ है अगाधा। तैसीये नवल सखी तैसेई कुञ्जबिहारी तैसी मेरी प्रानप्यारी पूजी मन साधा॥

श्रीस्वामी नरहरिदेवजू कौ पद–

सखी आज बने पिय साँवरे।
रूप अनूप अधिक छबि राजत कुटिल केस मनौं भाँवरे॥
टेढी पाग ग्रीवा कटि टेढी चितवनि की बलि जाँवरे।
श्रीनरहरिदास पिय की छबि निरखत प्यारी रूप समाँवरे॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू के पद–

प्यारी जू तैं मोहिं मोल लियौ।
तेरी कृपा मदन दल जीत्यौ तेरौ जिवायौ जियौ॥

उमड़ी सैन महामन्मथ की तैं अधरामृत दियौ।
श्रीरसिकबिहारी कहत दीन ह्वै धनि स्यामा कौ हियौ॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद–

जै जै जै श्रीनिधिबन राज।
गौरस्याम कौ अति सुखदाई सब विधि करत दुहुनि के काज॥
महारूप रसरासि छबीले अद्भुत जामें प्रेम समाज।
श्रीकुञ्जबिहारिन ललित रसिकवर तुमहीं कौ है हमरी लाज॥

श्रीनिधिबनराज की जै रहियै।
जामें नित्यबिहार निरंतर काम कहानी कहिये॥
श्रीहरिदास सुभायक अंग संग और कहा हमें चहिये।
श्रीकुञ्जबिहारिन प्रानपियारी उमँगि उमँगि दुलरैये॥

हमारौ महल सदा सुखदाई।
प्रियालाल कौ रंग बढ़ावत छिन छिन प्रीति सवाई॥
छलकत छींट परी आनंद की ब्रज में नाँहि समाई।
यह गुप्त रीति हरिदास प्रगट करी रसिकन के मन भाई॥

परसाद बिहारिन रानी कौ।
अति आनंद बढ़ै छिन ही छिन महाप्रेम सुखदानी कौ॥
जाकी सोभा कहत न आवै अद्भुत रूप निमानी कौ।
श्रीललितकिसोरी लाड़ लड़ावति अति जाननिमनि जानी कौ॥

साधे भाई ऐसौ महल हमारौ।
निरगुन सरगुन वारि है जाकी कहै न वेद विचारौ॥
अद्भुत प्रेम रंग रस अद्भुत नित्यबिहारौ।
ललितप्रिये सुखरासि रसिकबर करि राख्यौ उर हारौ॥

Scanned with OKEN Scanner

साधौ भजन करै सोई जीतै।
बात बनाये हाथ न आवै अंत चलै उठि रीतै॥
मन इन्द्री के बस ह्वै प्रानी खोवत हरि से मीतै।
श्रीहरिदास रसिक केलि बिन और कहा लै कीतै॥

सरि कौन करै मेरी प्यारी की।
जाकौ रूप रूप को मोहै पलक न लगे बिहारी की॥
अद्भुत प्रीति देखें बनि आवै तन मन अति हितकारी की।
श्रीकुञ्जबिहारिनि ललित लाड़िली जीवनि प्रान हमारी की॥

नमो नमो जै श्रीवृन्दाबन रस बरषत घन घोरी।
नमो नमो जै कुञ्जमहल नित नमो नमो जामें सुख होरी॥
नमो नमो जय कुञ्जबिहारिन नमो नमो प्रीतम चितचोरी।
नमो नमो जय श्रीहरिदासी नमो नमो इन इनहीं की जोरी॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू के पद-

जै जै श्रीवृन्दाबन सुखदाई।
ललित लता झूमी द्रुम बेली मनिमय रज कर्पूर सुहाई॥
त्रिबिध पवन मन भवन मधुप कूजित पंछी जमुना रस छाई।
कुञ्जमहल कुसुमित सिज्या पर बिहरत कुँवर कुँवरि सुखदाई॥
ललितादिक निरखत हरषत नित जै जै श्रीवृन्दावन सुखदाई।
विमल कमल कर्पूर पुलिन-रज सेवत जल जमुना जुगराजैं॥
मृदुमनि भूमि खचित कंचनमय मनसिज सुमन सेज सुख साजैं।
नवनिकुञ्ज बिहरत होउ प्रीतम श्रीनागरीदास सहचरी समाजैं॥
भृंग बिहंस सरस सौरभता अद्भुत विविध भाँति बनराजैं।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद–

ऐरी मेरा वृन्दावन सुखधाम।
प्रिया लाल को लाड़ लड़ावत सब विधि पूरन काम॥
महाप्रेम सोभा कौ सागर रोम रोम अभिराम।
ललित रसिकबर जू की जीवनि कुञ्जकेलि विश्राम॥

जै जै श्रीबनराज हमारे।
जिनकी कृपा बिहार बिलाक्यौ श्रीहरिदास सम्हारे॥
छिन छिन नइ नइ प्रीति प्रिया की प्रानन हूँ ते प्यारे।
श्रीरसिकसखी अंग संग सहजहीं कबहूँ होत न न्यारे॥

माई धामिन कौ धामी धाम धाम वृन्दावन हैं।
प्रियालाल रंगभरे राजैं जहाँ एक जिय एक प्रान एक तन मन हैं॥
महारूप रस रास सुख के बिलास दोऊ मिले रस सिंधु आनंद के घन हैं।
ललित हिये में आई लालन की भई भाई रोम रोम फूले ऐसे पाये रंक धन हैं॥

जै जै श्रीवृन्दावन चंद।
महारूप सुखरासि छबीले नित ही बिहरत आनंद कंद॥
जामें बसि जे अनत देत मन तेई हैं अति ही मतिमंद।
रसिक सिरोमनि श्रीहरिदासी कीनें सहज प्रेम के फंद॥

अनन्यनि कौ धन कुञ्जबिहारी।
श्रीहरिदास प्रेम रस सागर सोभित अंग संग प्रीतम प्यारी॥
श्रीबिपुलबिहारिनदास प्रगट नित सरसदास सुख की बरषा री।
श्रीनागरी नरहरिदास रसिक कुल मंडन जीवन प्रान सुकेलि हमारी॥

भजि मन श्रीस्वामीहरिदास।
रसिकसिरोमनि आनंद की निधि कुञ्जमहल में बास॥

निरखैं कुञ्जकेलि माधुरी सदा पियारी पास।
श्रीललितकिसोरी परम लाड़ली बिलसत प्रेम बिलास॥

श्रीगुरुदेवजू के पद–

को सरि करै हमारी राधा।
यद्यपि नाम महातम सेवत और वैस या रस में बाधा॥
अंग संग नवल किसोर किसोरी एकबैस रससिंधु अगाधा।
जागत अनुरागत निसिबासर लगत न नैन निमेष न आधा॥
नित्यबिहार अधार हमारें एक प्रेम निज नाम अराधा।
श्रीबिहारीदास हरिदास बिपुल बल सब अभिलाष मिली सुख साधा॥

जै श्रीवृन्दावन घन नव निकुञ्ज में संतत सहज विराजत जोरी।
अति अगाध महिमा रस जिनकौ सो पैयत इक कृपा किसोरी॥
सुक नारद से भक्त मुक्त सनकादिक सुहृदन हूँ ते चोरी।
श्रीबिहारीदास जस कहैं कहाँ लौं रसना सहस तऊ मति थोरी॥

कहत स्याम स्यामा सों मोकों दरसन देत रहौ जू।
अंचल अलक पलक सु निरंतर यह संकोच सहौ जू॥
यह बिनती मानिये श्रवन सुनि नाहिन बचन कहौ जू।
श्रीबिहारिन्नदासी कहत रुख लिये यह सुख सहज लहौ जू॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू के पद–

रस में रस पियें कुञ्जबिहारी।
रस की बात घात पुनि रस की रस ही सों रस दृष्टि निहारी॥
रस की प्रीति रीति सब रस की रस ही उमगत सहज हियारी।
रस की सखी रसिक हरिदासी रस भयौ ललितप्रिये उर हारी॥

हमारे धन वृन्दावन प्यारी।
खरचत खात घटै नहिं कबहूँ बाढ़त छिन छिन अति अधिकारी॥
ताही कौ अभिमान सदाई ताही बल बस कुञ्जबिहारी।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि प्रान प्रान मिलि कीनी यारी॥

राख्यौ लाड़ बिहारिनरानी।
जोइ जोइ रुचै करैं पुनि सोई क्यौं न करैं लालै सुखदानी॥
कुञ्जमहल कौ राजतिलक दियौ महाप्रेम अति रस में सानी।
बार बार हँसि कहत लाड़िली ललितकिसोरी मो मन मानी॥

श्रीहरिदास सरन जे आये।
कुञ्जबिहारी ललित लाड़िले अपने जानि निकट बैठाये॥
कुञ्जकेलि निरखैं निसिबासर अति आनंद हिये में छाये।
दासबिहारिन सब सुखरासी प्रानप्रिये हँसि कंठ लगाये॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद-

हमारी जीवनि जुगलकिसोर।
कुञ्जबिहारिन कुञ्जबिहारी नित नव जोवन जोर॥
भूलि न जाऊँ पलक कहूँ इम उत रहों निरंतर पासा।
दंपति संपति दिन दुलराऊँ और न दूजी आसा॥
रूपमाधुरी दृगन पियाऊँ श्रवन रसीली बानी।
अंग संग उद्‌गार नासिका तीनौ ताप सिरानी॥
असन करौं उच्छिष्ट दुहुन कौ भूषन बसन उतारे।
श्रीभगवतरसिक मनाय लाड़िली करौं लाल दृग तारे॥

हमारी संपति दंपति केलि।
दिन दिन बढ़त घटत नहिं कबहूँ सुखसागर की रेल॥

अतुलित अमित अनूपम अद्‌भुत रस की ठेलाठेल।
श्रीभगवतरसिक दृगन में दीनी स्यामास्याम सकेल॥

मेरी महारानी श्रीराधारानी।
जाके बल मैं सब तौं तोरी लोक बेद कुलकानी॥
प्रानजीवनै धन लालबिहारी कौ वारि पियत नित पानी।
श्रीभगवतरसिक सहायक सब दिन सर्वोपरि सुखदानी॥

सब सुख सदन बदन तुव राधे।
उपमा कमल ससी नहीं पावत भीत मान अपराधे॥
मृदु मुसक्यानि हरत मन नैननि बंक बिलोकनि ही दृग आधे।
लेत बलाय दुहूँ कर भगवत रसिकसिरोमनि गुननि अगाधे॥

जावक जुत जुग चरन लली के।
अद्‌भुत अमल अनूप दिवाकर मोहन मानस कञ्ज कली के॥
मंजुल मृदुल मनोहर सुखनिधि सुभग सिंगार निकुञ्ज गली के।
सुरतरु कामधेनु चिंतामनि भगवतरसिक अनन्य अली के॥

तुव मुखचंद चकोर ये नैना।
अति आरत अनुरागी लंपट भूल गये गति पल हूँ लगै ना॥
अरबरात मिलिबे कौं निसंदिन मिलेइ रहत मनो कबहूँ मिलेना।
श्रीभगवतरसिक रसिक की बातैं रसिक बिना कोउ समुझि सकैना॥

हैं हम रसिक अनन्य प्रियापिय कुञ्जमहल के वासी।
नइ नइ केलि बिलोकैं छिन छिन रति विपरीत उपासी॥
बीरी बसन सुगंध आरसी रुख लै करत खवासी।
देत प्रसाद प्रेम सौं हँसि हँसि कहि कहि भगवतदासी॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू के पद–

वंदे श्रीवृन्दावन की भूमि।
ललित लतनि कुंदनमनि खाँची बेलि द्रुमन रहीं झूमि॥
केलि निकुञ्ज नागरीनागर बदनचंद कौ चूमि।
रसिकरूप दंपति छबि संपति सुरंग रंग अलि घूमि॥

कीजै रंगमहल की दासी।
स्यामास्याम केलि अवलोकौं श्रीहरिदासी पासी॥
बिबिध बिहार सार सुख सजनी बिपुल बिहारिन आसी।
सरस नागरी नरहरि रसिक ललित सु चरन उपासी॥
वृन्दावन की सहज माधुरी श्रीस्वामी परकासी।
रूप अनूप निरखि छबि अद्भुत महामधुर मृदुहासी॥

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद–

भाग बड़ौ वृन्दावन पायौ।
या रज कौ सुर नर मुनि बंछित बिधि संकर सिर नायौ॥
बहुतक जुग या रज बिनु बीते जन्म जन्म डहकायौ।
सो रज अब कृपा करि दीनी अभय निसान बजायौ॥
आइ मिल्यौ परिवार आपनौ हरि हँसि कंठ लगायौ।
स्यामास्यामजू बिहरत दोऊ सखी समाज मिलायौ॥
सोक संताप करौ मति कोई दाव भलौ बनि आयौ।
श्रीरसिकबिहारी की गति पाई धनि धनि लोक कहायौ॥

सजनी देखि खेल बसंत।
बन्यौ बन प्रसून फूले नवल कामिनी कंत॥

अरुन बसन अंग अंग राजत अधर पलक रस मंत।
नैन सुफल करि पोप नागरी नवल सुखहिं न अंत॥
श्रीवृन्दावन नवल बसंत।
तरु तमाल उर बेली लपटी नवल भामिनी कंत॥
नव निकुञ्ज नव केलि कलोलनि बदन कमाल अलि अलक मंत।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारी नागरि नवल पिय बिलसंत॥
नवल नवल वृन्दावन फूले।
नव पराग अलि लोभी झूले॥
प्रिया कनक की बेलि झेलि रहे स्याम तमाल सह अनुकूले।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहार नागरि नवल गहि भुज मूले॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद-

अद्भुत रस की खानि सदा सुखदानि बिहारिनिरानी।
जीवनमूरि बिहारी को धनि वृन्दावन रजधानी॥
आदि न अन्त सनातन अविचल सहज सुभाव सुमानी।
नागरि अति सुकुमार नवल नित रसिक सिरोमनि जानी॥
कोककला संगीत लाल को सिखवति गति रस सानी।
रूप बयस गुन की मरयादा पटतर कौ नहिं आनी॥
सेष गिरीस मेरु मन्दर हिमकंदर में तप ठानी।
ग्रीवाँ सींच सकल सोभा की गोत कपोत उड़ानी॥
मेचक चिकुर सुचारु नीलमनि नीरद छबि न तुलानी।
बेनी बनक विसाल व्याल अलकावलि अलि अलगानी॥
भृकुटी कुटिल विलोकि काम को दण्ड खंड भयो मानी।
श्रवन श्रवन सुनि गमन गगन में मगन भई शशि रानी॥

बदनचन्द्र को देखि सुधाकर घटत बढ़त भय मानी।
खंजन कंज मीन मृगनैननि सकुचि दुरे बन पानी॥
नासा निरखि सुमन मिल सूख्यौ कीर पीर उन आनी।
ललित कपोल गोल दरपन मन भये मधूक मलानी॥
अधरविम्ब दाड़िम दसननि दुति कुंदकली कुम्हिलानी।
बचन रचन मुसिक्यान कोकिला दामिनि घन लपटानी॥
चिबुक चखौंडा चारु विराजत गुदना गंड गुमानी।
रस शृंगार रह्यो रजनी में मानस मदन महानी॥
कम्बुकण्ठ की रेखि देखि त्रैकरत समुद तनु हानी।
चक्रवाक श्रीफल उरोज तरु सर सेवत बिलखानी॥
बाहु मृनाल भोग भोगी के अंगुल मूँग मुरझानी।
अतिसय भीति अभीत न अबलौं विवरन पंक परानी॥
चल दल उदर त्रिबेनी त्रिबली तरफत समुद्र समानी।
नाभि गँभीर सभीर सुधारस कियो पताल पयानी॥
बिपुल नितम्ब चक्र रति रथ के पृष्ट पट्टिका भानी।
चाल मराल द्विरद केहरि कटि अटवी अटत अमानी॥
जंघा कदलि देख कम्पै अति गुल्फ गुलाब गलानी।
चरन अरुन तल ललित दिवाकर भ्रमत श्रमत हत मानी॥
कंचन तनु लज परत अग्नि में नख नछत्र नभ थानी।
उमा रमा रचि सची सरस्वती सहित सुहाग बिकानी॥
सुरतरु कामधेनु चिंतामनि वारि दिये देव दानी।
अष्टसिद्धि नवनिद्धि बापुरी कौंन करै सनमानी॥

षट्ऋतु बारह मास रैनदिन रहत एकरस सानी।
सेवत स्याम सकाम स्वामिनी स्यामा नेह निधानी॥
सब ऐश्वर्य छिपाइ पाँइ परि दीन भयो अभिमानी।
प्रगट कियो माधुर्य मधुर रस रसिक नरेस निसानी॥
नेति नेति निगमागम गावत पावत नहिं बुधि बानी।
श्रीभगवतरसिक रसिक सखियन संग अँखियाँ निरखि सिरानी॥

श्रीस्वामीजू कौ पद– राग – टोड़ी, ताल – चौताल

आजु की बानिक प्यारे तेरी प्यारीजू तुम्हारी बरनी न जाय छबि। इनकी स्यामता तुम्हारी गौरता जैसे सित असित बैनी रही ज्यों भुवंगम दबि॥ इनकौ पीताम्बर तुम्हारो नील निचोल ज्यों ससि कुन्दन जेब रबि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुञ्जबिहारी की सोभा बरनी न जाय जो मिलै रसिक कोटि कबि॥

श्रीगुरुदेवजू के पद–

भोजन करत भली भाँति सोभा बहु भाँतिन कही न जाति।
कोमल करनि लेत देत लालप्रिया मुख मुरि मुरि मुसिकाति॥
बिबिध बिंजन मन रंजन बदननि की काँति।
अति सतृष्ण तृषित क्षुधित पाइ सुधारस बिबिस भूलि न जात॥
बारंबार निहारत आरत इनहि यहै हितात।
श्रीबिहारिनिदासि यहै सुख सेवत निरषि हरषि आँखि न सिरात॥

राग – सारंग, ताल – अद्धा तिताला

भोजन करत दुहूँदिसि देखौं।
कहत न बनत बिनोद बिहारी बिहारिनि लै उर लेखौं॥

अंग अंग अवलोकि लेत दोउ छुधित स्वाद ही सेखौं।
बचन रचन रुचि में रुचि पावत सब रस रसिक विसेखौं॥
पान करत मकरन्द प्रियापिय अवधि प्रेम की रेखौं।
यहै अहार बिहार निरन्तर करत न पाक परेखौं॥
इहि रस तुष्ट पुष्ट मेरे प्यारे तुम सुन्दरबर बेखौं।
श्रीबिहारिनिदास कहत नैनन सौं तुम जिन लगौ निमेखौं॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ पद-

भोजन जेइयें पिय प्यारी।
अति आनंदभरे रस कौरन परम रंग हितकारी॥
चितै चितै लालन तन मुसिकन त्यौं त्यौं सुख होत हियारी।
श्रीकुञ्जबिहारिनि ललितकिसोरी जीवन प्रान हमारी॥

भोजन भोगिये पियप्यारी।
कुञ्जमहल ललिता हरिदासी दुलहिनि कुञ्जबिहारी॥
श्रीबिपुलबिहारिनिदास सरस मिलि प्याय सुधारस झारी।
श्रीनरहरिदास रसिक सखियन मिलि जेंवत ललन बिहारी॥

श्रीस्वामी पीतांबरदेवजू कौ पद-

भोजन भोगत हो हम जानी।
अपनी प्रियाजू कौ रूप सुब्यंजन अधरसुधा रस पानी॥
सखिय सँवारि शृंगार कौर दृग लेत परम रुचि मानी।
श्रीपीताम्बर दोऊ तृपति न मानत जेंवत रमन रमानी॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

भोजन करि बैठे दुलहिन दूलहु।
अचवन लेत कमल आनन सखि निरषि हरषि छबि फूलहु॥

बीरी परस्पर लेत खवावत रूप बैस समतूलहु।
दासिबिहारनि बिपुल रसिक श्रीहरिदासी दंपति रस झूलहु॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद–

आरति आनि सहचरिन साजी।
मनिमय थार प्रेम की बाती घृत कपूर रुचि राजी॥
जोति जगाय नेह चितवनि मुसिक्यान लाज लजि भाजी।
श्रीभगवतरसिक वारि तृन तोरत झाँझ झालरी बाजी॥

श्रीगुरुदेवजू कौ पद–

आरति कीजै सुन्दरबर की।
नागर नवल निकुञ्ज इन्दु जुग अखिल ताप तमहर की॥
नव विलास मृदुहास मनोहर श्रवत सुधा सुखकर की।
श्रीबिहारिनिदास लोचन चकोर नित अंस प्रिया भुजधर की॥

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ मंज –

श्रीहरिदास नाम निजु अमृत सब मंत्रनि कौ सारा।
आगम निगम पुरान पुकारैं श्री गुरु रूप हमारा॥
श्री गुरु वृन्दाविपिन बसावैं दरसावैं पिय प्यारी।
बरसावैं छबि रूप लहरि की महलिनि संग निहारी॥1॥
सरद निसारी प्रीतम प्यारी रूप उज्यारी आरी।
बोलत है नव लाल रंगीलौ तन मन मोद बढ़ारी॥
तेरे दरस परस बिन यह निसि विस्व अमावस कारी।
पीतांबर कित जाइ स्वामिनी चरन कमल लपटारी॥2॥
खसम हमारा नंगे सिरदै हौं नंगे दी रंडी।
मस्तिक तिलक गलै बिच कंठी तन गूदर कर हंडी॥

कटि कौपीन अँगोछा इक रस ग्रीषम बरषा ठंडी।
पीतांबर बन देखि रसिक संग छाँड़ि जगत सब भंडी॥3॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेवजू कौ मंज–

श्रीकुञ्जविहारिन सब सुख रासी अद्भुत रूप रसाला।
मंद बिहँसि चितै छबीली लालहिं करति निहाला॥
अति बड़ भागी रसिक सिरोमनि करि राखी उर माला।
श्रीललित किसोरी लाड़ लड़ावति जानति है निजु हाला॥
श्रीहरिदासी अति रसरासी नित्य सुकेलि विलासी।
प्रीतम पासी बँधी मृदु हाँसी ललित सखी निजु खासी॥
इनकी बात इनहिं बनि आवै भागवान कोऊ पावै।
श्रीकुञ्जबिहारिनि लाड़ लड़ावै निरखत नैन सिरावै॥
रंग नवेली प्रिय अलबेली नित्य लाल सुखदानी।
उमगि उमगि अंकौं भरि प्रीतम महा प्रेम रस सानी॥
तन मन मिलै मिल्यौई चाहैं मिलि विलसनि की बानी।
श्रीललित किसोरी लाड़ लड़ावति अति जाननि मनि जानी॥
रँगी रस रंग तरंगनि में सु माधुरी रूप पियें अति प्यासी।
प्रेम भरी पुलकैं किलकैं कल सुन्दर सुच्छ सुधामय हासी॥
कुञ्ज सुमंजु सदा सुख पुञ्ज अनंगनि ओटि लजैं सु प्रकासी।
दंपति केलि दृगंचल झेलि सनेह की मूरति श्रीहरिदासी॥

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ संज –

कौन करै तप तरपन तीरथ तीन प्रकार कहाँ मन लाऊँ।
कौन करै ब्रज संजम नेम सुप्रेम पुनीत प्रसादहिं पाऊँ॥

कुञ्जनि वास निवास रसिक श्रीनागरीदासि विलास बढ़ाऊँ।
चित्त लगाइ उभै पद अम्बुज नित्त बिहारी बिहारिनि गाऊँ॥

श्रीस्वामी बिहारीवल्लभजू कौ मंज –

सबतें न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी चाहिये।
निन्दा अस्तुति छोड़ि पराई जुगल जीभ जस कहिये॥
दुख सुख हानि लाभ सम बरतै आनि परै सो सहिये।
भगवत रसिक सरन गहि वल्लभ सर्वोपर सुख लहिये॥

यह जग नाम धाम वृन्दावन भेद न काहू पायौ।
अपनी बुद्धि बिकार मुनिन मिलि नेति वेद ह गायौ॥
आदि मध्य अवसान एकरस काम प्रेम छबि छायौ।
भगवत रसिक अनन्य भेद कह जीवन जुगल बतायौ॥

श्रीस्वामी रूपसखीजू कौ मंज–

फूलनि सेज निकुञ्ज के मंदिर मोहन लाल कौं आनन्द दानी।
अंगनि अंग सनेह भरे मधुरै सुर बोलत कोकिल बानी॥
गोरे से गातनि फूल समात न कुन्दन कोहैरी बारह बानी।
सुन्दरि सील सुलज्ज सिरोमनि स्याम सुजान महा महारानी॥

श्रीहरिदास अनन्य नृपति रटि कुञ्जबिहारी पावैगौ।
श्रीस्वामी जू प्रेम सुधाकर सुहृद सील कौं ध्यावैगौ॥
आसुधीर कौ धीर पीर हर परम पुनीत कहावैगौ।
श्रीवृन्दावन छबि रूप प्रकासै रसिकनि के मन भावैगौ॥

श्रीस्वामीजू की नामावली

जितै स्वाँस नासा चलै तितै जपै हरिदास।
तन मन प्राननि यौं मिलै ज्यौं फूलनि में बास ।।
श्रीहरिदास गाऊँ श्रीहरिदास गाऊँ।
श्रीहरिदास नाम गुन गाऊँ विपुल प्रेम पाऊँ ।। 1 ।।
श्रीहरिदास नाम गुन रूप तन राऊँ।
श्रीहरिदास प्राननि के प्रान जिवाऊँ ।। 2 ।।
श्रीहरिदास लैना श्रीहरिदास दैना।
श्रीहरिदास भजैं भैया कछु भैना ।। 3 ।।
श्रीहरिदास द्यौसौ श्रीहरिदास रात्यौ।
श्रीहरिदास व्यौहार श्रीहरिदास बात्यौ ।। 4 ।।
श्रीहरिदास बल बुद्धि कुल जाति पाँती।
श्रीहरिदास भेंटत सीतल भई छाती ।। 5 ।।
श्रीहरिदास अंग बिन संग तजि सातौ।
श्रीहरिदास हिलग बिन हेत करि हातौ ।। 6 ।।
श्रीहरिदास प्रेम बिन नेम न सुहातौ।
श्रीहरिदास हित बोलत मिलत महल कौ नातौ ।। 7 ।।
श्रीहरिदास नाम रुचि श्रीहरिदास नाम सुचि।
श्रीहरिदास नाम लियैं जाहिं दुख दोष मुचि ।। 8 ।।
श्रीहरिदास कर्मैं श्रीहरिदास धर्मैं।
श्रीहरिदास नाम बेधि लै मन मर्मैं ।। 9 ।।
श्रीहरिदास ग्यानैं श्रीहरिदास ध्यानैं।
श्रीहरिदास नाम करि कोटि अस्नानैं ।। 10 ।।

श्रीहरिदास नाम मेरे मंत्र माला।
श्रीहरिदास नाम मुद्रा तिलक भाला॥11॥
श्रीहरिदास सेवा श्रीहरिदास पूजा।
श्रीहरिदास भजन बिन भाव नहीं दूजा॥12॥
श्रीहरिदास भक्ति रति श्रीहरिदास परम गति।
श्रीहरिदास जस गावत भई सुदृढ़ मति॥13॥
श्रीहरिदास ब्रज रीति श्रीहरिदास रस रीति।
श्रीहरिदास नाम लियैं सकल साधन जीति॥14॥
श्रीहरिदास निज दरसि श्रीहरिदास रस परसि।
श्रीहरिदास सुख देत श्रीहरिदास हित हेत॥15॥
अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास निज दास।
श्रीवरबिहारिनिदास विलसत विलास॥16॥

स्फुट-पदावली

श्रीगुरुदेवजू कौ पद-

प्रभु जू हौं तेरा तू मेरा।
राजी खसम कहा करै काजी लोग बकौ बहुतेरा॥
हौं तू एक अनेक गनै गुन दोष न किसहू केरा।
जल तरंग लौं सहज समागम निर्मल साँझ सवेरा॥
कोई स्वामी कोई साहिब कोई चाकर कोई चेरा।
बिना ममत्व इकत्व न ऐसा जगतै भक्त घनेरा॥
तन मन प्रान प्रान सौं सन्मुख अब न फिरै मन फेरा।
श्रीबिहारिदास हरिदास नाम निज प्रेम निबेरा झेरा॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू कौ पद-

आचारज ललिता सखी रसिक हमारी छाप।
नित्य किसोर उपासना जुगल मंत्र कौ जाप॥
जुगल मंत्र कौ जाप वेद रसिकन की बानी।
श्रीवृन्दावन धाम इष्ट स्यामा महारानी॥
प्रेम देवता मिले बिना सिधि होइ न कारज।
भगवत सब सुखदानि प्रगट भये रसिकाचारज॥1॥

साँचे श्रीराधारमन, झूठौ सब संसार।
बाजीगर कौ पेखनौ मिटत न लागै बार॥
मिटत न लागै बार भूत की संपति जैसे।
मिहरी नाती पूत धुवाँ कौ धौंहर तैसे॥
भगवत ते नर अधम लोभ वस घर घर नाचे।
झूठ गढ़ै सुनार मैन के बोले साँचे॥2॥

कुञ्जन ते उठि प्रात गात जमुना में धोवै।
निधिवन करि दंडौत बिहारी कौ मुख जोवै॥
करै भावना बैठि स्वच्छ थल रहित उपाधा।
घर घर लेइ प्रसाद लगै जब भोजन बाधा॥
संग करै भगवत रसिक कर करुवा गूदर गरें।
वृन्दावन बिहरत फिरै जुगल रूप नैननि भरें॥3॥

गावैं हम सोई करैं सहज लाड़ली लाल।
करैं लाड़लीलाल सो हम गावैं तत्काल॥
हम गावैं तत्काल सूत दुहूँ दिसि कौ ऐसौ।
बुध जन लेहु विचार कमल दिनकर कौ जैसौ॥

लीला ललित बिहार स्याम स्यामा मन भावैं।
भगवत रसिक अनन्य उपासक अनुदिन गावैं ॥4॥
कोउ सुकिया कोउ परकिया कलप किये मत वादि।
जोरी भगवत रसिक की नित्य अनंत अनादि॥
नित्य अनंत अनादि लोक तें रीति विलच्छन।
श्रुति स्मृति बिलगाय देखि अनुभव के अच्छन॥
सहज प्रेम माधुर्य रहत अनुरागे दोऊ।
ललिता सखी प्रसाद बिना तहँ जात न कोऊ॥5॥

श्रीस्वामी सहचरिसरनदेवजू कौ मंज–

नाभी भँवर चारु छवि लहरें गरजि मुरलिका भावै।
बंक बिहारी नाम सलोना नेह नदी चलि आवै॥
रूप कहर दरियाव परे दृग पैरि पार नहिं जावै।
मन मल्लाह की क्या कुदरत है पकर बाहिरे लावै॥

श्रीहरिदास हमारे प्रीतम।
परम उदार रसिक वर नागर रीझि रीझि कीनी आपुन सम॥
अंग संग केलि निरन्तर बिहरत कुञ्जबिहारिन प्राननि में रम।
सुख को सार समूह ललित रस ताहि पाय अब रही कौन गम॥

श्रीबिहारी प्यारी को खिलौना।
नान रूप रंग अति रंग अंग प्रति अति रस रसिक सलौना॥
अति आसक्त रहत जू छबीली छैल छबीले सौं तन मन रौना।
सरस लाड़िली लाल ख्याल को काहु परत पगौना॥